



अगस्त 2012 ■ ₹ 25/-

चन्दामामा

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ





**mango
bite**[®]



SLOW CYCLING

SLOW CYCLING

everest/PPV756-11 hin

आम की रसीली गोली
ENJOY VERY SLOWLY



युवा सितारे



यदि आप अपने परिवार या आस-पास के किसी बच्चे का नाम युवा सितारे के रूप में सुझाना चाहें, तो कृपया हमें बच्चे का विवरण और अपना संपर्क विवरण इस पते पर भेजें:

Young Achievers-RCM,
Chandamama India Ltd,
No:2 Ground Floor, Swathi
Enclave, Amman koil street,
Vadapalani, Chennai-26
(या)
online@chandamama.com

पुणे के सिम्बायोसिस हाइस्कूल की आठवीं कक्षा के १३ वर्षीय छात्र, गौरव राजेश भंडारी, ने तीन वर्ष पहले वॉलीबॉल खेलना शुरू किया था। और तब से वे ३० से अधिक स्कूल टीमों को शिकस्त दे चुके हैं। वे अपने स्कूल की टीम के कप्तान हैं। २०११ में, उन्हें पंहला - अंतर्राष्ट्रीय कोच अजित पाटिल द्वारा 'श्रेष्ठ उभरते खिलाड़ी' और 'टूर्नामेंट के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' का खिताब दिया गया था। पूना स्पोर्ट्स एथलेटिक्स एसोसिएशन द्वारा भी गौरव को श्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्रदान किया गया था। उन्हें सखाराम मोरे क्रीड़ा प्रतिष्ठान में मैन ऑफ़ द टूर्नामेंट पुरस्कार भी मिला था।

गौरव अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने परिवार के साथ ही अपने प्रशिक्षक, श्री कोकरे और श्री बामने को देते हैं। वे पढ़ाई और साथ ही अवेकस, ड्राइंग, तैराकी, सिंथसाइजर बजाने और नाचने में भी उस्ताद हैं। इनमें भी उन्होंने कई पदक जीत रखे हैं।

गौरव की उपलब्धियों तक पहुँचने के लिये बहुत परिश्रम, सतत अच्छा काम करना और लगन चाहिये। वे इसपर ध्यान देते हैं कि कक्षा में उनका पूरा ध्यान रहे और जितना हो सके सीख लेते हैं। वे मेहनत और सफलता पाने की इच्छाशक्ति के बेहद अच्छे उदाहरण हैं।

हम गौरव को उनके सुनहरे भविष्य के लिये अपनी शुभकामनाएँ देते हैं।



Shop



Archives
from 1947



Jokes

Visit the new

chandamama.com



August 2012 ₹25/-

Founded by B. Nagi Reddi
and Chakrapani

Editor & Publisher :

Prashant Sharad Mulekar

Associate Editors :

R. Vaasugi, K. Raja Sekhara Raju

Sub Editor :

Patricia Pandian

General Manager :

Sowmya Bharadwaj

Senior Artists:

K.C. Sivasankaran (Sankar),

Gandhi Ayya, P. Mahesh,

Sandeep Solkar

Artist :

Venki

Layout Designers :

B. Thirumal, K. Narendra,

N. Sivakumar

Production In-charge :

Prashant Pawar

Circulation:

circulation@chandamama.com

Asst. Manager -

Sales & Circulation:

Subhankar Rej

Sales Officer - Circulation :

K. Ravishankar

Advertisement :

sales@chandamama.com

Customer Help :

Ph: 022 40786043

customerhelp@chandamama.com

Head Office :

CHANDAMAMA INDIA LTD.,

P.O.Box No:19407, Mumbai-400093

Phone +91 22 28312872 / 28311849

Email:chandamama@chandamama.com

Website : www.chandamama.com

Published, Printed and Owned by

CHANDAMAMA INDIA LTD.,

Published and Printed on their behalf by

Prashant Sharad Mulekar

Published at B-3, Cross Road 'B', MIDC,
Andheri (East) Mumbai - 400093.

Printed At :- Kala Jyothi Process Pvt. Ltd,
S.No.185, Kondapur, R.R.District-500133,
Andhra Pradesh.

Editor :- Prashant Sharad Mulekar

अनुक्रम

चन्दामामा

Volume-3

August 2012

Issue-08

* पाठकों के पत्र	...०६
* मेरी स्मृतियाँ	...०९
* नास्तिक	...११
* मछलियों की फसल	...१७
* अनन्त का घमण्ड	...२०
* मित्र-सम्प्राप्ति-१	...२४
* स्वर्ग और नर्क	...२७
* खाना पकाने वाला पति	...३०
* बिम्ब प्रतिबिम्ब	...३२
* किसान की अर्जी	...३५
* छोटे सिक्के	...३९
* व्यावसायिक बुद्धि	...४२
* सच जैसा झूठ	...४३
* रुद्रम देवी	...४४
* बौना सिंहभाल	...४८
* दो बेटे	...५२
* सही चुनाव	...५४
* शिथिलालय-२९	...५५
* भोली बहू	...६३
* बाबा की कहानी	...६४
* खोने को कुछ नहीं	...६६
* जीवन में सन्तोष	...६७
* पिंजड़े का तोता	...७०
* अद्भुत विजय	...७२
* मैं क्या बन सकता हूँ?	...७३
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४३	...७४
* हँसते-हँसते हो जा लोट-पोट	...७५
* चूँ-चूँ का डिब्बा	...७६
* भारत दर्शक	...७८
* बीरबल	...८०
* ट्रेजर बॉक्स	...८२

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

स्वतंत्रता दिवस

अगस्त माह का सम्पादकीय लिखने से पहले अभी मैंने पिछले वर्ष के सम्पादकीय को पढ़ा। यदि मैं उसी सम्पादकीय को यहाँ हू-ब-हू चिपका दूँ तो वह अब भी प्रासंगिक रहेगा...

६५ वर्ष पहले अंग्रेजों से स्वाधीनता पाने के बाद, अब तक हम स्वतन्त्रता का सही मतलब खोज रहे हैं। अब भी बरसात के लिये आकाश की ओर देखते हुए हमारे मन में यह डर रहता है कि कहीं बारिश के देवता हमें धोखा न दे दें, और यह कि यदि ऐसा हुआ तो हम पीने का पानी और फ़सल कहाँ से प्राप्त करेंगे। हमारी मूलभूत ज़रूरतें कहाँ से पूरी होंगी? हमारी आधारभूत संरचना दबाव में आने से खराब हो रही है और हमारी सारी तरक्की ऊपरी दिखाई देती है। हम उन मूल्यों को बनाकर नहीं रख पा रहे हैं जिनके लिये हमारे देशवासियों ने अपनी जानें दी थीं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उम्मीद छोड़ दें। हमें अपनी युवा पीढ़ी पर भरोसा है और यकीन है कि कुछ समय पहले आरम्भ किये गए परिवर्तन हमें उस उत्कृष्टता तक ले जाएँगे जिसके लिये हम प्रयासरत हैं।

मुझे भारी मन से पाठकों को यह सूचना देनी पड़ रही है कि इस माह से हमें अपने संचाली के अंक बंद करना पड़ रहे हैं क्योंकि पाठकों का उत्साह कम है और शायद उस भाषा की अकेली बाल पत्रिका के लिये सरकार की ओर से कोई मदद उपलब्ध नहीं है। हम दुनिया-भर के अपने पाठकों तक पत्रिका को पहुँचाने का प्रयास जारी रखेंगे।

पाठकों को स्वतन्त्रता दिवस की शुभकामनाएँ।

- सम्पादक





पाठकों के पत्र



मैंने अपनी पहली चन्दांमामा स्कूल में चौथी कक्षा में छः आने में खरीदी थी। तब से मेरा पूरा परिवार चन्दांमामा पढ़ रहा है। पत्रिका का प्रकाशन बीच में कुछ समय के लिये रुककर फिर शुरू होने पर भी चन्दांमामा से हमारा रिश्ता बना रहा। मेरे बच्चे और उनके भी बच्चे सभी चन्दांमामा के प्रशंसक हैं। मेरे पोते-पोतियाँ मुझसे चन्दांमामा से कहानियाँ पढ़कर सुनाने की ज़िद करते हैं। हाल ही में जब हमारे कुछ मित्र लंदन में पढ़ रहे मेरे पोते से मिलने गए और उसके लिये यहाँ से चन्दांमामा ले गए तो उसने कहा कि उसे ऐसा लगा जैसे उसने हम सभी को वहाँ देखा हो। चन्दांमामा को हमारी शुभकामनाएँ।

- एस. अमरावती, काकीनाड़ा, आ. प्र.

मैं हाल ही में चेन्नई में चन्दांमामा के दफ़्तर में गया। चन्दांमामा अब बहुत बदल गया है। हाल के अंक और उनके आवरण पृष्ठ के चित्र और कहानियों का लेआउट हमें पुराने संस्करण की याद दिलाता है। मैं चन्दांमामा को मुख्यतः इसकी एक पृष्ठ की कहानियों के लिये पढ़ता हूँ। वे बहुत ही अच्छी होती हैं। चन्दांमामा के नवीनतम अंक में छपी कहानी 'अनुपयोगी उपकरण' पिछले संस्करणों से ली गई बहुत अच्छी कहानी है। यह कहानी बताती है कि नकली दाँत लगाकर कोई चूज़ा किसी लोमड़ी को नहीं डरा सकता। इसके स्थान पर उसे मज़बूत दिल चाहिये। बच्चों की और ऐसी कौन-सी पत्रिका है, जो अपने पाठकों को हर माह बीस कहानियाँ दे सकेगी?

- गंगिसेट्टी शिवकुमार, नेल्लोर, आ. प्र.

मैं पिछले चालीस वर्षों से चन्दांमामा का पाठक हूँ और पत्रिका का फैन होने के नाते, मैं आजकल की कहानियों की गुणवत्ता के लिहाज से पत्रिका की स्थिति से सन्तुष्ट नहीं हूँ। देवी भागवत, वीर हनुमान, महाभारत जैसे कुछ पारम्परिक आलेखों की कमी है। चन्दांमामा इन्हीं आलेखों के लिये प्रसिद्ध थी, और अब लगता है कि पत्रिका की आत्मा को ही नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है। शिथिलालय वास्तव में बहुत रोचक है।

- विजय चौहान, उ. प्र.

चन्दांमामा का पिछला अंक बाज़ार में बहुत देरी से आया। इस बार तो चन्दांमामा का अगला अंक तीसरे सप्ताह के अंत तक भी उपलब्ध नहीं था। चन्दांमामा की नई प्रति को उत्साह से प्राप्त करना और पत्रिका की सभी कहानियाँ आतुरता से पढ़ना तो बिल्कुल सामान्य है। लेकिन मुझे लगता है बाकी पत्रिकाओं के नए अंक बाज़ार में आ जाने के तीन सप्ताह बाद चन्दांमामा प्राप्त करना पत्रिका इसकी प्रसार संख्या पर असर डालेगा। कृपया इस पर ध्यान दें।

- राजेश, हैदराबाद, आ. प्र.

चन्दामामा का पिछला अंक मिला। मैंने एक ही साँस में उसे पूरा पढ़ डाला। पढ़ते समय ऐसा महसूस हुआ जैसे वह गर्मी की झुलसन से बचाने वाली छाँह हो। पूरा अंक अच्छा और सन्तोषजनक था। मैं समूची टीम को बधाई देता हूँ। मालूम हुआ कि चन्दामामा का मूल्य बढ़ाया जा रहा है। हम इस बारे में चिन्तित नहीं हैं, बल्कि ये आश्चर्य का विषय है कि अब तक मूल्य क्यों नहीं बढ़ाया गया था। वर्तमान परिदृश्य में मूल्यवृद्धि आवश्यक हो जाती है। एक बात और। मूल्य कुछ भी हो, हम जैसे पाठक चन्दामामा के साथ सदैव रहेंगे।

- प्रो सन्दीप कुमार, अमृतसर

चन्दामामा का अंक बहुत देर से मिला। एक पृष्ठ की सारी कहानियाँ अपनी-अपनी तरह से अच्छी हैं। 'रहस्य', 'अनुपयोगी उपकरण', 'मज़दूर' और 'उचित तारीफ़' पढ़ने में बहुत अच्छी थीं। सामान्यतः एक पत्रिका में इतनी सारी सारगर्भित और शिक्षाप्रद कहानियाँ नहीं पाई जातीं। मैं आपको पूरे हृदय से बधाई देता हूँ।

- नागेश्वर राव, एलुरु, आ. प्र.

मेरा नाम स्वाति है। मैं २० वर्ष की हूँ। मैं दिल्ली में रहती हूँ। मैं अपने बचपन से चन्दामामा पढ़ती आ रही हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्य चन्दामामा पढ़ते हैं। मैंने पिछले कई वर्षों की चन्दामामा इकट्ठी कर रखी हैं। चन्दामामा की कहानियाँ और इसके सुन्दर चित्र मेरे लिये हमेशा ही एक प्रमुख आकर्षण रहे हैं। चन्दामामा की पुरानी कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। कृपया चन्दामामा को इसके मूल स्वरूप में वापस लाएँ।

- स्वाति, दिल्ली

'दो रहस्य' और 'श्रीमान् सफ़ाई पसन्द' कहानियाँ नैतिक शिक्षा देती हैं। जिस प्रकार शंकराचार्य ने अच्छे और बुरे समाज के बारे में समझाया, वह बहुत रोचक था। स्कूल के व्यवस्थापक का शिक्षक की नौकरी पर यह कहना, कि वह बिकाऊ नहीं है, हृदय को छू गया।

- यज्ञनन्ना शास्त्री, वेटापलेम, आ. प्र.

मुझे चन्दामामा का नया अंक कुछ दिन पहले मिला। आवरण पृष्ठ पर नींद में कुम्भकरण को प्रदर्शित करता चित्र शानदार था। इसने मुझे वही भावना और आनन्द दिया, जो मैं पुरानी चन्दामामा देखकर पाता था। इस अंक में प्रकाशन के लिये चन्दामामा आर्टबुक से लिया गया चित्र भी बहुत सुन्दर था। उसमें श्री कृष्ण बहुत सुन्दर दिखाई पड़ते हैं। शिथिलालय का पूरे पृष्ठ का चित्र वन की सुन्दरता को जीवन्त कर देता है। कितने सुन्दर चित्र! चन्दामामा वास्तव में एक अद्भुत दुनिया है।

- रामचन्द्रय्या, करनूल, आ. प्र.

**Avail the
loyalty bonus!**

**Chandamama Subscribers
will get flat 10% off on
subscription renewals!
(All Editions - within India)**



Chandamama!

**Because stories
make the
world
go round...**

**Choose
your Chandamama!**

Go to
www.chandamamashop.com
& subscribe Now!!



You can also subscribe online at: www.chandamamashop.com

**Chandamama is available in English and 11 regional languages.
Junior Chandamama for children above 4 years
is available only in English.**

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following
editions of Chandamama:

- ☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior (Only in English)

Name:

Date of Birth: Sex:

Address:

.....

.....

City:

State: Pin:

Telephone:

Mobile:

Email:

Subscription Number (for renewals):

Gift Subscription to the following address:

.....

.....

.....

.....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees:

Cheque/DD No:

favouring Chandamama India Ltd on:

.....bank.

* Your subscription will commence in 6 weeks.

Please mail the subscription form to:

Chandamama India Limited,

P.O.Box No:19407, Mumbai-400093.

Phone +91 22 28312872 / 28311849

Email: subscription@chandamama.com

You can also subscribe online at : www.chandamamashop.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH Rs. 30/- per copy)	Rs. 360	Rs. 645	Rs. 915	Rs. 1150	Rs. 1350
You Save		Rs. 75	Rs. 165	Rs. 290	Rs. 460
REGIONAL Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 260	Rs. 375
JUNIOR Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 785	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 195	Rs. 300

** conditions apply

**Annual Subscription Overseas : US \$40 for English Chandamama,
US \$30 for Regional Languages, US \$25 for Junior Chandamama
(Including shipping and handling charges) by air mail.**

मेरी स्मृतियाँ - कन्नड़

मैंने सन् १९७९ में एस.एस.एल सी. पूरा किया। अपने परिवार में मैं सबसे बड़ा बेटा था और आर्थिक कठिनाइयों के कारण मुझे अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। मेरे छः भाई बहन थे। यह कहते हुए मुझे गर्व है कि उस समय जिस शिक्षक ने मुझे रास्ता दिखाया, जिसने मुझे महाविद्यालय की पढ़ाई से अधिक जीवन का अनुभव दिया, और एकमात्र वह जिसने मेरे दिमाग को तेज किया,



Name: Rajendra Hegade
Occ: Revenue, dept.,
Haveri, Karnataka.

वह केवल और केवल चन्दामामा है।

मैं लायब्रेरी जाया करता था और नियमित रूप से चन्दामामा पढ़ता था। अपने पिता के सेवा-निवृत्त होने के बाद, मैंने कुली के रूप में पी.डब्ल्यू.डी. विभाग में नौकरी कर ली। उस समय मुझे सिर्फ डेढ़ सौ रुपये मासिक वेतन मिलता था। उस छोटे से वेतन में भी मैं चन्दामामा खरीदता था और नियमित रूप से पढ़ता था। चन्दामामा ने मेरा शब्द-सामर्थ्य बढ़ाया और मुझे ज्ञान दिया। नियमित चन्दामामा पढ़ने से मुझे लिखने की कला आ गई। मेरे लेख कई पत्रिकाओं में छपे। चन्दामामा की नैतिक

मूल्यों से पूर्ण कहानियों ने मुझे अच्छे और बुरे में फर्क करना सिखाया। इस तरह चन्दामामा मेरी पसन्दीदा पत्रिका बन गई।

सन् १९९१ में मैंने राजस्व विभाग में नौकरी की। वहाँ भी चन्दामामा की कहानियों और लेखों ने मुझे देहाती लोगों के मस्तिष्क में अधिक अच्छे विचार डालने और उन सरल लोगों के साथ व्यवस्थित रूप से काम करने में मदद की। चन्दामामा जिसने गरीबी के वक्त मुझे सान्त्वना देकर मेरा ध्यान बँटाया, आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर भी मेरे मन के भीतर तक उतनी ही प्रिय बनी रही। धन के कारण आधुनिकता के चाहे जितने साधन- जैसे दूरदर्शन और मोबाइल फ़ोन इत्यादि आ जायें पर चन्दामामा हमेशा विशेष बनी रहेगी।

चन्दामामा ने मुझे सरल जीवन जीना सिखाया। स्वामी विवेकानन्द, शारदा देवी, रामकृष्ण परमहंस की जीवनियाँ बहुत प्रभावशाली थीं। चन्दामामा ने मुझे मनुष्य के छः शत्रुओं-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद इत्यादि को वश में करना सिखाया। यह गर्व का विषय है कि चन्दामामा इन पर विजय प्राप्त करना सिखाता है। चन्दामामा मुझे अपने मन को स्वस्थ रखने में मदद करता है।

जैसे भूख के लिये भोजन होता है उसी तरह ज्ञान के लिये चन्दामामा है। यात्रा करना और पढ़ना यही संसार को जानने के दो रास्ते हैं। पैसे की कमी के कारण मैं यात्राएँ तो नहीं कर सका

परन्तु चन्दामामा ने मुझे दिखा दिया कि संसार कितना रंगीन हो सकता है। चन्दामामा की कहानियाँ मुझे प्रेरणा देती हैं। एक व्यक्ति के रूप में मैंने अपनी निर्णय शक्ति, आत्मसंयम और इच्छा शक्ति चन्दामामा से प्राप्त की। अभी हाल में चन्दामामा के जनवरी-२०१२ के संस्करण ने मुझे सचमुच आकर्षित किया।

तीस साल के बाद अभी भी मैं चन्दामामा पढ़ता हूँ और मेरे बच्चे भी इसे बहुत पसन्द करते हैं। वे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ते हैं परन्तु अब भी कन्नड़-चन्दामामा पढ़ते हैं। इसके कारण उन्होंने अंग्रेजी से कन्नड़, कन्नड़ से अंग्रेजी और हिन्दी से अंग्रेजी और कन्नड़ में अनुवाद करने का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। मैं अपनी मधुर स्मृतियों को चन्दामामा में छापने का आपसे अनुरोध करता हूँ।

मेरी स्मृतियाँ - मराठी



Name: Neelam Pandit,
Occ: Teacher, Warje,
Pune, Maharashtra.

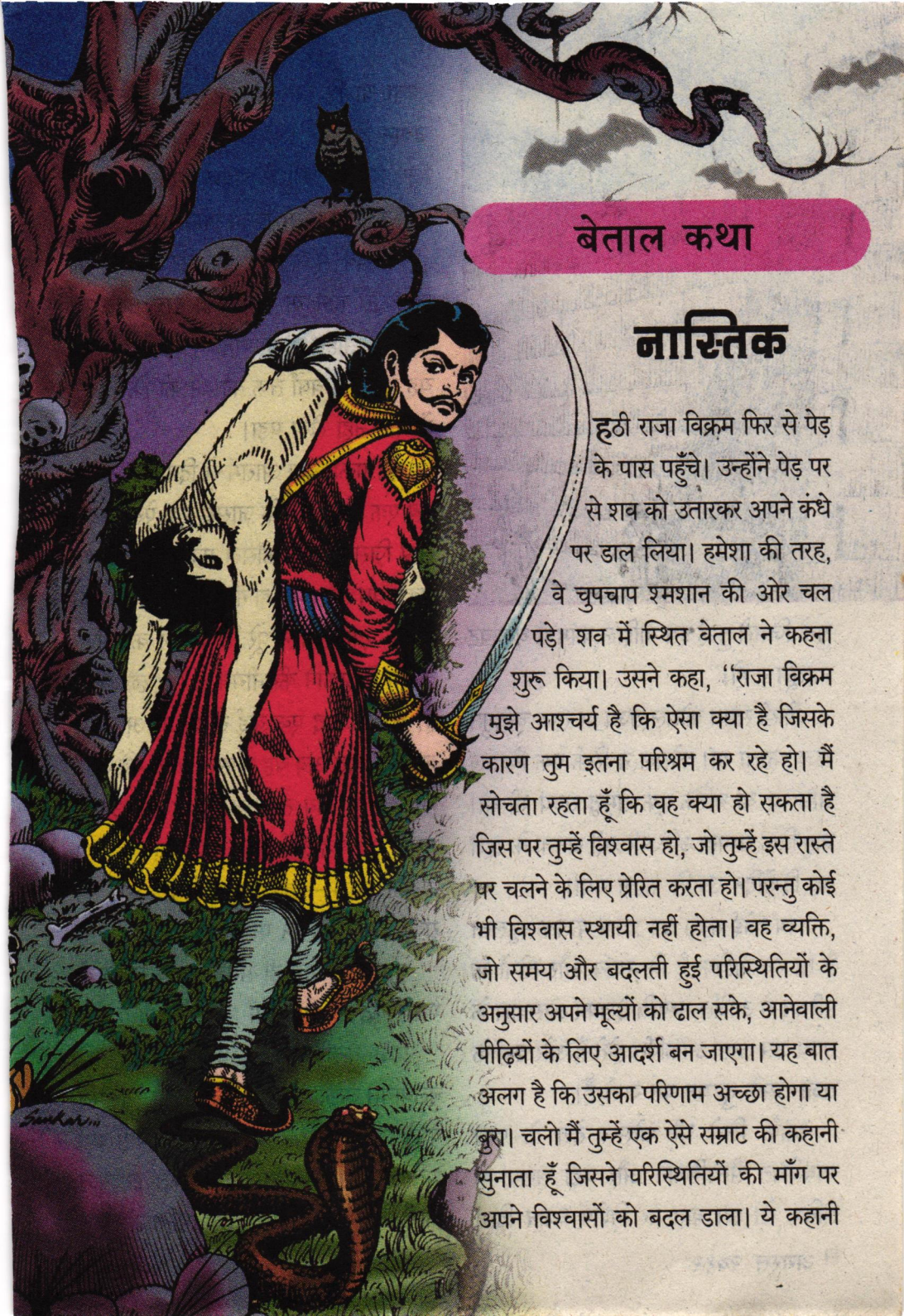
हममें 'चन्दामामा' पढ़ने की आदत डालने वाले हमारे पिताजी थे। वे एक दूसरे शहर में काम करते थे। हम चारों बहनें हर शनिवार को उनके आने की प्रतीक्षा करती थीं, विशेषकर प्रत्येक माह के पहले शनिवार। यह वह दिन था जब हमें 'चन्दामामा' का मराठी संस्करण मिलता था। हम इस बात को लेकर लड़ती थीं कि सबसे पहले उसे कौन पढ़ेगा। कभी-कभी पिताजी के खरीदने से पहले ही सारी पत्रिकाएँ बिक जाती थीं। तब हम बहुत अजीब सी बेचैनी के साथ महीना गुज़ारते थे।

हम प्रति वर्ष पुस्तकों को जिल्द करवा लेते थे, जो निश्चय ही पिताजी किया करते थे। लगभग तीस सालों तक हम उन पुस्तकों को बार-बार पढ़ते रहे। बाद में उनके पच्चे फट गए और

हमें उन्हें फेंक देना पड़ा। हमारा बचपन खो गया था।

हमारी अगली पीढ़ियाँ भी उसी उत्सुकता से चन्दामामा पढ़ रही हैं। मेरी बहनों में से एक मैनेजमेंट की प्रोफेसर है। वह विक्रम-बेताल की कहानियों का अपनी केस स्टडीज़ के रूप में उपयोग करती है। उसके मुताबिक, उन कहानियों ने उसकी सोच को अधिक तार्किक और अन्वेषी बनाया है।

मेरे मित्रों में से एक ने सच ही कहा था, 'चन्दामामा' ने हमें मूल्य सिखाए। बहुत-बहुत शुक्रिया, चान्दोबा!



बेताल कथा

नास्तिक

हठी राजा विक्रम फिर से पेड़ के पास पहुँचे। उन्होंने पेड़ पर से शव को उतारकर अपने कंधे पर डाल लिया। हमेशा की तरह, वे चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़े। शव में स्थित बेताल ने कहना शुरू किया। उसने कहा, 'राजा विक्रम मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्या है जिसके कारण तुम इतना परिश्रम कर रहे हो। मैं सोचता रहता हूँ कि वह क्या हो सकता है जिस पर तुम्हें विश्वास हो, जो तुम्हें इस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता हो। परन्तु कोई भी विश्वास स्थायी नहीं होता। वह व्यक्ति, जो समय और बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने मूल्यों को ढाल सके, आनेवाली पीढ़ियों के लिए आदर्श बन जाएगा। यह बात अलग है कि उसका परिणाम अच्छा होगा या बुरा। चलो मैं तुम्हें एक ऐसे सम्राट की कहानी सुनाता हूँ जिसने परिस्थितियों की माँग पर अपने विश्वासों को बदल डाला। ये कहानी



सुनो जिससे तुम्हें इस बोझिल काम में थकावट महसूस न हो।”

किसी समय कोसल राज्य पर राजा चन्द्रगुप्त राज्य करता था। कोसल न सिर्फ एक विशाल साम्राज्य था बल्कि एक समृद्ध राज्य भी था। प्राकृतिक सम्पदा और परिश्रमी जनता के रहते वह दिनोंदिन उन्नति करता गया।

जब कोई राज्य इस प्रकार फलता-फूलता है तो स्वाभाविक है कि राज्य और लोगों के परिश्रम से अर्जित सम्पत्ति देखकर आसपास के राज्य उस तरफ आकर्षित होते हैं और वहाँ के राजा उसके दुश्मन बन जाते हैं।

इसके लिये भी कोसल देश के पास व्यवस्थित सैन्यविभाग और बड़ी संख्या में सैनिक थे। इस बात पर विशेष ध्यान दिया

जाता था कि सेना में युवा और शक्तिशाली जवान हों और उन्हें कुशल सैनिक बनाने के लिए सेना में भर्ती होकर परम्परागत प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित किया जाता था।

वास्तव में कोसल की सैन्य शक्ति की जानकारी होने के कारण ही शत्रु आक्रमण करने का साहस न कर पाते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि वर्षों तक कोसल को किसी युद्ध में भाग नहीं लेना पड़ा।

इस प्रकार जब आराम से दिन बीत रहे थे, तब एक दिन राजा के जासूस एक ऐसा संदेश लाए जिसने समूचे कोसल राज्य को हिलाकर रख दिया। संदेश में कहा गया था कि विजयवर्धन नामक एक राजा ने पूरे हिन्दुस्तान को अपने कदमों में झुकाने की नीयत से युद्ध छेड़ दिया है। एक के बाद एक कई राज्यों पर आक्रमण करने के बाद अब वह कोसल राज्य की तरफ बढ़ रहा है। अब तक जितने भी राजाओं से उसने युद्ध किया है, या तो वे हार गये या उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया। कोई भी राजा उससे जीत न पाया।

यह संदेश पाते ही समूचा राज्य सतर्क हो गया। युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

प्रधानमन्त्री ने सेना-प्रमुख वीरभद्र को बुलवाया। उसने प्रमुख से कहा, “युद्ध के समय वे सिपाही ही होते हैं जो रणक्षेत्र में हमारी बड़ी शक्ति होते हैं। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके मन में देश-भक्ति और शत्रु

का विनाश करने की अदम्य इच्छा जागृत कर दें। हमें उनके हृदय में यह भावना दृढ़ करना है कि युद्ध में उनका एक ही उद्देश्य होना चाहिए, या शत्रु पर विजय प्राप्त करना अथवा युद्ध में वीरगति पाना।”

“प्रिय प्रधान-मन्त्रीजी, जहाँ तक देशभक्ति का सवाल है हमारे सैनिकों का कोई मुकाबला नहीं है। परन्तु लगता है किसी वजह से हमारे हमारे सैनिकों में कुछ कायरता की भावना आ गई है,” सैन्यप्रमुख ने कहा। प्रधानमन्त्री यह सुनकर सन्न रह गया। इस तरह की परिस्थितियों में सैनिकों की ऐसी मानसिक अवस्था खतरे का संकेत थी। उसने सेनापति से पूछा, “वीरभद्र तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? सेना कोई औजार नहीं है जिसे तुम केवल युद्ध के समय निकालते

हो। उन्हें तो थोड़ी देर पहले दी गई सूचना पर भी हमेशा युद्ध के लिए तत्पर रहना चाहिए और यदि ऐसा था भी तो मुझे अब ये बताया जा रहा है जब युद्ध का खतरा सिर पर मँडरा रहा है?”

“मन्त्री-महोदय, कृपया मुझे क्षमा करें। मैंने ‘कायरता’ शब्द का उपयोग किया क्योंकि परिस्थिति समझाने के लिए मुझे कोई और उपयुक्त शब्द नहीं मिला। मुझे लगता है कि विजयवर्धन की लगातार सफलता और उसके सामने दूसरे राजाओं की हार की सूचना ने हमारे सैनिकों के मन में निराशा की भावना भर दी है। मेरे कहने का मतलब यह नहीं था कि वे युद्ध से डर गये हैं या वे आसानी से शत्रु के सामने आत्म-समर्पण कर देंगे।”





“हाँ, हो सकता है। परन्तु यदि हमें युद्ध में शत्रु को जीतना है तो पहले हमें उसे अपने मन में जीतना होगा। तब हम शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। यदि हम अपने मन से कमजोर पड़ गये तो हम कभी शत्रु को हरा नहीं सकेंगे,” प्रधानमन्त्री ने कहा।

“मैं आपसे सहमत हूँ इसीलिए सेना में साहस जगाने के लिए मैं दिल और दिमाग को हिला देने वाले विचारों का प्रयोग करूँगा। शीघ्र ही अच्छी खबर लेकर मैं आपके सामने हाज़िर होऊँगा,” कहकर वीरभद्र ने विदा ली।

इसके एक सप्ताह के बाद सेनापति वीरभद्र प्रधानमन्त्री से मिला।

“क्या हुआ? आपको अपने प्रयास में

कितनी सफलता मिली?” प्रधानमन्त्री ने पूछा।

“हम अपने प्रयास में सफल हुए हैं, मन्त्रीजी!” वीरभद्र ने कहा।

“बहुत अच्छा। पर ये कैसे संभव हुआ?” उन्होंने पूछा।

“माननीय महोदय, आप जानते हैं कि ध्वज पर हनुमानजी का चित्र विजय का प्रतीक है। मैंने अपनी सेना में यह बात फैला दी कि जाने माने ज्योतिषी अश्वनाथ शास्त्री ने कहा है कि हनुमानजी के चित्र-युक्त ध्वज को लेकर युद्ध में जाने पर हमें उसी तरह सफलता मिलेगी जैसी कि महाभारत के युद्ध में भीम को वैसा करने पर मिली थी। अब हमारे सैनिक उन झण्डों को लेकर नये उत्साह से अपनी युद्ध-कला को चमका रहे हैं। अब तो क्षणभर की सूचना पर ही वे दुश्मन पर हमला करने के लिए तैयार हो जायेंगे। फिर भी...” सेनापति वीरभद्र हिचकिचाये।

“फिर भी क्या? अधीरता दिखाते हुए प्रधानमन्त्री ने पूछा।”

वीरभद्र ने स्पष्ट किया, “जैसे ही मैंने राजधानी में प्रवेश किया मुझे महसूस हुआ कि मैंने दूरदृष्टि से काम नहीं लिया।”

“क्यों, क्या हुआ?” प्रधानमन्त्री ने पूछा।

“मुझे अपने महाराज, अपने राजा की प्रतिक्रिया का डर है। हमारे महाराज नास्तिक हैं। मुझे डर है कि वे युद्ध में किसी धार्मिक चिह्न का उपयोग करने की आज्ञा नहीं देंगे।”

प्रधानमन्त्री सेनापति का इशारा समझ गए। राजा चन्द्रगुप्त अनीश्वरवादी थे। वे हमेशा कहते थे कि हम अधिक शक्तिशाली हो सकते हैं यदि हम अपनी शक्ति पर भरोसा करें। फिर भी वे अपने विश्वास अपनी प्रजा पर नहीं थोपते थे। इसके बावजूद राज्य के प्रशासकीय व्यवहारों में उनकी मान्यताओं का आदर होता था।

“हूँ..., हम विचित्र परिस्थिति में फँस गए हैं। खैर जो होना है वह तो होकर रहेगा। सब कुछ ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। हमारे उदार राजा का, जो हर तरह से गुणवान हैं, नास्तिक होना भी तो अपने आप में ईश्वर की एक विचित्र लीला है। तुम जैसा करना हो करते रहो। शेष ईश्वर की इच्छा,” प्रधानमन्त्री ने कहा।

जल्दी ही राजा के जासूसों ने संदेश दिया कि राजा विजयवर्धन तेजी से कोसल राज्य की ओर बढ़ रहा है। राजा चन्द्रगुप्त ने आपातकालीन बैठक बुलाकर एक रणनीति बनाई जिसके अन्तर्गत कोसल की सेना सीमा पर शत्रु की सेना का इन्तज़ार करेगी। वे शत्रु पर आक्रमण करेंगे और उसे परास्त कर देंगे जिससे वह कोसल राज्य में कदम रखे बिना ही लौट जाये।

राजा चन्द्रगुप्त ने वीरभद्र को इस अभियान के लिये सेना को तैयार रखने का हुक्म दिया।

प्रधानमन्त्री महादेव ने सोचा कि अधिक



देर करना ठीक नहीं है और अपने सैनिकों को ध्वज पर हनुमान के चित्र का उपयोग करके विजय प्राप्त करने के उनके भ्रम को बनाये रख कर उन्हें प्रोत्साहित करने की बात बता दी। राजा चन्द्रगुप्त ने शान्तिपूर्वक प्रधानमन्त्री की बात सुनी। फिर वह बड़ी देर तक चुप रहा। बैठक के लिये एकत्रित होने वाले सभी ये जानने के लिए उत्सुक थे कि राजा क्या निर्णय करेगा। काफी देर के बाद, चन्द्रगुप्त ने अपना सर इस प्रकार हिलाया जैसे बता रहा हो कि उसने निर्णय ले लिया है। फिर उसने घोषणा की कि वह सेनाप्रमुख वीरभद्र को सैनिकों को अपने साथ हनुमानके चित्र से युक्त ध्वज लेकर रणभूमि में चलने की अनुमति देगा।

इतनी कहानी सुनाने के बाद बेताल ने

पूछा, “अरे राजा विक्रम, राजा चन्द्रगुप्त ने, जो अपनी स्वयं की शक्ति पर विश्वास करता था और जो नास्तिक था, अचानक अपने दृढ़ विश्वास को क्यों शिथिल कर दिया? क्या वह ढोंगी नास्तिक था जो सब ठीक रहने तक भगवान को नकारता है और मुसीबत आने पर ईश्वर को गले लगा लेता है? या वह एक ऐसा व्यक्ति था जो भीतर से कायर था पर बहादुरी का मुखौटा लगाकर नास्तिक होने का नाटक करता था? यदि जानते हुए भी तुम इन प्रश्नों के उत्तर मुझे नहीं बताओगे तो तुम्हारे सिर के हजार टुकड़े हो जायेंगे।”

राजा विक्रम ने उत्तर दिया, “राजा चन्द्रगुप्त कायर नहीं था। वह कमजोर भी नहीं था। इसलिए वह ईश्वर से अधिक अपनी स्वयं की ताकत का भरोसा करता था। साथ ही साथ वह अपनी प्रजा की मान्यताओं का भी आदर करता था और अपने विश्वास उन पर नहीं थोपता था। उसने यह स्पष्ट कर दिया था कि

ईश्वर में विश्वास न होना उसकी व्यक्तिगत मान्यता थी। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह अपने सैनिकों के विश्वास का आदर करता था। युद्ध उसका व्यक्तिगत मामला नहीं था। वह समूचे राज्य और उसके लोगों से सम्बन्धित बात थी। ऐसी अवस्था में अपने सैनिकों के आत्मबल को ऊँचा रखने के लिए अपनी स्वयं की मान्यताओं को शिथिल करके उसने बड़ी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। यदि सैनिकों को ये आभास होगा कि उनका नास्तिक राजा भी ध्वज पर हनुमान के चित्र के अभिप्राय पर विश्वास करता है तो उनका उत्साह कई गुना बढ़ जायेगा। और यह समझना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि ऐसे उत्साही सैनिकों के साथ मिलकर किए गए युद्ध से राजा विजयी होकर लौटेगा।”

इस प्रकार राजा द्वारा मौन तोड़ते ही, शव में स्थित वेताल गायब हो गया और उसी पेड़ पर जा लटका। - पी. वेंकटेश्वर राव





मछलियों की फसल

कैरो नगर में गुहा नाम का एक प्रसिद्ध हँसोड़ रहा करता था। उसे एक दिन बागवानी करने की इच्छा हुई। इसलिए उसने अपना सारा आँगन खोद डाला और तरह तरह के पौधे लगाये। बड़े ध्यान से उनकी देखभाल करने लगा।

यह जानकर कि गुहा को बागवानी में दिलचस्पी हुई है, उसके कई मित्रों ने उसको सलाह दी, उसकी भरसक मदद की। थोड़े दिनों में गुहा के बाग में अच्छे अच्छे फूल खिलने लगे।

एक दिन एक रईस गुहा को देखने आया। वह तब बाग में था।

“सुना है कि तुम बड़े बागवान बन गये

हो। परन्तु तुम्हारे बाग में कोई नये तरह के पौधे क्यों नहीं दिखाई देते?” रईस ने पूछा।

“जो जो बीज मिलते हैं, उनको उगा कर देख रहा हूँ। अगर नये पौधे नहीं होते तो उसमें मेरा कसूर नहीं है।” गुहा ने कहा।

“नये बीज तो मैं दे दूँगा पर मुझे सन्देह है कि तुम उन्हें उगा नहीं पाओगे।” रईस ने कहा।

“आप सन्देह न कीजिये। मैं हर बीज उगा लेता हूँ।” गुहा ने कहा।

“तो मैं कल सवेरे नौकर के हाथ बीज भेज दूँगा। उन्हें हमारे दामाद ने हाल में ही बागदाद से भेजा था। क्योंकि मुझे बागवानी



बारे में मालूम नहीं होता तो वे साधारणतया उसे मुख में डालकर उसका स्वाद देखते हैं। गुहा ने भी वही किया और रईस का धोखा ताड़ गया।

वे बीज नहीं थे, सुखाये हुए मछली के अण्डे थे। उसका मजाक करने के लिए ही उस रईस ने वे दिये थे। गुहा ने उससे बदला लेने की ठानी।

दो सप्ताह गुजर गये। गुहा जब बाजार गया हुआ था तो रईस ने जो सामने से आ रहा था, पूछा, “क्यों गुहा, गुलाब ठीक हैं न।”

“आपकी मेहरबानी से इस बार तो गुलाब ऐसे खिले हैं कि पत्ते भी नहीं दिखाई देते।” गुहा ने कहा।

“अरे हाँ, जो बीज मैंने भेजे थे, वे बोये कि नहीं?” रईस ने पूछा।

“तभी बो दिये थे।” गुहा ने कहा।

रईस ने हँसी रोकते हुए कहा, “शायद उगे नहीं होंगे। हमारे दामाद ने कहा था कि उन्हें उगाना मामूली बागवान के बस की बात नहीं है।”

“हटाइये, मैंने उनके लिए क्यारियाँ बनाई, ज़रूरी खाद दिया। आपके भेजे हुए बीज अभी-अभी उग रहे हैं। उन पर नज़र या धूप

में दिलचस्पी न थी इसलिए मैंने उन्हें पुड़िया में बाँधकर रख दिया है।” रईस ने कहा।

अगले दिन सवेरे रईस के नौकरने पुड़िया देकर कहा, “इसे मालिक ने आपको देने के लिए दिया है। इन्हें बड़ी सावधानी से उगाने के लिए कहा है।”

गुहा ने पुड़िया खोल कर नौकर से पूछा, “क्या तुम्हारे मालिक ने यह न बताया था कि ये किस चीज़ के बीज हैं?”

“उन्हें ही नहीं मालूम है। उन्होंने कहा है कि जब पौधे बड़े हो जायेंगे तो वे उन्हें देखने आयेंगे।” यह कह कर नौकर चला गया। बागवानी करनेवाले को जब किसी बीज के

नहीं लगनी चाहिये। इसलिए उन्हें ढ़ँक रखा है, कल हमारे घर तशरीफ़ लाइये, तब उन्हें दिखाऊँगा।”

रईस ने कहा, “अच्छा, तो कल ज़रूर आऊँगा।” वह अपने रास्ते चला गया।

गुहा मछली की दुकान में जाकर कुछ छोटी मछलियाँ लेकर घर गया। उसने अपने छोटे लड़के को बुलाकर कहा, “बेटा, इनको ले जाकर बाग़ में इस तरह गाड़ो कि इनका मुख दिखाई देता रहे और उनको कसोरों से ढ़क़ दो।”

गुहा के लड़के ने वैसा ही किया।

अगले दिन सवेरे रईस आया। गुहा उसको साथ ले गया और कसोरों को दिखाकर उसने कहा, “पौधे उनके नीचे हैं। उसने एक कसोरा उठाकर दिखाया।” रईस को एक मछली दिखाई दी, मानों वह

ज़मीन तोड़कर उग रही हो। गुहा ने जब सब कसोरे उठाकर दिखाये तो रईस का सिर चकरा गया।

“आश्चर्य! कल मैंने तेरी बात पर विश्वास न किया था। आज स्वयं देखा है इसलिए विश्वास कर रहा हूँ।”

“इन बीजों का उगाना कोई मुश्किल नहीं है। अगर मेरे पास दस एकड़ हों तो फसल तैयार कर दूँ।”

“यह काम मैं ही करूँगा।” रईस ने कहा। घर जाकर उसने अपने किसान से कहा, “अरे, इस साल खेतों में सूखे मछली के अंडे बोओ।” किसानों ने वैसा ही किया।

गुहा ने यह खबर सारे शहर में फैला दी। सब रईस को देखकर हँसने लगे। रईस पछताने लगा कि गुहा का परिहास करने के कारण उसको ठीक फल मिला था।





अनन्त का घमण्ड

बेलसोंडा गाँव में एक धनवान किसान रहता था जिसका नाम अनन्त था। बचपन से वह अपने पिता के साथ खेत पर काम करता था। इस प्रकार कम उम्र में ही उसने देखकर बहुत कुछ सीख लिया और खेती के काम का अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया। इस तरह इस धंधे में वह इतना माहिर हो गया कि अपनी सम्पत्ति में उसने कई एकड़ ज़मीन और बढ़ा ली। ज़मीन के एक हिस्से में उसने फलों का बगीचा बना लिया। बची हुई ज़मीन पर वह चावल, दाल, सब्जियाँ और कुछ जंगली जाति के दलहन भी पैदा कर लेता था। गाँव में उसे एक सफल और सम्पन्न किसान माना जाता था। हर कोई उसकी प्रशंसा करता था। धीरे धीरे वह स्वयं को बहुत ऊँचा समझने लगा।

रात के भोजन के बाद गाँव के किसान गाँव की चौपाल पर इकट्ठे होते थे। वे गाँव के मुखिया नरहरि प्रसाद के सामने अपनी समस्याएँ रखते। वह उन्हें कोई सलाह देता या उनकी समस्या का कोई हल सुझाता। एक रात को समय पर अनन्त गाँव की चौपाल पर पहुँचा। उसने देखा कि मुखिया के साथ ही हरेक व्यक्ति एक सुनन्द नामक किसान को धीरज बँधा रहे हैं। उसने पूछा कि क्या मामला था। यह सुनकर कि सुनन्द को धोखा देकर किसी ने उसकी फसल कम दामों में खरीद ली थी, वह हँसा और बोला, “यदि हम चतुर नहीं हैं और अनुभवहीन हैं तो कोई भी हमें ठग सकता है।” सब को लगा कि अनन्त ने अनुचित और भावनाशून्य तरीके से बात की। गाँव के मुखिया नरहरि प्रसाद ने अनन्त

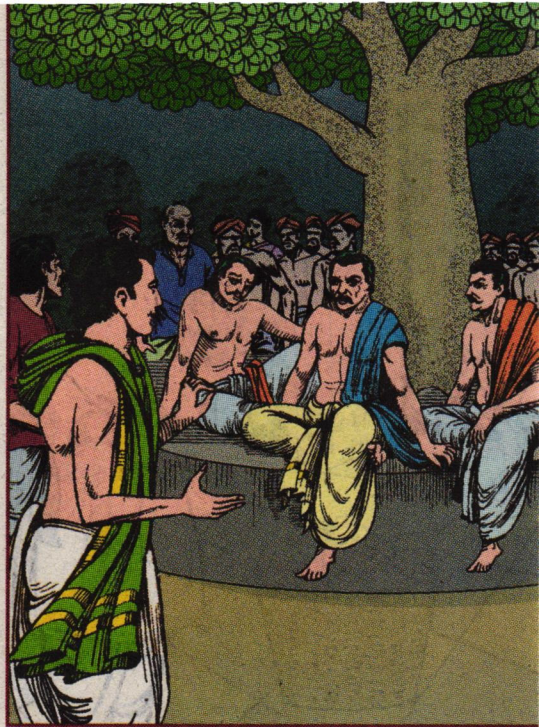
ए. हैमावती

से कहा, “चतुराई और अनुभव ही काफ़ी नहीं हैं। कभी कभी सबसे अधिक बुद्धिमान लोग भी बुद्ध बन जाते हैं।” अनन्त ने बहस करते हुए कहा, “मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। यदि हम चतुर हैं तो हम धोखा खाने से बच सकते हैं। मैंने गाँव की हाट में कभी धोखा नहीं खाया।” सुनन्द ने, जो पहले ही अपनी दुर्दशा से दुखी था, अनन्त का प्रतिकार किया, “अच्छा तो आप कहना चाहते हैं कि आप बहुत बुद्धिमान हैं?” अनन्त ने आत्मविश्वास से भरकर कहा, “निश्चित रूप से, मैं न कभी ठगा गया और न कभी ठगा जाऊँगा। इस का कारण यह है कि कोई भी काम करने से पहले मैं सोच लेता हूँ।”

तब सुनन्द ने अनन्त को चुनौती दी। उसने कहा, “यदि यह सिद्ध हो जाय कि तुम धोखा नहीं खा सकते तो मैं तुम्हें बीस हजार रुपये दूँगा। अब तुम बताओ कि तुम मुझे क्या दोगे यदि तुम धोखा खा ही गये?”

गाँव के मुखिया ने बीच में पड़ते हुए कहा, “क्योंकि अनन्त कहता है कि वह गाँव में सर्वाधिक चतुर है अतः धोखा खा जाने पर उसे सुनन्द को चालीस हजार रुपये देना होंगे। इस शर्त की अवधि तीन माह की होगी। यहाँ पर उपस्थित हम सब लोग इस बात के गवाह हैं। अनन्त तुम क्या कहते हो? क्या तुम्हें ये बातें मंजूर हैं?”

अनन्त ने उत्तर दिया, “हाँ। क्योंकि ऐसा होगा ही नहीं कि मैं धोखा खा जाऊँ। मुझे तो सुनन्द की चिन्ता है कि अनावश्यक रूप से



उसे बीस हजार रुपये खोना पड़ेंगे।”

सुनन्द एक दयालु व्यक्ति था। आम तौर पर हर व्यक्ति पकने के ज़रा पहले आम तोड़ता है। फिर वे कृत्रिम रूप से उन्हें पकाते हैं। परन्तु सुनन्द पेड़ों पर ही आमों को पक जाने देता था। उसको लगता था कि जो कोई उससे आम खरीदे उसे उसका पूरा मज़ा आए और उनका ये मज़ा ही उसके लिये आशीर्वाद है। इसलिए जब सब गाँव वाले पेड़ों पर से आम तोड़ लेते उसके एक सप्ताह बाद तक वह अपने पेड़ों पर से आम तोड़ने के लिए रुका रहता। इस बार भी उसने यही किया और दस गाड़ियाँ पके आमों से भर कर गाँव की हाट में ले गया। उसे आशा थी कि उसे अच्छा मुनाफ़ा होगा।



जब वह गाँव की हाट में पहुँचा तो उसने हरबचन को ढूँढ़ा जो हमेशा उससे आम खरीदता था। जब दोपहर तक उसे हरबचन नहीं मिला तो वह अपने आम लाखन को बेचने को तैयार हो गया। लाखन चालाक व्यक्ति था। उसने सुनन्द से कहा, “सुनन्द, तुम तीन दिन देर से हाट में आए हो। आज बाजार-भाव अच्छे नहीं हैं। मैं क्या कर सकता हूँ? परन्तु क्योंकि तुम मेरे मित्र हो इसलिए मैं आम उस कीमत पर खरीदूँगा जो तीन रुपये कम है उस भाव से जो मैंने प्रति सैकड़ा पहले तुम्हें बताया था। यदि तुम कल तक रुकना चाहो तो ये तुम्हारी इच्छा है।” सुनन्द ने कहा, “फल बहुत पक गए हैं। कल तक तो वे खराब हो सकते हैं। तुम्हारे कहे भाव पर ही ले लो। कम

से कम अँधेरा होने के पहले मैं घर तो पहुँच जाऊँगा।” फिर उसने दस गाड़ी भर कर आम उस भाव से तीन रुपये कम के हिसाब से बेचे जिस पर लाखन पहले खरीदने को राजी हुआ था। उसे बहुत दुख हुआ कि वह उतनी अच्छी कीमत पर फल नहीं बेच सका जितनी की उसे आशा थी।

शाम को उसका साला अमन कुमार एक डलिया भर आम लेकर उसके घर आया। उन आमों को देखकर सुनन्द को आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि वे उसी के बगीचे के आम हैं। अमन कुमार ने कहा, “जिस घर में बच्चे हों उस घर में मैं खाली हाथ कैसे आ सकता था। ये मैंने गाँव की हाट से खरीदे हैं। सौ आम की कीमत बीस रुपये है। ये बहुत अच्छे हैं, हैं न?” सुनन्द समझ गया कि उसे मूर्ख बनाया गया है। इस घटना की बात सुनन्द गाँव की चौपाल पर कर रहा था।

इस घटना के लगभग चालीस दिन बाद अनन्त अपनी ढंकी हुई बैल गाड़ी में अपने फलों के बगीचे में से जा रहा था। रास्ते में उसे गाँव का मुखिया नरहरि प्रसाद मिल गया। उसने गाड़ी में अनन्त के बीबी-बच्चों को भी देखा और उससे पूछा, “अनन्त, लगता है तुम अपने परिवार के साथ कहीं जा रहे हो!” अनन्त ने गाड़ी रोक कर कहा, “जी हाँ साहब, हम लोग दस दिन के लिए गाँव से बाहर जा रहे हैं।”

“परन्तु तुम्हारे घर में खलिहान से आए

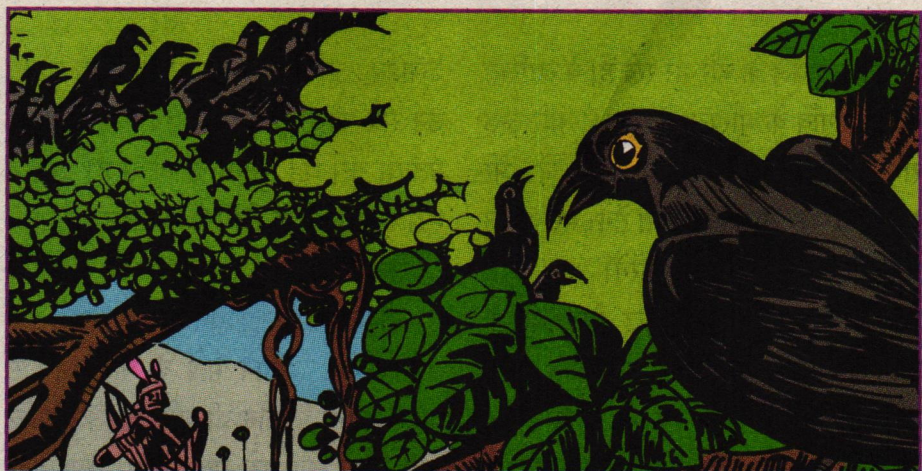
हुए दाल चावल के बोरे भरे रखे हैं। वे सुरक्षित रहेंगे?” गाँव के मुखिया ने पूछा। “मैंने उन्हें सँभालकर रख दिया है। वे रखे रहेंगे। मेरे मजदूर घर के आसपास पहरा देंगे। मेरे पालतू कुत्ते भी घर की रखवाली करेंगे।”

“परन्तु तुम्हारे पास कुछ पैसा भी तो होगा और मेरे विचार से वह बड़ी रकम होगी। उसका क्या?” “मैंने उसे भी सुरक्षित रख दिया है। मैंने उस डिब्बे को जिसमें रुपये रखे हैं पूजा-गृह से बाहर निकालकर रसोईघर में पकाने के बर्तनों के बीच में रख दिया है। कोई भी चोर उसे नहीं भाँप सकता। महोदय, अब मुझे चलना होगा। दोपहर तक मुझे वहाँ पहुँचना है।” दस दिन बाद जब वे घर लौटे तो अनन्त के रसोईघर की तलाशी ली जा चुकी थी और रुपयों का कहीं पता न था। वह अपने भण्डार-गृह के थैलों को देखने के लिए दौड़ा। वे सब खाली थे। वह रोता हुआ मुखिया के पास गया और सब घटना बताई। उसने कहा,

“साहब, आपको मुझे न्याय दिलाना होगा। उन सब चीजों के बारे में मैंने सिर्फ आपको बताया था। यह सुनन्द का काम है। उसी ने मुझे दुखी करने के लिये ये सब किया होगा।”

नरहरि प्रसाद ने उस रात सब गाँववालों को चौपाल पर इकट्ठा होने के लिए कहा। फिर उसने कहा, “अपने भाई के गाँव जाने से पहले अनन्त ने कौन सी चीज़ कहाँ छुपा कर रखी है, ये सब मुझे बताया था। क्या चतुर लोग अपने तरीके दूसरों को बताते हैं? उस समय वहाँ कई मजदूर आसपास काम कर रहे होंगे। किसी ने भी तुम्हें अपना रहस्य बताते हुए सुना होगा। कभी कभी बहुत चतुर लोग भी धोखा खा जाते हैं। तुम स्वयं इसका एक उदाहरण हो। तुम्हारा माल मेरे यहाँ सुरक्षित है। जाकर ले लो। सुनन्द पर शक मत करो। दूसरों के विषय में ओछी बातें कहना उचित नहीं, खासकर जब वे पहले से ही परेशान हों।” अनन्त ने शर्म से सिर झुका लिया।





पंचतंत्र

दक्षिण देश में महिलारूप्य नामक नगर के समीप एक घना जंगल था जिसमें एक विशाल वट वृक्ष था। उसके फलों को हजारों पक्षी खाया करते थे। उसकी छाया में अनेक यात्री विश्राम कर सकते थे। उसकी जड़ें दूर तक जमीन में चली गई थीं। उस वृक्ष के पत्तों के बीच अनेक प्रकार के पक्षी अपने घोंसले बनाये हुए थे। उसके खोखलों में अनेक प्रकार के कीड़े पहुँच गये थे। उसके फूलों के मकरंद का असंख्य मधुमक्खियाँ पान करती थीं।

उस महावृक्ष पर लघुपतनक नामक एक कौआ निवास करता था। एक दिन आहार की खोज में महिलारूप्य नगर की ओर जाते हुए उसने एक बहेलिये को देखा। बहेलिया देखने

में काला तथा क्रूर था। उसके हाथ में एक जाल था। उसे देख कौआ ने सोचा, “यह दुष्ट मेरे निवासवाले वृक्ष की ओर ही जा रहा है। वहाँ पर पक्षियों को यह जरूर जाल में फँसाएगा। बेचारे न मालूम उन पक्षियों की क्या हालत होगी! चाहे कुछ भी हो, मुझे उनकी रक्षा करनी है।”

यों सोचकर कौआ अपने निवास के वृक्ष की ओर लौट गया और सभी पक्षियों को उसने सावधान किया, “एक बहेलिया जाल और चावल के दाने लेकर इसी ओर आ रहा है तुम लोग उस दुष्ट तथा उसके चावल पर भी विश्वास मत करो। वह चावल फेंककर जाल फेंक देगा। तुम लोग उस चावल को जहर के समान मानकर मत छुओ।”

बहेलिये ने बरगद के निकट आकर जाल और चावल फेंक दिया। इसके बाद वह थोड़ी दूर चला गया और एक स्थान पर छिपकर इंतज़ार करने लगा। कौए ने पहले ही सभी पक्षियों को सावधान कर दिया था, इसलिए सारे पक्षी गुप्त रूप से दूर जाकर छिप गये।

लेकिन थोड़ी देर में चित्रग्रीव नामक कबूतरों का राजा अपने एक हजार अनुचरों के साथ आहार की खोज में उधर आ निकला। दूर से ही उन्हें चावल दिखाई दिये। सभी कबूतर चावल की दिशा में उड़ते हुए आए। कौए ने उन्हें खतरे से बचाने के लिए चिल्ला-चिल्ला कर चेतावनी दी पर कोई फ़ायदा न रहा। खाने के लोभ में पड़कर सभी कबूतर चावल के दानों पर आ बैठे और जाल में फँस गए। अज्ञान में रहते जिह्वा के प्रलोभन में पड़नेवाले प्राणियों को मछलियों की भाँति आकस्मिक मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। इसलिए कबूतरों को दोष नहीं दिया जा सकता है। मानव जाति में प्रलोभन सहज ही है। वरना रावण जैसा ईश्वर भक्त भी पराये पुरुष की पत्नी का अपहरण करना, यह बात क्यों समझ न पाया? ईश्वर रूपी राम सोने के हिरण को भ्रम या माया क्यों नहीं समझ पाये? धर्मात्मा युधिष्ठिर पाँसे खेलकर अचानक अपने सर्वस्व को जुए में क्यों खो बैठे? इन सब घटनाओं का अर्थ यही होता है कि अपने



मन को जो चीज़ आकृष्ट करती है, उसके पीछे छिपे खतरे को मनुष्य भाँप नहीं पाता है, अथवा खतरे का सामना करना विधि विधान है तो मेधावी भी अपनी बुद्धि पर नियन्त्रण खो बैठता है।

बहेलिये को मालूम हुआ कि कबूतर उसके जाल में पूर्ण रूप से फँस गये हैं। वह परम आनंदित हुआ और जाल की ओर बढ़ा।

चित्रग्रीव ने समझ लिया कि बहेलिए के जाल में उसके सारे अनुचर फँस गए हैं। इस पर उसने अपने अनुचरों से कहा, “तुम लोग चिन्ता मत करो। जो व्यक्ति खतरे के वक़्त अपनी हिम्मत नहीं हारता, वह खतरे का सामना करके बच सकता है। बहेलिए के यहाँ

पर आने के पहले ही हम लोग एक साथ उड़कर जाल के साथ उस दुष्ट की आँखों से बचकर चले जायेंगे। ऐसा करने पर ही हम लोग बच सकते हैं, वरना निराशा में डूबकर सब लोग एक एक दिशा में उड़ने की कोशिश करेंगे तो हम सब दो सिरवाले पक्षी के जैसे खतरे में फँस जायेंगे। इसलिए तुम सब मेरी बातों पर ध्यान दो।”

दो सिर वाले पक्षी की कहानी

(एक जमाने में दो सिरवाला एक पक्षी था। उसके सिर दो विपरीत दिशाओं में थे। एक दिन उस पक्षी के एक मुँह को अमृत प्राप्त हुआ। इस पर दूसरे मुँह ने भी अमृत में हिस्सा माँगा। मगर पहले मुँह ने इसे स्वीकार नहीं किया। तब दूसरे मुँह ने कहीं से ज़हर प्राप्त करके उसे खा डाला। फिर क्या था, ज़हर ने पक्षी तथा उसके दोनों सिरों को भी जान से मार डाला।)

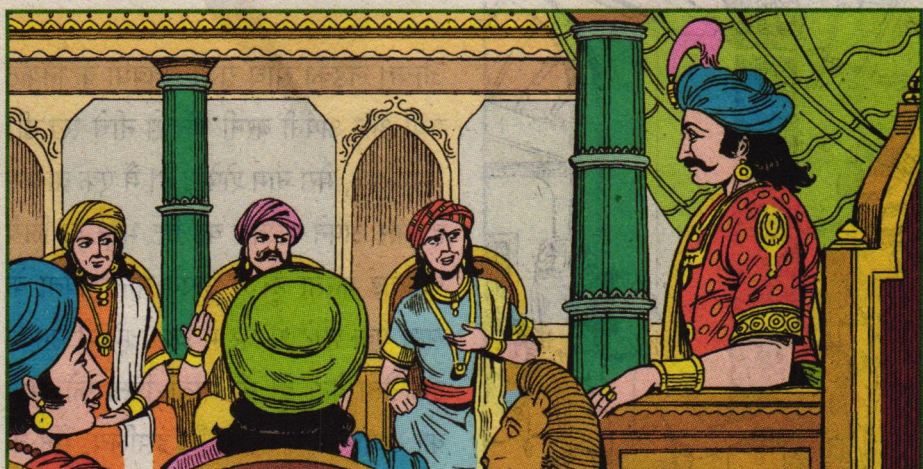
कबूतरों के राजा चित्रग्रीव के मुँह से यह कहानी सुनकर सभी कबूतर एक साथ उड़कर भाग गये।

बहेलिया उन कबूतरों के साथ ज़मीन पर दौड़ते हुए सोचने लगा, “ये पक्षी शीघ्र ही आपस में लड़ पड़ेंगे, तब वे मेरे जाल के साथ नीचे आ गिरेंगे।”

लघुपतनक अपने आहार की खोज करना छोड़ जाल के पीछे उड़ता हुआ चला गया।

शीघ्र ही कबूतर जाल के साथ इतनी दूर उड़ गये कि बहेलिये की आँखों से ओझल हो गये। इस पर वह निराश हो सोचने लगा, “जो किस्मत में लिखा होगा, वही होगा। जो किस्मत में लिखा गया है, वह बिना प्रयत्न के ही अपने आप घट जाता है। मेरे परिवार के भरण-पोषण का आधार जो जाल था, वह भी खो गया।” यों सोचकर बहेलिया दुखी हो घर लौटा। (क्रमशः)





स्वर्ग और नर्क

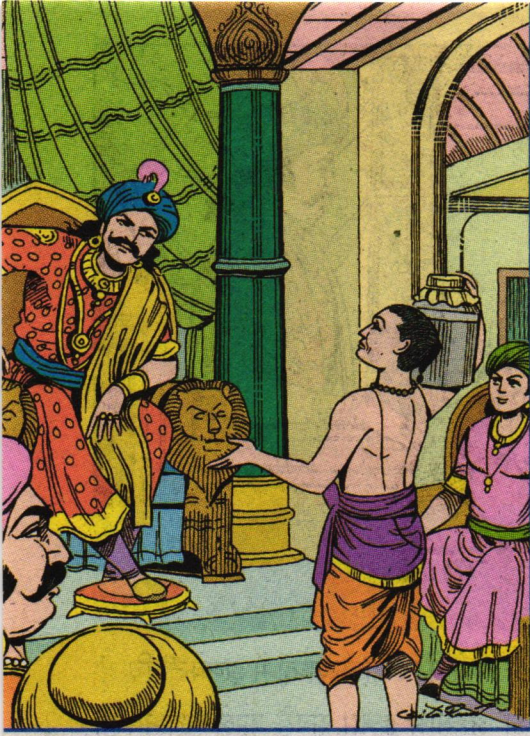
एक दिन, कौमुदी राज्य के राजा रविवर्मा को विचित्र प्रकार का सन्देह हुआ। उनके मन में प्रश्न उठा कि वे मरने के बाद स्वर्ग में जाएँगे या नर्क में? यह शंका उनके मन को खाने लगी और वे इससे परेशान रहने लगे।

राजा ने अपने मंत्रियों और राजदरबार के विद्वानों की एक आपात बैठक बुलाई। उन्होंने बैठक को सम्बोधित किया और कहा, “हालाँकि मैं अपनी प्रजा के सुख में अपना सुख देखता हूँ, किन्तु मुझे सन्देह है कि कहीं मैंने अज्ञानता में कोई भूल तो नहीं की? मैं जानता हूँ कि मैं लगान वसूलते समय कड़ाई से पेश आता हूँ। लेकिन इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है। मैंने कभी किसी से ज़बरदस्ती कुछ नहीं लिया। आपका क्या मत है?”

सभी को राजा के शब्दों में झलकती चिन्ता का अहसास हुआ। सबसे पहले प्रधानमन्त्री वर्धन बोले। “महाराज, आपके राज में लोग आराम और सुख का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह सभी जानते हैं। यह सिद्ध करता है कि हमारा राज्य विकास के सभी पहलुओं पर अच्छी तरक्की कर रहा है। लगता है आप किसी विषय पर चिन्तित हैं। कृपया हमें अपनी शंका बताइये, जिससे हम अपनी पूरी क्षमता से उसका निवारण करने का प्रयास कर आपके मन को शान्त कर सकें।”

राजा रविवर्मा ने कुछ देर सभी को देखा। फिर उन्होंने बताया कि उनके दिमाग में क्या चल रहा था। उन्होंने कहा, “मैं यह सोच रहा था कि मैं अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग में

जी. प्रिया रानी



जाऊंगा या नर्क में। यही शंका मुझे अन्दर से खाए जा रही है।”

इसपर विद्वान और मंत्री सभी राजा को उनकी भलाई होने और मोक्ष मिलने का यकीन दिलाने लगे। उनके शब्दों ने राजा को क्रोधित कर दिया। “आप लोग यह इतने यकीन से कैसे कह सकते हैं? हो सकता है मैंने भी इसी प्रकार कुछ गलत किया हो। यदि मुझे नर्क की प्राप्ति होने वाली हो, तो कृपया मुझे उन सत्कर्मों और दान-पुण्य के बारे में सलाह दें जो मुझे उससे बचने के लिये करने चाहिये।”

तीन दिन बाद, अपने कंधे पर चीनी मिट्टी की बरनी लिये एक ब्राह्मण लड़का दरबार में

आया। लड़का सीधे राजा रविवर्मा के निकट गया और अपनी बरनी धीरे से नीचे रख दी। “महाराज, मेरा नाम शेषेन्द्र है। मैं एक ब्राह्मण हूँ और अपने परिवार का पेट भरने के लिये पंडिताई करता हूँ। मैं अपने माता-पिता के साथ एक छोटे से घर में रहता हूँ। मैं उनका इकलौता बेटा हूँ। मेरे माता-पिता को आम का अचार बहुत पसन्द है। इसलिये, मैंने दो दर्जन कच्चे आमों से अचार बनाया है।”

“वे चार से पाँच दिनों में तीर्थयात्रा से वापस आएँगे। मैं एक धार्मिक कार्य में पुरोहित का काम करने के लिये कल सुबह ही पास के गाँव में जा रहा हूँ। मेरे घर में दरवाजों के स्थान पर केवल परदे लगे हैं। मुझे डर है कि कोई भी आसानी से मेरे यहाँ से आम का अचार चुरा सकता है। इसलिये मैं इस अचार को यहाँ ले आया हूँ जिससे इसे आपके पास सुरक्षित रखकर जा सकूँ। महाराज, कृपया इसे सुरक्षित रखियेगा,” ब्राह्मण पुत्र ने विनती की।

शेषेन्द्र के अनुरोध पर पहले तो राजा रविवर्मा को चिढ़ हुई। लेकिन उस लड़के के उसके माता-पिता के प्रति प्रेम को देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने रक्षकों को बरनी को अपने कक्ष में रखने का आदेश दिया। शेषेन्द्र प्रसन्नतापूर्वक चला गया।

चार दिन बाद वह वापस आया। राजा

रविवर्मा ने युवक के माता-पिता का हालचाल पूछा और रक्षकों को अपने कक्ष से चीनी मिट्टी का वह पात्र लाने का आदेश दिया।

उन्होंने उत्सुकता से पूछा, “तुमने अचार स्वयं बनाया था या किसी की मदद से?”

“मैंने उसे स्वयं ही बनाया, महाराज!”

“वाह! तुम्हारे हाथ में तो बहुत स्वाद है। अचार वाकई बहुत स्वादिष्ट था। महारानी ने भी उसकी बहुत तारीफ की। कृपया हमारी ओर से एक सहस्र मुहरें स्वीकार करो। इससे तुम्हें तुम्हारी गरीबी से भी निजात मिल जाएगी,” राजा ने दंभपूर्ण ढंग से कहा।

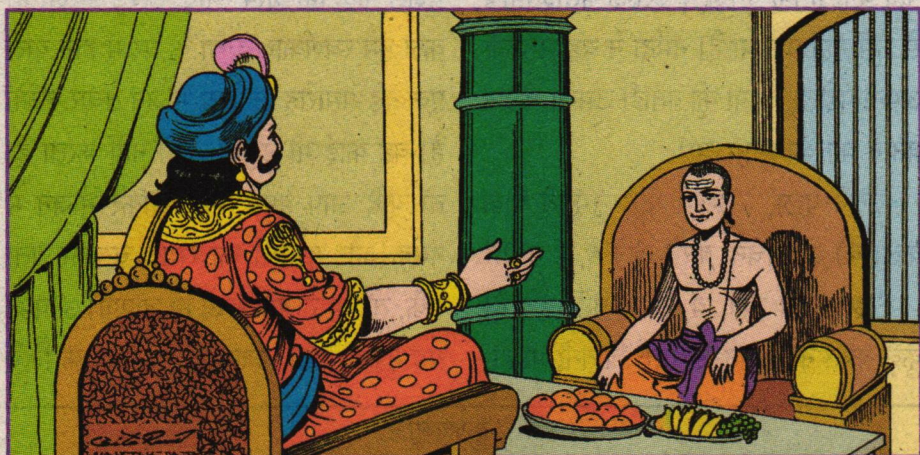
शेषेन्द्र ज़ोर से हँस पड़ा और बोला, “महाराज, इसमें कोई दो राय नहीं कि आप नर्क में जाएँगे।”

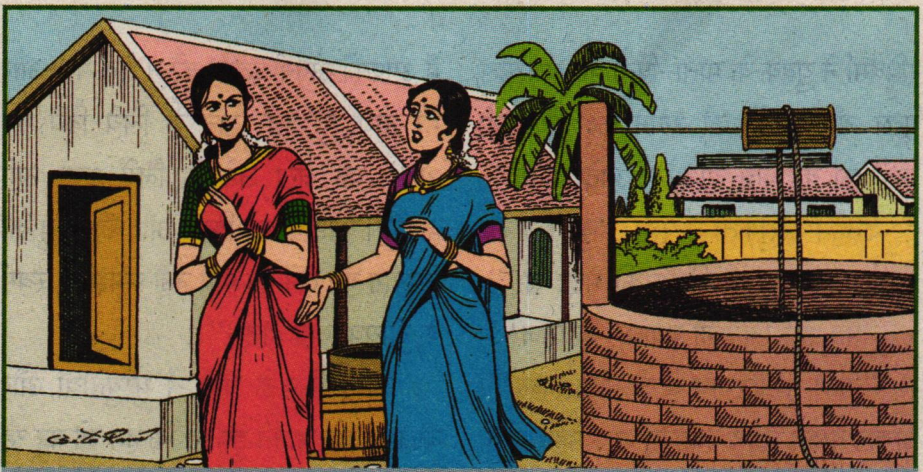
इस पर राजा के साथ ही पूरा दरबार सकते में आ गया। राजा चकराया सा उसे देख रहा था। शेषेन्द्र फिर से हँसा और कहा, “महाराज,

मैं आपको अपनी इच्छा को न रोक पाने और मेरे द्वारा सुरक्षित रखने के लिये दिये गए अचार को चख लेने के लिये क्षमा नहीं करूँगा। कोई भी जो किसी और की वस्तु का उपयोग कर लेने को पाप नहीं समझता, स्वर्ग के लायक नहीं होता।”

शेषेन्द्र फिर से धीमे से मुस्कुराया और बोला, “यह जानते हुए भी कि हम जो कर रहे हैं वह ठीक नहीं है, किसी काम को करना, नर्क का मार्ग प्रशस्त करता है। बहुत से लोगों का भला करने वाला काम करना ही हमें मोक्ष की ओर ले जा सकता है। यही स्वर्ग और नर्क के बीच का अन्तर है।”

ये बातें सुनकर रविवर्मा को अपने किये पर शर्म आई। फिर उसे यह भी पता लगा कि शेषेन्द्र प्रधानमंत्री का पुत्र था। उसने शेषेन्द्र की उसकी तीव्र बुद्धि के लिये सराहना की और उसे पुरस्कृत किया।





खाना पकाने वाला पति

नर्मदा की नई-नई शादी हुई थी। पति हरिहर के पास रहने आते ही उसकी समस्याएँ शुरू हो गई थीं। उसका पति कुछ भी कमाने बाहर नहीं जाता था। उल्टे नर्मदा के खाना पकाते समय वह उसे सलाह देता रहता कि खाना किस प्रकार पकाना चाहिये। खाने के समय वह शिकायत करता कि भोजन इसलिये स्वादिष्ट नहीं बना है कि नर्मदा ने उसकी बताई विधि से उसे नहीं पकाया है। नर्मदा ने यह समस्या अपनी पड़ोसन चम्पा को बताई। उसका भोजन बनाने का व्यवसाय था।

उसने पूछा, “तुम्हारे पति तुम्हारी पाक कला की आलोचना करते रहते हैं, है ना?”

“इतना ही नहीं, वे केवल बैठे रहते हैं। कुछ करते नहीं। धन-सम्पत्ति कितनी भी हो,

यदि हम केवल उसे खाते ही रहें, तो वह निश्चित ही समाप्त हो जाएगी,” परेशान सी नर्मदा बोली।

“मैं तुम्हारे पति को इस बीमारी से मुक्त करा दूँगी,” चम्पा ने उसे दिलासा दिया।

उस शाम, चम्पा नर्मदा के घर गई। उसने नर्मदा के पति से कहा, “भैया, नर्मदा ने मुझसे कहा कि आप स्वाद के बड़े पारखी हैं। कल हमें स्वर्णकार सत्या के घर में होने वाले एक बड़े समारोह के लिये भोजन तैयार करना है। वह कोई भी गलती सहन नहीं करता है। तो यदि आप हमारे साथ आकर भोजन में नमक और मसालों का स्वाद चखकर बता सकें, तो हमारी बड़ी मदद हो जाएगी। आपको यह मुफ्त में नहीं करना होगा। मैं इसके लिये

पी. कृष्णमूर्ति

आपको दो सौ रुपये दूँगी।”

“मैं ज़रूर आऊँगा। मैं स्वाद का बहुत पारखी हूँ,” हरिहर ने गर्व के साथ कहा।

अगले दिन, हरिहर चम्पा और उसके दल के साथ गया। उसे भोजन को चखकर उसपर अपनी अनुमति देना महत्वपूर्ण लगा। भोजन उसके द्वारा स्वादिष्ट प्रमाणित किये जाने के बाद ही परोसा गया था। उसने उस दल की छोटे-मोटे कामों में भी मदद कर दी।

उस शाम, भोजन के बाद, चम्पा ने हरिहर से कहा, “आपने पहले चखा, इसलिये सभी व्यंजन इतने अच्छे बन सके। कल परचून की दुकान वाले बनिये के घर पर कार्यक्रम है। कृपया आप आइयेगा,” और अपने वादे के मुताबिक उसके हाथ पर दो सौ रुपये रख दिये।

हरिहर ने घर जाकर नर्मदा को गर्व के साथ अपनी महानता का किस्सा सुनाया कि कैसे

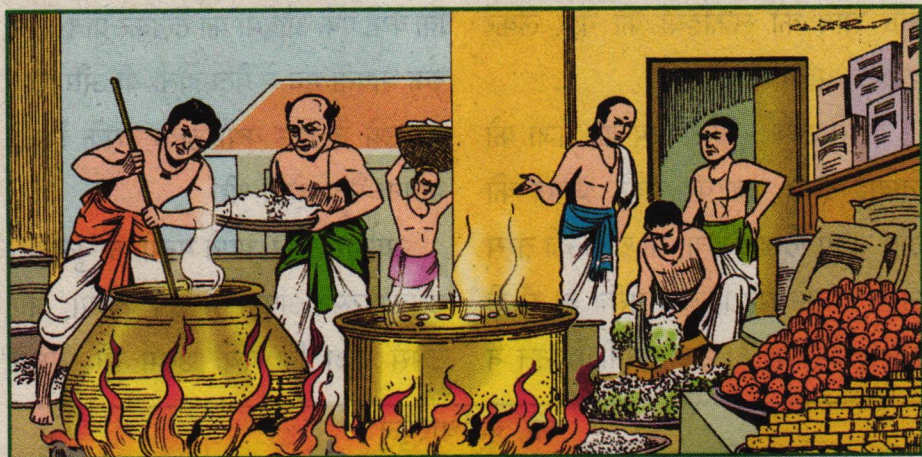
उसकी प्रतिभा का सम्मान हुआ।

अगले दिन से उसने बिना अनुरोध किये छोटे-मोटे कामों में दल की मदद करनी शुरू कर दी।

हरिहर चम्पा के दल का सदस्य ही बन गया। फिर उसने तेज़ी से सबकुछ सीखा और रसोइये के रूप में अच्छा नाम कमाया।

फिर, उसने खुद के लिये रसोई बनाने के काम लेना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में वह नगर के अच्छे रसोई बनाने वालों में से बन गया। फिर कुछ समय में हरिहर खुद अपने बनाए भोजन को चख-चखकर परेशान हो गया।

उसे घर पर अपनी पत्नी के हाथों का बनाया भोजन पसन्द आने लगा। अब वह कोई शिकायत नहीं करता था, क्योंकि उसे भोजन बनाने में लगने वाली मेहनत का अन्दाज़ा हो गया था।





बिम्ब प्रतिबिम्ब

विशाल नगर में विवेकवन्त नाम का एक राजा था। वह रोज सवेरे, शाम को अपने महल की छत पर चला जाता, और वहाँ घूमता घूमता सूर्योदय और सूर्यास्त की शोभा देखा करता।

हर रोज सवेरे महल के पास से एक लकड़हारा, जंगल में लकड़ियाँ काटने जाता, और शाम को लकड़ियों का गट्टर लेकर वापिस आया करता।

हर रोज सवेरे और शाम वह राजा को दिखाई देता। जब वह सवेरे, जंगल की ओर जाता दिखाई देता, तो राजा को तरस आती “जाने यह कितना गरीब है। यूँ ही अस्थिपंजर-सा है। रोज इतनी मेहनत न

करे तो शायद उसका गुजारा न हो।”

जब शाम को वह गट्टर लादकर आता दिखाई देता तो न मालूम राजा को क्यों गुस्सा आता, “पापी कहीं का, अगर इसकी चमड़ी भी उखाड़ दी जाए, तो कोई पाप नहीं होगा।”

राजा को भी यह सोच आश्चर्य हुआ कि क्यों एक आदमी को देखकर प्रातःकाल एक भावना मन में पैदा होती थी और शाम को उसे देखकर क्यों ठीक उसके विरुद्ध भावना पैदा होती थी।

आखिर उसने अपने मन्त्री को बुलाया। उसको उसने अपना अनुभव बताया, और उससे पूछा कि क्यों उसमें यों परस्पर

सी. कूर्मचार्यलु

विरोधी भावनाएँ पैदा होती थीं। उसने उनका कारण बताने के लिए कहा।

मन्त्री ने तीन दिन का समय माँगा।

अगले दिन मन्त्री, गरीब का वेष धारण कर, लकड़हारे के पीछे पीछे जंगल गया। दिन भर उसने देखा कि वह किस तरह मेहनत करता था। शाम को भी वह उसके पीछे पीछे गया।

राजा, उस लकड़हारे को देखकर क्यों तरस खा रहा था, मन्त्री जान गया। परन्तु वह यह न जान सका, कि क्यों राजा को उसे देखकर गुस्सा आता था।

दूसरे दिन मन्त्री, साधु के वेष में लकड़हारे के घर की ओर गया। उसको घर

में आता देख, लकड़हारे की पत्नी ने उसको अन्दर बुलाया, उसको बिठाकर उसका आदर सत्कार किया।

मन्त्री को चन्दन की लकड़ियों की सुगन्ध आई।

“लगता है घर में चन्दन की लकड़ियाँ खूब हैं। उन्हें बेचकर क्यों नहीं आराम से जीते? क्यों यों कष्ट-श्रम रहे हो?” मन्त्री ने सहानुभूति में कहा।

“बाबू, जोर से न कहो जब वे लकड़ियाँ काटते हैं, तो कभी कभी चन्दन भी मिल जाता है। मैंने एक कमरे में चन्दन जमा कर रखा है। कभी न कभी राजा तो मरेंगे ही। जब राजा का दहन संस्कार होगा, तो किसी



भी दाम पर चन्दन खरीदा जायेगा इसलिए मैंने उसे फुटकर न बेचकर रख रखा है।” लकड़हारे की पत्नी ने कहा।

मन्त्री को मालूम हो गया कि लकड़हारे पर राजा को क्यों गुस्सा आ रहा था। जब लकड़हारा सवेरे जंगल में लकड़ियाँ काटने जाता है, तो वह अपनी गरीबी पर सोचता है। सोचता है कि उसको गुजारे लायक लकड़ियाँ मिलें। राजा को तब उसे देख तरस आता है।

जब लकड़हारा अपना काम करके घर आ रहा होता है, तो उसे चन्दन का ख्याल आता है, तब वह सोचता है कि क्या अच्छा हो कि राजा जल्दी मर जाये, ताकि चन्दन बड़े चढ़े दामों पर बेचा जा सके। तब राजा को उस पर बड़ा गुस्सा आता है।

लकड़हारे के भाव, और राजा के भाव, बिम्ब प्रतिबिम्ब-से हैं।

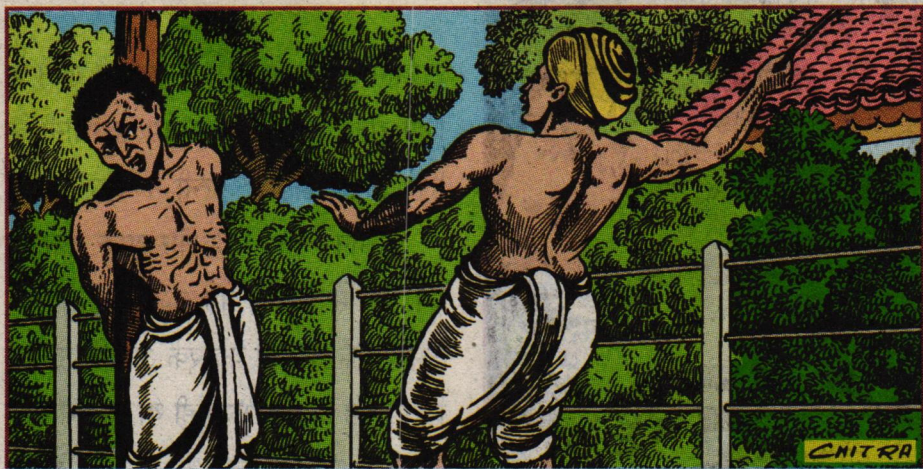
मन्त्री लकड़हारे की पत्नी से विदा लेकर अपने घर चला गया।

अगले दिन, वह रोज की तरह दरबार में हाजिर हुआ। “क्यों मन्त्री, भेद मालूम हुआ?” राजा ने पूछा।

“सच मालूम कर लिया है। अगर आप यह वचन दें कि उस लकड़हारे को सज़ा न देंगे, तो मैं सच सच बताऊँगा।” मन्त्री ने जो कुछ गुजरा था, सच-सच बता दिया।

राजा ने मन ही मन सोचा कि लकड़हारा मेरी मौत इसलिये ही तो चाह रहा है, क्योंकि वह गरीब है। उसने बुलाकर उसे समझाया और थोड़ा बहुत रुपया भी उसे दिया ताकि उसको अधिक मेहनत मशक़त न करनी पड़े।





किसान की अर्ज़ी

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। सिवाय एक गौ के उसके पास कुछ भी न था। उसे चराने के लिये भी उसे समय न मिलता। इसलिए वह बहुत कमजोर हो गई थी। वह गौ को घर के आँगन में ही रखता।

गरीब किसान के आँगन के साथ ही एक बड़े जमीन्दार का अहाता था। उसमें पशुओं के लिए घास काफ़ी बढ़ गई थी। गौ को भी उसकी सुगंध आई। उसने रस्सी तोड़ दी। दोनों घरों की बीच की बाड़ में से घुसकर जमीन्दार के अहाते में घुस गई और वहाँ घास चरने लगी।

यह देख जमीन्दार के एक नौकर ने आकर गौ के सिर पर मोटा-सा लठ्ठ मारा।

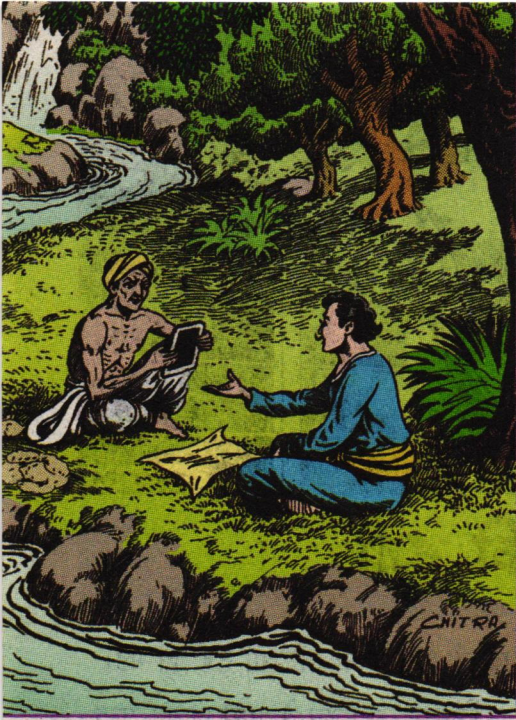
एक ही चोट लगी और गौ ठंडी हो गई।

किसान जमीन्दार के पास जाकर रोया-धोया। उसने किसान की बात सुनी और अपने नौकर की भी। “एक तो अपनी गौ को दूसरों की जगह हाँक दो और तिस पर यह भी कहो कि अन्याय हुआ है। इसे घर के बाहर खम्भे से बाँध दो और मार पीटकर भेज दो।” जमीन्दार ने अपने नौकर से कहा।

किसान गौ तो खो ही बैठा था और खूब मार खाकर घर आया। उसने अपनी पत्नी को जो कुछ गुज़रा था, बताया।

“जमीन्दार ने यदि न्याय नहीं किया तो क्या बात यहीं खतम हो जायेगी? तुम जाकर

आर. सुशीला



सीधे राजा से फरियाद करो। राजा अन्याय न होने देंगे। न्याय करेंगे।” किसान की पत्नी ने कहा।

पर राजा से जो कुछ गुजरा है, कैसे कहा जाय? अर्जी तो तभी न लिख पाते, यदि वे पति पत्नी पढ़े लिखे होते। वे तो अनपढ़ थे। इसलिए वे एक लकड़ी की तख्ती लाये और उस पर एक चित्र बनाया। उसमें उन्होंने अपना घर, जमीन्दार का घर, बीच की बाड़, बाड़ में छेद, वह जगह जहाँ जमीन्दार के नौकर ने गौ मारी थी, वह खम्भा, जहाँ उसको पीटा गया था-सबके निशान बनाये।

“वाह....यह देखते ही राजा सब कुछ

आसानी से समझ जायेंगे। रास्ते में खाने के लिए रोटी बनाकर दूँगी। तुम राजधानी के लिए निकल पड़ो।” पत्नी ने कहा।

किसान निकल पड़ा और दुपहर तक वह एक वन में पहुँचा। वह राजा का वन था। उस वन में किसान को एक आदमी दिखाई दिया। वह आदमी राजा ही था। वह मामूली कपड़ों में था, किसान न जान सका कि वह राजा ही था।

“नमस्कार महाराज!” किसान ने कहा।

“जीते रहो, कौन हो तुम? कहाँ जा रहे हो?” राजा ने पूछा।

“और क्या है? राजा के पास फरियाद करने जा रहा हूँ। यह देखो अर्जी, मैंने अपनी पीठ पर बाँध रखी है। मेरी गौ को यँ ही मार जो दिया है। भूख लग रही है, जरा ये रोटी खाकर पूरा हाल बताऊँगा।” किसान ने कहा।

एक नाले के पास किसान और राजा बैठ गये। किसान ने अपनी रोटी और मक्खन में से आधा राजा को दिया। दोनों ने खाकर नाले में पानी पिया।

“कहाँ है तुम्हारी अर्जी?” राजा ने पूछा।

किसान ने काठ की तख्ती निकालकर कहा, “यह देखो हमारा घर है और यह घर

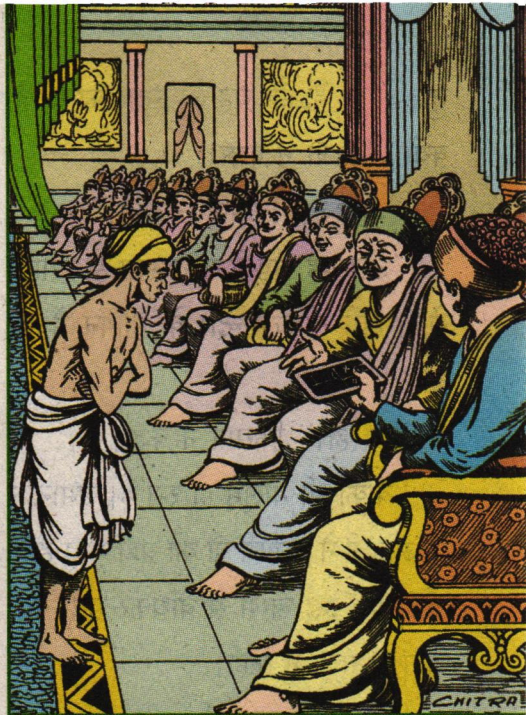
जमीन्दार का है। यह बाढ़ है। यहाँ रास्ता है, उस रास्ते से हमारी गौ उनकी जगह में चली गई और यहाँ जमीन्दार के आदमी ने मोटे लठ्ठ से हमारी गौ को मार दिया। जब मैंने जाकर जमीन्दार से शिकायत की कि मेरे साथ अन्याय हुआ था, तो उसने खम्भे से बाँधकर मुझे पिटवाया और कहा जा, चाहे जहाँ शिकायत कर।”

“फिर क्या है? इसको जिस तरह तुमने मुझे दिखाया है, उसी तरह राजा को भी दिखाना। जरूर वे न्याय करेंगे। अच्छा, तो मैं अब जाता हूँ।” यह कहकर राजा चला गया।

किसान अगले दिन अर्जी की काठ की तख्ती लेकर राजा के दरबार में गया। राजा मुकुट व अन्य राजोचित चिह्न लगाकर ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। उसकी बगल में बारह मन्त्री पंक्ति में बैठे थे।

किसान ने राजा को न पहचाना। उसने अपनी अर्जी को अन्त में बैठे मन्त्री को देते हुए कहा, “हुजूर, ज़रा इस अर्जी पर गौर कीजिये। जमीन्दार के आदमी का मेरी गौ को पकड़ना और मुझे मारना, सब कुछ इसमें है। मेहरबानी करके ज़रा देखिये।”

मन्त्री ने उस तख्ती को देखकर कहा, “मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।



यह भी क्या अर्जी है!” कहते हुए उसने बगलवाले मन्त्री को वह सौंप दी।

उस मन्त्री ने भी तख्ती को गौर से देखा और कहा, “यह अर्जी नहीं है। इस पगले को बाहर निकालो।”

इतने में राजा ने कहा, “उसे मेरे पास भेजो।” किसान की लाई हुई अर्जी एक एक ने देखी, फिर सिर मोड़कर पासवाले मन्त्री को दे दी।

आखिर वह काठ की तख्ती राजा के पास पहुँची। उसने उसको देखकर कहा, “यह तो साफ़ मालूम हो रहा है। तुम इधर आओ,” राजा ने किसान को बुलाया। “यह

तुम्हारा घर है और यह जमीन्दार का घर है, क्यों?" राजा ने पूछा।

"जी हुजूर। किसान ने कहा।"

"और यह बाड़ में रास्ता-सा है। इसी में से तुम्हारी गौ जमीन्दार के आँगन में गई थी?"

"जी हाँ।" किसान ने कहा।

"बाकी भी मालूम हो रहा है। जमीन्दार के आदमी ने तुम्हारी गौ को यहाँ मारा होगा और तुम्हें इस खम्भे से बाँधकर मारा गया होगा।" राजा ने कहा।

"आपने जो बात हुई थी, वह ठीक ठीक मालूम कर ली है।" किसान ने मन्द स्वर में कहा।

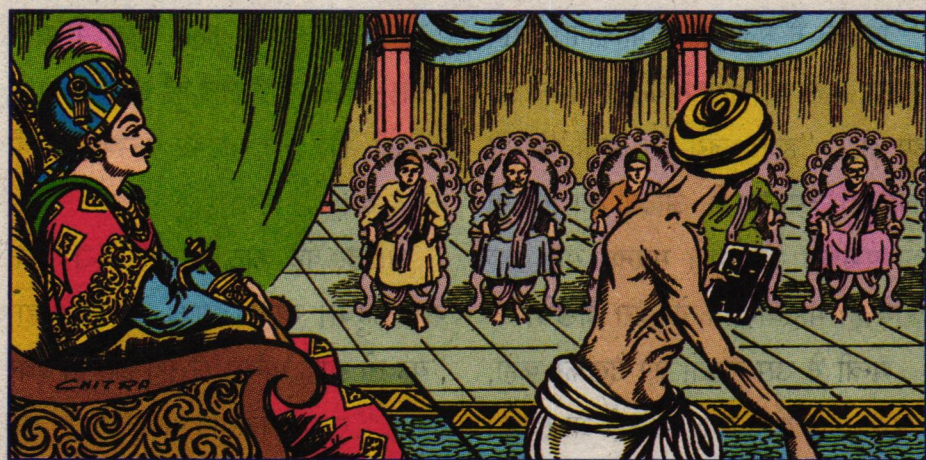
"अच्छा तो तुम अपने घर वापिस चले जाओ। अपनी पत्नी से कहना कि मैं न्याय करूँगा।" राजा ने कहा।

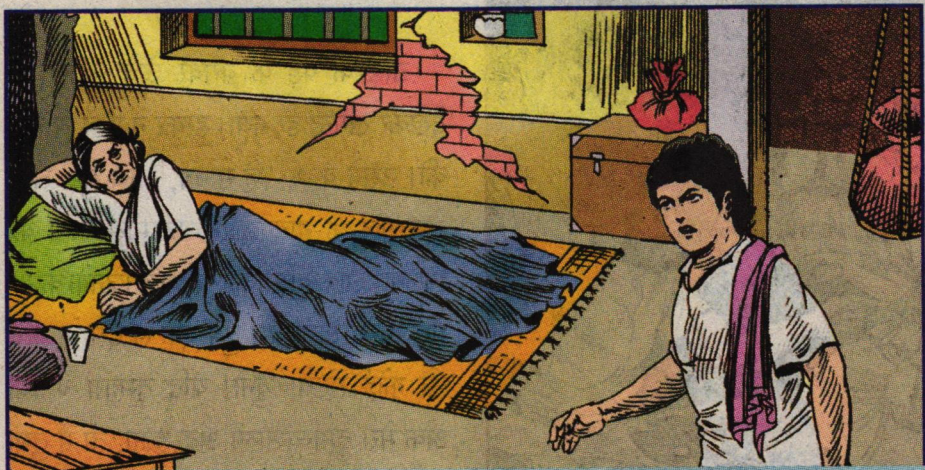
किसान ने राजा को नमस्कार किया। मन्त्रियों की ओर तरेरता हुआ वह घर चला गया।

उसी समय राजा के फैसले की खबर जमीन्दार के पास पहुँची। उसका फैसला था कि जमीन्दार किसान से माफ़ी माँगे। एक घर, पशुशाला बनवाकर दे। तीस बीघा भूमि दे और सात गौ भी दे।

"मैंने कहा था न कि राजा हमारे पक्ष में न्याय करेंगे।" किसान की पत्नी ने कहा।

"राजा के क्या कहने? वे कितने समझदार हैं। हमारी अर्जी देखते ही वे सब कुछ समझ गये। पर उनके पास बारह आदमी थे। निरे मिट्टी के माधो थे। मुझे नहीं मालूम कि वे क्यों उनको नौकरी पर रखे हुए है?" किसान ने आश्चर्य से कहा।





छोटे सिक्के

एक समय की बात है, रूप नारायण और समता नाम के पति-पत्नी मेमुरी गाँव में रहते थे। वे अपनी हृद में औरों की मदद भी किया करते थे। खगेन्द्र उनका इकलौता पुत्र था।

जब खगेन्द्र दस वर्ष का था, तो उसके पिता का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। तब से, समता अपना घर चलाने के लिये दूसरों के घरों में काम करने लगी। इस प्रकार जो कुछ भी कमाई होती, उससे उसने अपने पुत्र को बड़ा किया।

कुछ वर्षों के बाद, समता को लकवा मार गया। अब खगेन्द्र ने अपनी पढ़ाई छोड़कर छोटे-मोटे काम करना शुरू कर दिया जिससे वह धन कमाकर अपनी माँ की देखभाल कर सके।

समय बीतता गया। समता ने समझ लिया कि अब उसका अंत निकट आ गया है। उसने अपने पुत्र को अपने पास बुलाकर कहा, “प्रिय पुत्र, तुमने मेरे लिये इतनी कड़ी मेहनत की। तुमने मेरी बहुत देखभाल की और मेरा बहुत अच्छे से ध्यान रखा। ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपने माता-पिता की देखभाल करते हैं। तुम्हारा सबकुछ अच्छा होगा। मैं तुम्हें केवल ये छोटे सिक्के दे सकती हूँ। ये तुम्हें अच्छा भाग्य दिलाएँगे।” इतना कहकर उसने अपने पुत्र के हाथ में कुछ छोटे सिक्के रख दिये। उनमें एक पैसा, इकलौती, दुअली और अधन्ना जैसे सिक्के थे। फिर वह चल बसी।

खगेन्द्र ने उन सिक्कों को अपने पास सुरक्षित रखा। उसने अपनी माँ का अन्तिम संस्कार

एन. शिव नागेश्वर राव



किया और उस गाँव से चल पड़ा।

लेकिन उसे कुछ पता नहीं था कि किस ओर जाए। तभी, उसे एक भिखारी दिखा।

खगेन्द्र ने अपनी जेब में हाथ डाला। उसके हाथ में अधन्नी आ गई। वह उसने उस भिखारी को दे दी। तब भिखारी उससे बोला, “बेटा, पूर्व की ओर जाओ। यह तुम्हारे लिये अच्छा होगा,” और उसे आशीर्वाद दिया।

खगेन्द्र उसकी बात मानकर पूर्व की ओर चल पड़ा। कुछ दिन की यात्रा के बाद वह एक जंगल में पहुँचा। उस जंगल में डुरकुर नाम का एक राक्षस रहता था। खगेन्द्र के जंगल में घुसते ही उसे मानव की गंध आ गई और वह आकर उसके सामने खड़ा हो गया।

ताड़ के पेड़ के बराबर ऊँचे राक्षस को देखकर खगेन्द्र डर गया। डुरकुर ने शिव से बात की। उसने कहा, “हे मानव, आज मुझे लम्बे अन्तराल के बाद इंसान का मांस खाने को मिलेगा। लेकिन ऐसे कई कारण हैं जिनके कारण मेरा भाग्य खराब है। तुम एक से दस के बीच की कोई संख्या चुनो। यदि तुम्हारा बताया अंक मेरा दुर्भाग्यशाली अंक हुआ, तो मैं तुम्हें यहाँ से जाने दूँगा। यदि नहीं, तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।”

खगेन्द्र ने अपना हाथ जेब में डाला। उसे अपनी माँ के दिये हुए सिक्कों में तीन पैसे का सिक्का मिला। खगेन्द्र ने दुबारा कुछ न सोचते हुए वही अंक ज़ोर से बोल दिया, “तीन”।

वह अंक सुनने के बाद, राक्षस ने क्रोध से कहा, “यही मेरे लिये दुर्भाग्यशाली अंक है”। यदि तुम्हारे यह अंक बोलने के बाद मैं तुम्हें खाऊँ, तो मैं और मुसीबत में पड़ जाऊँगा। तुरन्त यहाँ से चले जाओ!”

सुनकर जैसे खगेन्द्र की छाती से मनो बोझ उतर गया। वह उस खतरे से बचने पर बेहद खुश हुआ और तेज़ी से वहाँ से आगे बढ़ गया।

कुछ और दिन चलने के बाद, खगेन्द्र जंगल में रास्ता भटककर एक बस्ती में जा पहुँचा। बस्ती के लोगों ने उसके अन्दर घुसते ही उसे बाँध लिया और अपने नेता सरबन्दी के पास ले गए।

सरबन्दी ने गुस्से से उसकी ओर देखकर कहा, “हम हमारे गाँव में घुसने वाले किसी को भी जिन्दा नहीं जाने देते,” और उसे उनकी देवी की आदमकद मूर्ति के पास ले गया।

देवी के पैरों के पास छः ग्लास थे। सरबन्दी ने खगेन्द्र को वे ग्लास दिखाकर कहा, “इनमें से एक में अंगूर का रस है। बाकी सभी में ज़हर है। तुम इनमें से कोई एक ग्लास उठा सकते हो। यदि तुम पर हमारी देवी की दया हुई, तो तुम जीवित रहोगे। नहीं तो तुम मर जाओगे।”

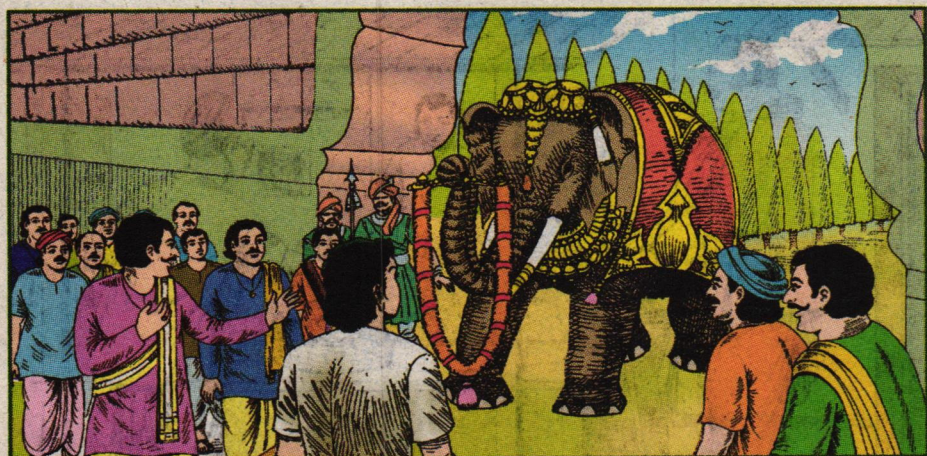
खगेन्द्र ने जेब से एक सिक्का निकाला। यह एक आना (छः पैसे) था। खगेन्द्र ने झट से छठा ग्लास उठाकर पी लिया। सौभाग्य से, उसी में अंगूर का रस था और वह बच गया।

सरबन्दी ने कहा, “तुम किस्मत के धनी हो। तुम्हें हमारी देवी की कृपा प्राप्त है। तुम जा सकते हो। यदि तुम यहाँ से दक्षिण की ओर जाओ, तो तुम स्वर्णपुरी राज्य पहुँच जाओगे।”

जब खगेन्द्र स्वर्णपुरी राज्य पहुँचा, उसने देखा कि वहाँ की सड़कों पर सैकड़ों लोग जमा थे। लोगों ने बताया कि वहाँ के राजा की अचानक मृत्यु हो गई थी और कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण शाही हाथी को अगले राजा का चयन करने दिया जा रहा है। हाथी जिसके गले में माला डाल देगा, वही मेमुरी का अगला राजा होगा।

खगेन्द्र ने अपनी जेब में हाथ डाला। दो आने का सिक्का उसके हाथ आया। उसने सिक्के को हवा में उछाला और जहाँ सिक्का ज़मीन पर गिरा, वहाँ जाकर खड़ा हो गया।

कुछ देर के बाद, शाही हाथी वहाँ आया और उसने आते ही खगेन्द्र के गले में माला डाल दी। मेमुरी के लोगों ने हर्षोल्लास के साथ उसे अपना राजा स्वीकार कर लिया। माँ के दिये सिक्कों ने आखिर खगेन्द्र को एक राजा बना दिया।

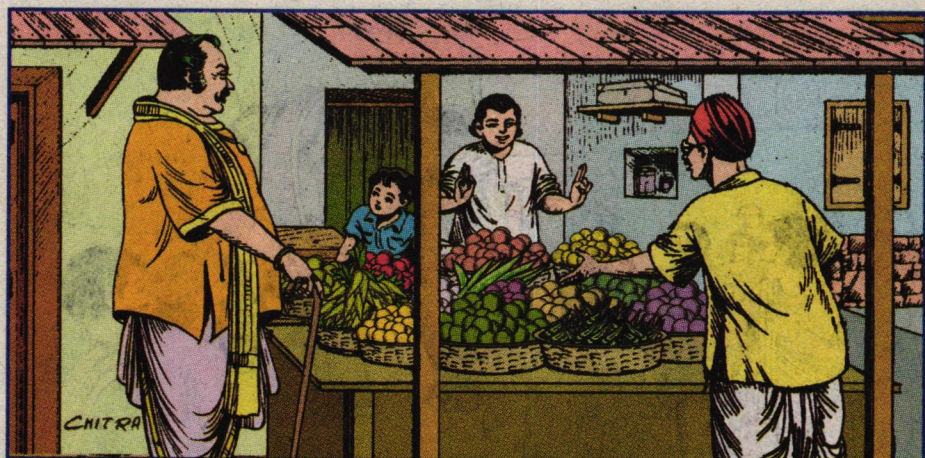


व्यावसायिक बुद्धि

पशुपति की मधुपुर गाँव में सब्जियों की दुकान थी। उसकी दुकान में रौशन नाम का एक लड़का काम करता था। पशुपति की दुकान पर आस-पास के गाँवों से भी लोग सब्जियाँ खरीदने आते थे। एक सुबह, कीर्तिवीर नाम का एक धनी जमींदार पशुपति की दुकान पर आया और उसे एक लम्बी सूची थमा दी। उसने उससे सूची की सारी सब्जियाँ जल्दी से दे देने को कहा। पशुपति और रौशन सूची देखकर सब्जियाँ तौलने और थैलों में रखने लगे। उसी समय, भीमराज नाम का एक शिक्षक भी दुकान पर आया। उसे देखकर पशुपति ने हाथ का काम छोड़ दिया और शिक्षक को उसकी ज़रूरत की सब्जियाँ दे दीं। रौशन ने देखा कि कीर्तिवीर को यह पसन्द नहीं आया था। कुछ देर बाद उसकी सब्जियाँ भी तैयार थीं। कीर्तिवीर ने अपना सामान लिया, उसका मूल्य दिया और चला गया। उसके जाने के बाद रौशन ने पशुपति से कहा, “आपने जो किया उससे कीर्तिवीर अप्रसन्न हो गया।”

पशुपति ने मुस्कुराकर कहा, “भीमराजजी हर रोज़ हमारी दुकान पर सब्जी लेने आते हैं। यदि हम उन्हें प्रतीक्षा कराएँगे, तो उन्हें लगेगा कि हमने उनकी उपेक्षा की, और वे किसी और दुकान पर चले जाएँगे। इस प्रकार, हम लम्बे समय में हमारे लिये अधिक मुनाफ़ा देने वाला नियमित ग्राहक खो देंगे। कीर्तिवीर हमेशा हमसे सामान नहीं लेता। इसलिये हमें ऐसे ग्राहकों के लिये भीमराज जी जैसे लोगों का विश्वास नहीं खोना चाहिये।” रौशन को पशुपति की व्यावसायिक बुद्धि पर हैरानी हुई।

- एस. सुधा रानी



सच जैसा झूठ

एक राजा ने यह ढिंढोरा पिटवाया कि जो व्यक्ति सच जैसा झूठ कहेगा, उसे सोने का आम दिया जायेगा।

सोने का आम पाने के लोभ से कई लोग राजमहल के पास दौड़े-दौड़े आये। सब ने तरह तरह के झूठ बताये। लेकिन राजा को उनमें से कोई झूठ पसंद न आया। उनमें कुछ झूठ सच भी हो सकते थे, बाकी सब सरासर झूठ ही थे। इसलिए राजा ने सोने का आम किसी को नहीं दिया।

एक दिन एक भिखारी बड़ा घड़ा लेकर राजा के पास आया।

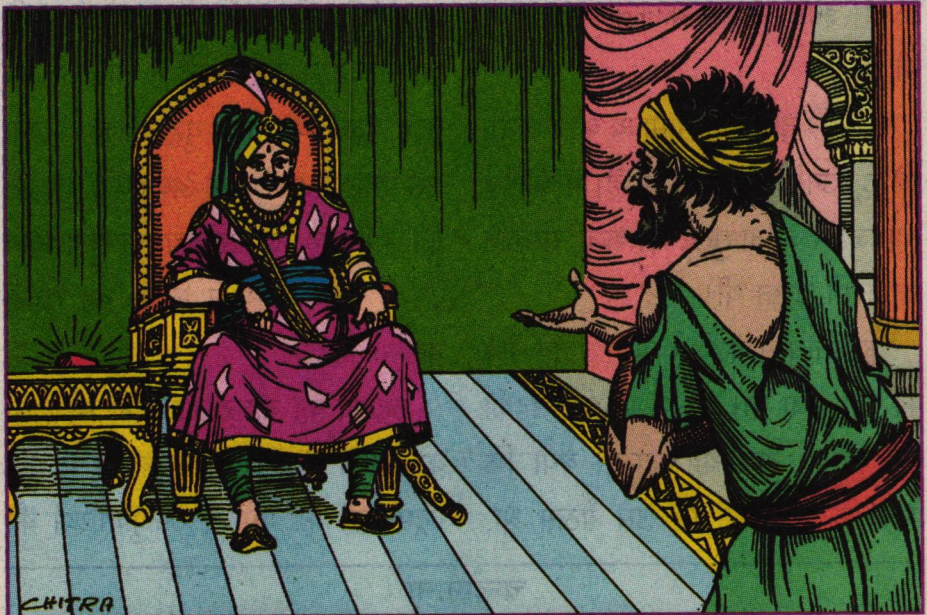
“तुमको क्या चाहिये?” राजा ने भिखारी से पूछा।

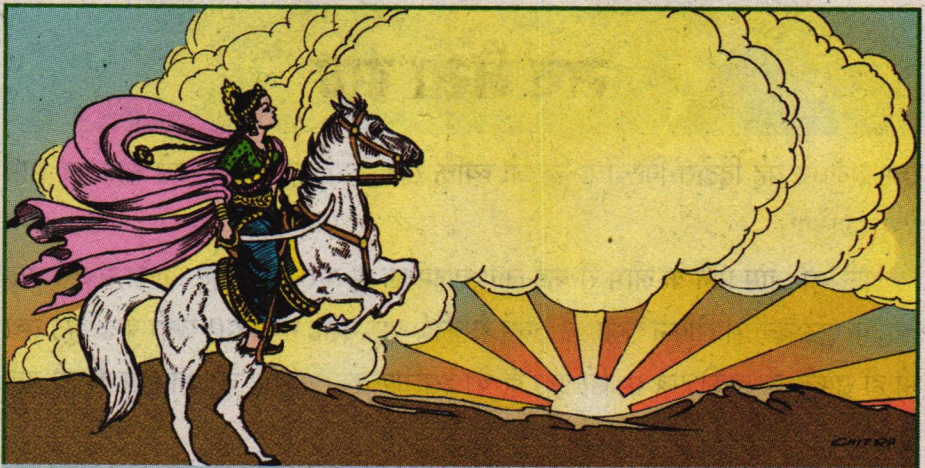
“आप से मुझे इस घड़े भर सोना मिलना है, दिलाइये।” भिखारी ने जवाब दिया।

“यह झूठ है। अरे वाह, तुम मुझ को ही झूठा बनाने चले? मुझ से तुमको कुछ नहीं मिलना है।” राजा ने उत्तर दिया।

“झूठ है, तब तो वह सोने का आम मुझे दे डालिये।” भिखारी ने कहा।

राजा ने खुश होकर उसे सोने का आम दे दिया।





रुद्रम देवी

हमारे देश में बहुत सी वीर स्त्रियाँ पैदा हुईं। ऐसी स्त्रियाँ भी बहुत हैं, जिन्होंने देश के लिए प्राण त्याग दिये, युद्ध में पराक्रम दिखाया और बड़ी कुशलता से राज्य भी किया। इनमें से एक काकतीय रुद्रमदेवी भी है।

जिन्होंने दक्षिण में साम्राज्य की स्थापना की है, उनमें काकतीय भी हैं। काकतीय साम्राज्य में जनता सुखी थी। कला, संस्कृति आदि भी उन्नत थीं।

काकतीय राजाओं में गणपति देव नाम का एक राजा था। इस के एक ही लड़की थी। उसका नाम था रुद्रम्मा। क्यों कि पिता के बाद गद्दी पर उसे बैठना था,

इसलिए छुटपन में ही उसने तलवार चलाना, घुड़सवारी, युद्ध कला, राज्य शासन पद्धति आदि सीखीं।

रुद्रम्मा की माँ का नाम नारम्मा था। उसकी एक ही लड़की थी और उस लड़की का ललित कलाएँ आदि न सीखकर इस तरह पुरुषों की तरह युद्ध विद्या सीखना उसे पसन्द न था। उसने अपने पति गणपति देव से भी यह कई बार कहा। परन्तु गणपति देव ने कोई जवाब न दिया। वह केवल मुस्करा दिया।

रुद्रम्मा का यह रुख उसकी सहेलियों को भी न भाया। उनका ख्याल था कि रुद्रम देवी का मामूली राजकुमारियों की

तरह रहना, अच्छे गहने वगैरह पहिनना, लाड़ प्यार से बड़ा होना और सयानी होते ही उपयुक्त वर से विवाह करना और माँ बनना, अच्छा था।

इसलिए उसका रुख बदलने के लिए सबने मिलकर एक बात सोची। एक दिन जब वह बाग में बैठी थी, सहेलियों ने एक के बाद एक आकर कहा- “युवराज की जय, युवराज की जय....”

यह सुन रुद्रम्मा घबरायेगी, उन्होंने सोचा, पर वह हिली भी नहीं।

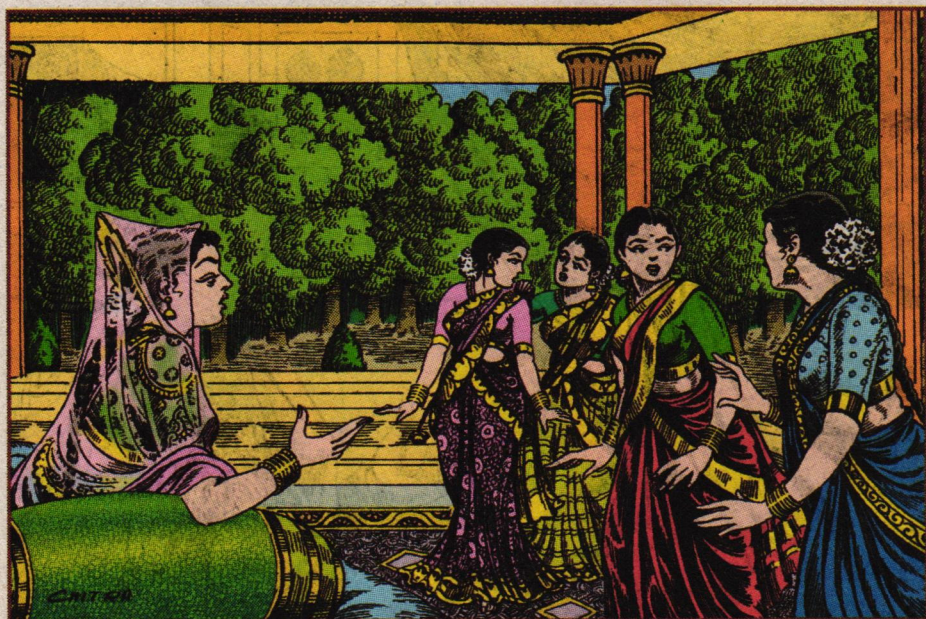
रुद्रम्मा ने उनकी ओर गंभीरतापूर्वक देखकर कहा- “युवराज से तुम क्या चाहती हो?”

सहेलियों को न सूझा कि क्या कहें, वे एक दूसरे का मुंह देखने लगीं।

“क्यों हिचक रही हो? तुम्हारी क्या इच्छा है, बताओ। मैं उन्हें पूरा करने के लिए तैयार हूँ।” रुद्रम्मा ने कहा।

सहेलियों ने भी सोचा कि अपनी मनोकामनाओं को पूरा करने का भी यही अच्छा मौका था। उन्होंने रुद्रम्मा से कहा- “हमें कुछ और नहीं चाहिए। यह काफ़ी है, यदि आप वचन दें कि आप हथियार नहीं पकड़ेंगी।”

रुद्रम्मा यह सुन क्रुद्ध हुई। क्योंकि उसको उनका यह हठ पसन्द न था कि वह अस्त्र-विद्या का अभ्यास न करे। उसके पिता को



उसका अस्त्र-विद्या का अभ्यास करना बहुत पसन्द था। इसलिए वह अभ्यास न छोड़ना चाहती थी। परन्तु क्योंकि उसने वचन दिया था कि जो कुछ सहेलियाँ माँगींगी, वह देगी इसलिए उसने कहा- “तुम्हारे कहे अनुसार मैं अस्त्र छोड़ दूंगी। परन्तु एक शर्त है, वह यह कि कोई मुझे अस्त्र विद्या में हरा दे, उसके बाद मैं हथियार नहीं पकड़ूंगी।”

उसकी सहेलियाँ यह सुन बड़ी खुश हुईं। उन्होंने यह शुभ वार्ता रुद्रम्मा की माँ नारम्मा को भी बतायी। सहेलियों की तरह माँ ने सोचा कि उसकी बेटी अस्त्र-विद्या में आसानी से हार जायेगी। उन्होंने मन्त्री को

बुलाकर कहा- “किसी एक ऐसे आदमी को बुलाओ, जो तलवार चलाने में मेरी लड़की को हरा सके।”

मन्त्री ने हँस कर कहा- “मुझे नहीं मालूम कि युवरानी को तलवार चलाने में कोई हरा भी सकता है।”

नारम्मा ने चकित होकर पूछा- “आप भी क्या कह रहे हैं? कैसे यह विश्वास किया जाय कि इस देश में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो कल परसों की इस लड़की को हरा सके?”

“मैं सच कह रहा हूँ। हमारे सेनापति का लड़का, तलवार चलाने में बहुत तेज़ है। उसने कितनों को ही हराया है। चाहें तो



आप उसको युवरानी से लड़ने के लिए कहिए।” मन्त्री ने कहा।

अगले दिन रुद्रम्मा और सेनापतिके लड़के की तलवार चलाने में प्रतियोगिता करने की व्यवस्था की गई। जब यह प्रतियोगिता हो रही थी, तब रानी नारम्मा और मन्त्री भी उपस्थित थे।

प्रतियोगिता अधिक देर न चली। थोड़ी देर में ही रुद्रम्मा ने अपने प्रतिद्वन्द्वी को निरायुध कर दिया। वह विजयी हुई।

रानी चकित हो गई परन्तु उसका उससे अस्त्र-विद्या का अभ्यास बन्द करवाने का हठ और भी बढ़ गया। उसने गणपति देव की अनुमति पर देश-विदेश में एक घोषणा करवा दी। घोषणा यह थी कि जो कोई रुद्रम्मा को अस्त्र-विद्या में पराजित कर देगा उसको सेनापति के पद पर नियुक्त

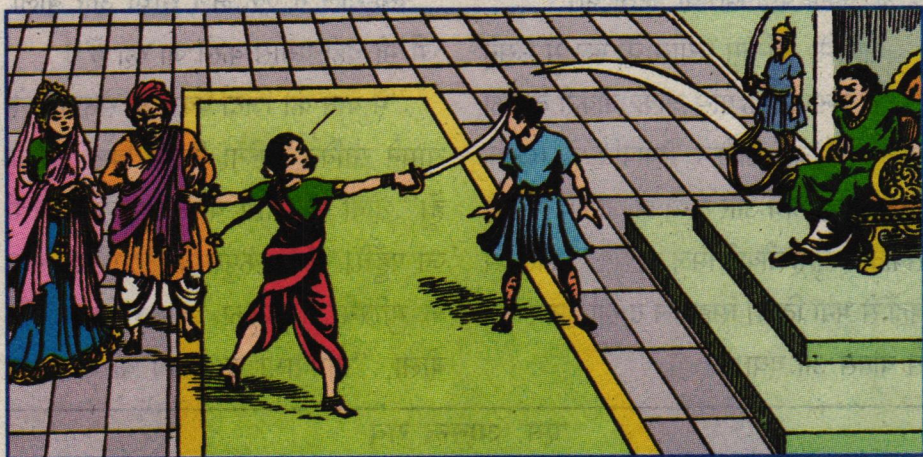
किया जायेगा।

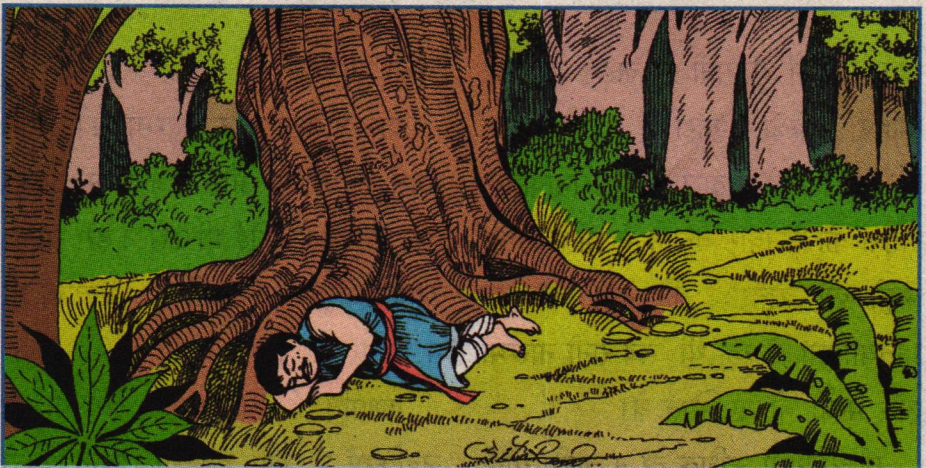
यह घोषणा सुन रुद्रम्मा को हराने बहुत से योद्धा और राजकुमार आये। परन्तु उनमें से कोई भी उसे न हरा सका। इसलिए रुद्रम्मा ने अस्त्रों का परित्याग भी न किया।

गणपति की तरह रुद्रम देवी के भी लड़कियाँ ही हुईं। इसलिए उसने अपनी लड़की के लड़के प्रतापरुद्र को पाला-पोसा। गणपति देव के बाद रुद्रम देवी ने काकतीय साम्राज्य पर बहुत दिन शासन किया।

जब वह राज्य कर रही थी, तो प्रतापरुद्र युवराज के रूप में, राज्य भार में हिस्सा बँटाया करता।

रुद्रम देवी शासन में बहुत समर्थ थी। उसका काल, काकतीय साम्राज्य का सुवर्ण काल समझा जाता है।





बौना सिंहभाल

एक समय की बात है, रामपुर गाँव में सिंहभाल नाम का एक बौना आदमी रहता था। वह धनुर्विद्या और तीरंदाजी का बहुत अच्छा जानकार था। लेकिन उसकी कम लम्बाई की वजह से उसे दरबार में नौकरी नहीं मिल पा रही थी। कई बार कम लम्बाई के कारण काम न मिलने के कारण अब उसने नौकरी खोजना बन्द कर दिया था व यँ ही अपना वक्त बिताया करता था।

अंत में, अन्तिम प्रयास के रूप में उसने फिर से सेनापति के पास जाकर नौकरी देने का अनुरोध दिया। लेकिन सेनापति ने मज़ाक किया, “दो हाथ और लम्बे हो जाओ। फिर हो सकता है तुम्हें नौकरी मिल जाएगी,” और उसे वहाँ से भगा दिया। सिंहभाल दुःखी होकर वहाँ से वापस आ गया।

रास्ते में, वह सुस्ताने के लिये एक पेड़ की छाँह में लेट गया। जब उसकी नींद टूटी, तो उसने एक नवयुवक को अपने सामने खड़ा पाया। “मेरा नाम विजय है। सेनापति को पता लगा कि एक बाघ पास के गाँव के गाँव वालों को परेशान कर रहा है। अतः उन्होंने मुझे उसे मारने भेजा है।”

सिंहभाल ने एक क्षण सोचा और बोला, “मैं भी यही प्रयास करने जा रहा हूँ।”

“मैं बाघ को ज़िंदा पकड़कर सेनापति के सामने साबित करूँगा कि मैं किस लायक हूँ।” दोनों एक साथ चलते हुए एक गाँव में जा पहुँचे। गाँव चक्रपुरी कहलाता था। गाँव के मुखिया ने उनका स्वागत किया और बोला, “ग्रामवासी उस बाघ की वजह से

एम. आनन्द राव

लगातार भयभीत रहते हैं। अब तक वह दस गायों, छः भेड़ों और तीन आदमियों को मार चुका है।”

“मैं उस बाघ को निहत्था ही मार सकता हूँ। लेकिन क्योंकि सेनापति ने विजय को यह काम करने भेजा है, अतः पहले इसे प्रयास करने दीजिये,” सिंहभाल ने कहा। फिर वे गाँव वालों द्वारा प्रदान किया गया भोजन करके सो गए।

विजय ने जंगल में एक पेड़ के नीचे एक गाय बाँध दी। फिर वह एक और पेड़ की चोटी पर चढ़ गया और बाघ के गाय की ओर जाने की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन बाघ का कहीं पता न था। तीन दिन बीत गए। इस बीच एक दिन बाघ एक घर में घुस गया और वहाँ सो रहे व्यक्ति को बुरी तरह घायल कर दिया।

फिर विजय ने गाँव वालों से कहा, “इस बाघ की दाढ़ में इनसान का रक्त लग गया है। इस कारण वह गाय का शिकार करने नहीं आएगा। बाघ के लिये चारे का काम करने के लिये हमें एक बहादुर आदमी की आवश्यकता होगी।” मुखिया ने मुस्कुराकर कहा, “सिंहभाल ने कहा था कि वह निहत्था ही बाघ को मार सकता है। मेरे विचार से हमें उसे ही चारे के रूप में उपयोग करना चाहिये।”

जब सिंहभाल को पता लगा कि गाँववाले उसे बाघ के चारे के रूप में उपयोग करने वाले



हैं, तो वह घबरा गया। लेकिन गाँववाले उसके पीछे ही पड़ गए। अब सिंहभाल के सामने उनकी बात मान लेने के अलावा कोई रास्ता न था।

वह गाय की जगह पर बैठ गया। विजय पास के एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया और वे बाघ की प्रतीक्षा करने लगे। गाय को बाँधने की रस्सी ज़मीन पर पड़ी हुई थी।

सिंहभाल ने कुछ पत्थर उठाकर विजय की ओर फेंकने शुरू कर दिये। तुम मुझपर पत्थर क्यों फेंक रहे हो?” विजय क्रोध में चीखा।

“तुम वहाँ आराम से बैठे हो और मैं यहाँ मुसीबत में हूँ। अगर तुम्हें नींद आ गई तो मेरा क्या होगा?” सिंहभाल ने पूछा।

विजय पेड़ से नीचे उतर आया और गाय को बाँधने की रस्सी को सिंहभाल की कमर में बाँध दिया। फिर वह उससे बोला, “यदि तुमने ठीक बर्ताव नहीं किया तो तुम मेरे हाथों से मारे जाओगे।” फिर विजय वापस पेड़ पर जा चढ़ा और प्रतीक्षा करने लगा। सिंहभाल ने उसकी ओर पत्थर फेंकना, चिल्लाना और ज़ोर-ज़ोर से गाने गाना जारी रखा। लगभग आधी रात को दोनों सो गए। बाघ धीमे-धीमे चलता हुआ सिंहभाल की ओर बढ़ा।

सिंहभाल चौकन्ना हो गया और हल्की आवाज़ निकालने लगा। लेकिन तीन दिनों का जागा हुआ होने से विजय गहरी नींद में सो गया था। बाघ ने सिंहभाल पर आक्रमण कर दिया। सिंहभाल चीखने और दौड़ने लगा।

लेकिन उसकी रस्सी दूसरी ओर एक पेड़ के तने से बँधी हुई थी। उसे खोलकर अपने को मुक्त करने का उसके पास समय नहीं था। सिंहभाल बाघ से जान बचाने के लिये पेड़ के ठूँठ के चारों ओर दौड़ने लगा। बाघ भी गोल-गोल चक्कर काटने लगा।

विजय की भी नींद खुल गई। वह बोला, “दौड़ो मत, मैं अपने तीर से बाघ को समाप्त कर दूँगा।” सिंहभाल चिल्लाया, “यदि मैं रुका तो बाघ मुझे सच में खा जाएगा।”

सिंहभाल और बाघ के पेड़ के ठूँठ के आसपास तेज़ी से दौड़ते रहे। जिस रस्सी से सिंहभाल बँधा था, वह बाघ के दो पीछे के पैरों के बीच आ गई और उसके पीछे के दोनों पैर बँध गए।



सिंहभाल समझ गया कि अब बाघ हिल-डुल नहीं सकता। वह बाघ की पीठ पर चढ़ गया और उसकी गर्दन पर अपने हाथ का शिकंजा कस दिया। गाँव वालों ने सिंहभाल की आवाज़ें सुनीं और उस ओर दौड़ पड़े। उन्होंने देखा कि सिंहभाल बाघ की पीठ पर बैठा है, और उन्होंने उसकी बहादुरी की तारीफ़ों के पुल बाँधने आरम्भ कर दिये।

“तुम इस बाघ को राजा के पास ले जाकर उससे इनाम ले लो,” सिंहभाल ने कहा। “मैं तो पहले से राजा के दरबार का कर्मचारी हूँ। इसके अलावा तुमने ही बहादुरी दिखाकर इस बाघ को पकड़ा है। अतः इसे तुम ही ले जाओ। हो सकता है इसके बाद तुम्हें वहाँ नौकरी मिल जाए,” विजय ने सिंहभाल को समझाया। सिंहभाल ने राजधानी पहुँचकर वह बाघ राजा को भेंट कर दिया। प्रधानमन्त्री कुशलबुद्धि ने राजा

से कहा, “महाराज, इस बौने ने बाघ को पकड़ लिया। काश इस महान बहादुरी घटना का कोई गवाह होता।”

प्रधान-मंत्री के शब्दों का सिंहभाल को बहुत बुरा लगा। उसने प्रतिवाद किया, “विजय नाम का एक व्यक्ति है जिसने मुझे बाघ को पकड़ते देखा है। वह राज दरबार में ही काम करता है।” प्रधानमंत्री ने हँसते हुए कहा, “जहाँ तक मुझे पता है, राजा के कर्मचारियों में विजय नाम का कोई नहीं है।

राजा उठ खड़ा हुआ। अचानक दरबार में शान्ति छा गई। “मैं हूँ विजय,” राजा बोला। “इस नवयुवक ने स्वयं को मार डालने पर उतारू बाघ पर दया दिखाकर उसे केवल कैद किया। हम सभी पढ़े-लिखे और बड़े ओहदों पर हैं। तो भी हम इसे बधाई देने के स्थान पर इसका मज़ाक उड़ा रहे हैं। राजा ने सिंहभाल को अपनी सेना में उच्च पद दिया।





दो बेटे

बड़वानी राज्य के राजा एकमुख के सुमन्त और वसन्त नाम के दो बेटे थे। उसने अपने दोनों बेटों को गुरु केदार के गुरुकुल में भेजा। राजा अपने राज्य के दो भाग करके दोनों बेटों को एक एक हिस्सा देना चाहता था। उसने गुरु केदार से अपने बेटों को पढ़ाई के साथ साथ शासन-व्यवस्था की बारीकियाँ और युद्ध-कौशल की शिक्षा भी देने का आग्रह किया।

कुछ समय के बाद राजा एकमुख ने गुरु केदार से अपने बेटों की शिक्षा के विषय में जानकारी माँगी। गुरु केदार ने उत्तर दिया, “महाराज, आपके द्वारा निवेदन किए हुए विशेष कौशल मैं उन दोनों को सिखला रहा हूँ। सुमन्त प्रशासन में रुचि ले रहा है। वह तीव्र रुचि से प्रशासन के सिद्धान्तों को सीख रहा

है। परन्तु वसन्त की इन विषयों में कोई रुचि नहीं दिखती। वह प्रकृति का अवलोकन करता रहता है और चित्र बनाता है। उसका कलाओं से लगाव है।”

कुछ दिनों के बाद राजा गुरुकुल की ओर गये। उन्होंने देखा कि गुरु के भाषण के बाद, प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रुचि का काम करने लगा। सुमन्त धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था जबकि वसन्त ने अपने आप को चित्रकारी में डुबो दिया। दोपहर भर वे उन पर दृष्टि जमाये रहे।

गुरु केदार ने राजा एकमुख को विद्यार्थियों को ध्यान से देखते हुए देखा और पहचान लिया। उन्होंने राजा को बड़े स्नेह से आश्रम में बुलाया और एक आम के पेड़ के नीचे एक

कम्बल के आसन पर बैठाया।

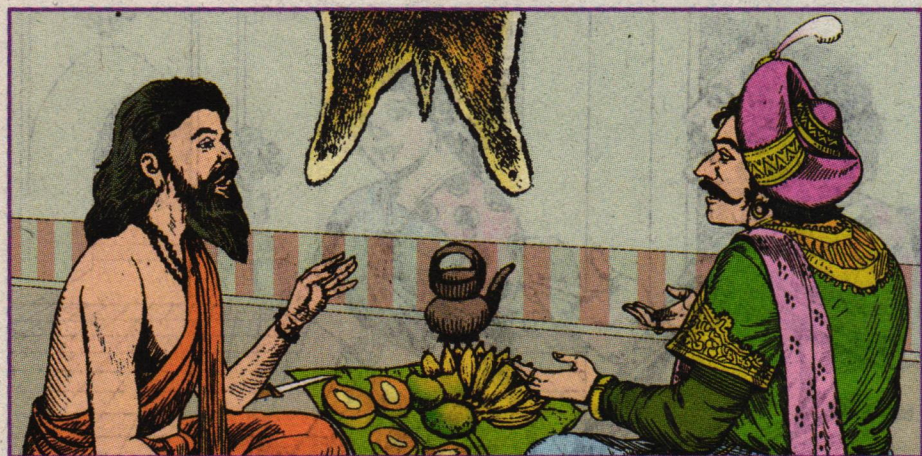
राजा एकमुख ने कहा, “मुझे वसन्त की चिन्ता हो रही है। वह राज्य कैसे चलाएगा और कैसे उसकी रक्षा करेगा यदि वह वीर और बलवान न बना?”

“महाराज, कृपया हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये। उसके बाद हम वसन्त के भविष्य के विषय में विचार करेंगे,” गुरु केदार ने कहा। भोजन में गुरु ने राजा को एक कटोरा भर कर ताजे आम के टुकड़े दिये। राजा ने कुछ टुकड़े खाए जो उन्हें स्वादिष्ट लगे। उन्होंने कुछ और टुकड़े उठा लिये परन्तु इस बार वे अच्छे नहीं लगे। इस बार वे आम के टुकड़े खट्टे लगे। गुरु ने कहा, “महाराज, आप ने कुछ महसूस किया? जो आम मैंने आप को दिये वो दोनों एक ही पेड़ के थे। यद्यपि दोनों एक से दिखते थे फिर भी दोनों के स्वाद में कितना फर्क था। आपके बेटे भी वैसे ही हैं। प्रत्येक की अपनी

अपनी विशेषता है।”

“महाराज, यदि आपने जबरदस्ती वसन्त को राजा बनाया तो भी उसका शासन-प्रबन्धन सफल नहीं होगा। जिस काम में व्यक्ति की रुचि न हो उसे करने पर वह सफल नहीं हो सकता। यदि आप उसका हौसला बढ़ायें तो वसन्त एक अच्छा कलाकार या कवि बन सकता है। यद्यपि यह आपकी इच्छा के विरुद्ध है, परन्तु आप सुमन्त को सारे राज्य का राजा बनाकर उसे एक अच्छा शासक बनने का मौका दीजिये क्योंकि उसकी इस क्षेत्र में रुचि है।”

गुरुजी के शब्दों ने राजा को सोचने को विवश कर दिया। उसने समझ लिया कि अपने बेटे को अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने को मजबूर करना मूर्खता होगी। प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षित करते समय उसकी रुचियों का ध्यान रखने के लिए राजा ने गुरुजी की प्रशंसा की।

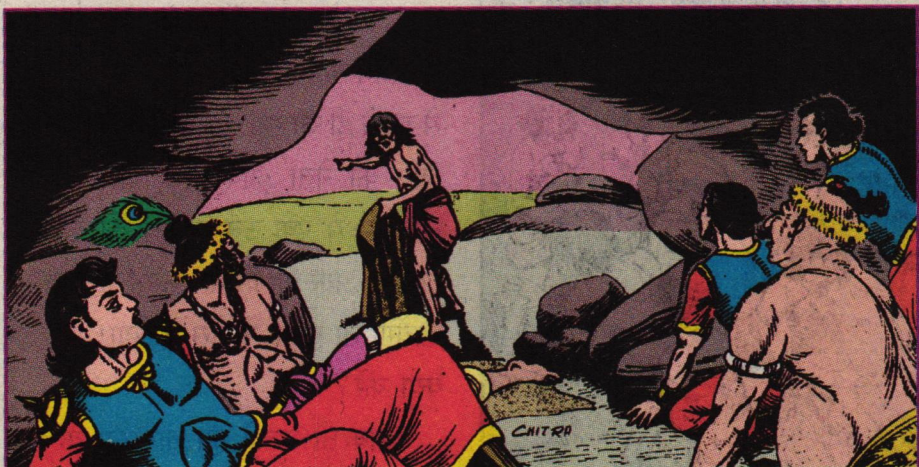


सही चुनाव

चन्द्रहास ने अपनी बेटी मेधा से एक उपयुक्त वर की बात की। “पिताजी, कृपया दो ऐसे विवाहार्थी चुनिये जिन्हें आप मेरे योग्य समझते हों। मैं उनमें से एक को चुन लूंगी,” मेधा ने कहा जो बुद्धि और सौन्दर्य की स्वामिनी थी। चन्द्रहास को अजय और सुजय नामके दो लड़के मिले। सुजय को नौकरी करने की जरूरत नहीं थी क्योंकि उसे अपने पिता से अपार सम्पत्ति मिली थी। वह आराम से प्राप्त सम्पत्ति का उपभोग कर रहा था। अजय कलाकार था। वह अपनी कलाकृतियाँ बेच कर जीवन निर्वाह करता था। उन दोनों में ही कोई बुरी आदत न थी और वे दोनों ही बिना कुछ अपेक्षा किये विवाह के लिए तैयार थे। चन्द्रहास ने बेटी से कहा, “सुजय अमीर है। उसके साथ तुम्हारा जीवन सुखी रहेगा।” मेधा बोली, “अजय आपके लिए अच्छा दामाद सिद्ध होगा। अगर कोई जीवन-यापन के लिए कुछ नहीं करता है तो वह सम्पत्ति तो समाप्त हो जाएगी। उस समय तक उसे आराम की इतनी आदत पड़ चुकी होगी कि वह कमाने के लिए मेहनत करने लायक नहीं रह जायेगा। इससे मेरा जीवन कठिन हो जायेगा।” तब चन्द्रहास ने कहा, “परन्तु यदि तुम अजय से शादी करती हो तो प्रारंभ से ही मुसीबतें झेलना पड़ेगी, है न?” “नहीं पिताजी। मैंने अजय की कलाकृतियाँ देखीं हैं। वह बहुत प्रतिभाशाली है। प्रोत्साहन मिलने पर वह और भी अच्छे चित्र बना सकेगा और धन कमाएगा। सिर्फ इतना ही नहीं कलाकार स्वभाव से भावुक होते हैं। मुझे विश्वास है कि वह एक अच्छा पति साबित होगा,” मेधा ने कहा।

- जे. मार्टिन फ़िनले





शिथिलालय-१९

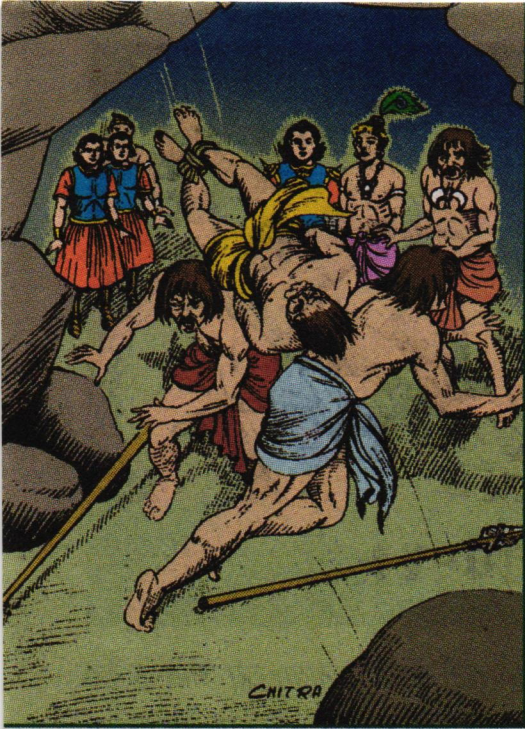
(रात के वक्त शिखिमुखी के दल को वृच्छिक जातिवालों ने बन्दी बनाया। उस जाति के नेता ने उन्मत्त कैथे की जो बात कही, उसे सुनकर नांगसोम उसकी खोज में चला गया और पहरेदार के हाथ-पैर बाँध दिया। वह चट्टान के साथ शिखिमुखी के दल के सोनेवाले पहाड़ी आँचल की ओर लुढ़कने लगा। इसके बाद-)

गुफा में सोनेवाले वृच्छिक जाति के नेता तथा गुफा के सामने ऊँघनेवाले शिखिमुखी और उसके अनुचर पहाड़ पर से लुढ़कने वाली चट्टान की आवाज़ सुनकर डर गये। पहरेदार भी लुढ़कता आ रहा था। उन लोगों ने सोचा कि भूकंप के कारण पहाड़ की चोटी टूटकर नीचे गिर रही है।

शिखिमुखी अपने अनुचरों को सावधान कर ही रहा था कि इतने में गुफा से वृच्छिक जाति का नेता बिजली की भाँति बाहर दौड़

आया। “तुम सब दूर भाग जाओ! भूकंप है, भूकंप। भाग न जाओ तो मर जाओगे।” वृच्छिक जाति का नेता चिल्ला पड़ा।

नेता की चेतावनी सुनकर सब लोग भाग ही रहे थे कि इतने में ही बड़ी ध्वनि के साथ चट्टान तथा थोड़ी देर बाद पहरेदार नीचे आ गिरे। भाग्य की बात थी कि चट्टान ऐसी जगह आ गिरी, जहाँ पर कोई आदमी न था। मगर पहरेदार चीखते-चिल्लाते अपनी जाति के दो आदमियों पर जा गिरा।



वृच्छिक जाति का नेता नीचे गिरकर कराहनेवाले पहेरेदार के पास पहुंचा और पूछा- “यह कैसी बात है? तुमने हाथ-पैर क्यों बाँध लिये?”

पहेरेदार लड़खड़ाते खड़ा हो गया और बोला- “हमने इभ्यु जाति के जिन लोगों को बन्दी बनाया, उनमें से एक ने मेरे पास आकर चोरी से मुझ पर आक्रमण किया और मेरे हाथ-पैर बाँध दिये। यह खबर देने के लिए मैं पहाड़ पर से लुढ़ककर यहाँ आया हूँ।” पहेरेदार की बातों ने वृच्छिक जाति के नेता, शिखिमुखी और विक्रमकेसरी को भी आश्चर्य में डाल दिया। शिखिमुखी ने अपने अनुचरों को देख समझ लिया कि उनमें

नांगसोम नहीं है। वह यह बात विक्रमकेसरी से कहने ही जा रहा था कि इतने में वृच्छिक जात का नेता कांपते हुए बोला- “तुम लोगों में से एक उन्मत्त कैथे की खोज में गया है। अगर वह हिम्मत करके वह फल खा जायेगा तो खतरे में फँस जायेगा। अब हम क्या करें?”

“तब तो जल्दी हम नांगसोम के पास पहुंचकर उस फल को खाने से उसे रोक देंगे। मगर यह तो बताओ कि उस फल को खाने से कैसा खतरा उत्पन्न होने वाला है?” शिखिमुखी ने पूछा।

“वृच्छिक जाति के नेता को छोड़ और कोई भी व्यक्ति उस फल को खाकर हज़म नहीं कर सकता। मैंने इधर दो दिन पहले मेरे बन्दी-चोटीवाले पुजारी से वह फल खिलाकर उसके मुंह से सच्ची बातें कहलवाना चाहता था।” वृच्छिक जाति के नेता ने कहा।

इस पर शिखिमुखी ने वृच्छिक जाति के नेता से कहा- “नांगसोम किसी को धोखा देकर उन्मत्त कैथे की खोज में नहीं गया है। इस प्रदेश की आब-हवा से उसका चित्त भ्रमित हो गया है। हम तुम्हारे मित्र हैं। इसलिए शिथिलालय की खोज में हम तुम्हारी सब तरह से सहायता करेंगे। चलो, पहले हम लोग नांगसोम को खोज-ढूँढ़कर पकड़ लायेंगे।”

वृच्छिक जाति के नेता ने अपने दल के लोगों से बताया कि अगर नांगसोम ने उन्मत्त कैथा खा लिया हो तो मैं उसे वृच्छिक माता की बलि चढ़ाऊंगा। इसके बाद शिखिमुखी से बोला- “चलो, कैथा खाकर खतरे में पड़ने से पहले ही हम नांगसोम को पकड़ लायेंगे।”

सब लोग वृच्छिक जाति के नेता के पीछे उन्मत्त कैथे के पेड़ोंवाले तालाब की ओर चल पड़े। लेकिन इस बीच में नांगसोम ने पेड़ पर चढ़कर एक उन्मत्त कैथा खा लिया था। उस फल को खाने के कुछ क्षण बाद उसे लगा कि नशा चढ़ता जा रहा है और ज़मीन, पेड़-पौधे, पहाड़ आदि घूम रहे हैं।

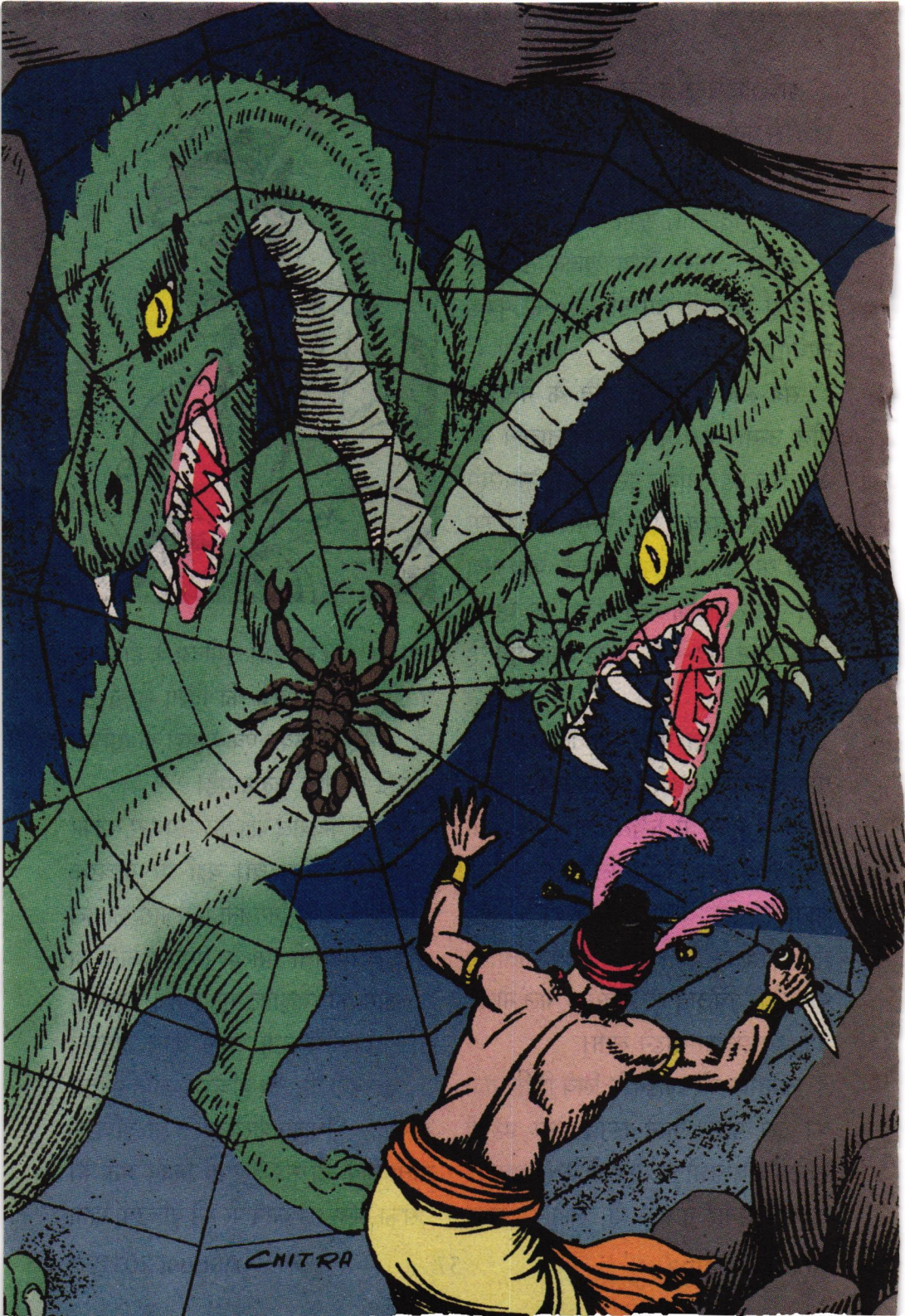
“मैंने उन्मत्त कैथा खा लिया है। मैं पागल होता जा रहा हूँ। इस उन्मत्त अवस्था में ही मैं भूगर्भ में स्थित शिथिलालय का पता लगा सकूंगा। शिथिलालय और वृच्छिक माता का मंदिर क्या दोनों एक ही हैं? लो, वही शिथिलालय है! वही वृच्छिक माता का मंदिर है!” चिल्लाते हुए नांगसोम बाल नौचते पहाड़ी रास्ते पर दौड़ने लगा।

नांगसोम को पकड़ने के लिये शिखिमुखी का दल पीछा करने लगा। मगर पहाड़ी घाटियों और वृक्षों के बीच से केवल उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन उसका



पता नहीं लग रहा था। सूर्योदय के होने तक वे लोग उस आवाज़ की दिशा में खोजते रहे, आखिर थककर एक पहाड़ी के आँचल में पेड़ों के नीचे लुढ़क पड़े।

उन्मत्त कैथेवाले पेड़ों के तालाब से सटकर एक दूसरा जंगल था। वहाँ पर वृच्छिक जाति के दल की निगरानी में पुजारी का दल बन्दी था। आधी रात के समय पुजारी को नांगसोम की चिल्लाहट सुनाई दी। पुजारी ने तुरंत सवरगीध तथा अपने अन्य अनुचरों को चेतावनी दी, तब वृच्छिक जाति के दल से कहा- “चिल्लानेवाले व्यक्ति पर वृच्छिक माता हावी हो गई है, वह महान भक्त है। उसका अनुसरण करने पर हमें वृच्छिक माता



का मंदिर दिखाई देगा। चलो, देरी न करो।”

वृच्छिक जाति के लोग भोले थे। इसलिए शिथिलालय के पुजारी की बातों पर यकीन करके वे सब नांगसोम की खोज में चल पड़े। सूर्योदय हो रहा था, तब उन लोगों को एक गुफा के सामने नांगसोम दिखाई पड़ा। गुफा के आगे मकड़ी का जाला फैला हुआ था। उसमें एक राक्षसी बिच्छू फँस गया था जो बाहर निकलने को छटपटा रहा था।

नांगसोम उस जाले के सामने एक तलवार लिए इधर-उधर दौड़ते चिल्लाने लगा- “बचाओ, मुझे बचाओ! एक भयंकर जलजंतु मुझे निगलने जा रहा है।”

नांगसोम की घबराहट और चिल्लाहट को देखकर पुजारी ने समझ लिया कि नांगसोम उन्मत्त कैथा खाकर उन्मत्त हो गया है। पुजारी के मन में यह आशा भी बँध गई कि वृच्छिक जाति के विश्वास के अनुसार अब शिथिलालय का पता लगाया जा सकता है।

पुजारी ने उस उन्मत्त व्यक्ति के पास पहुंचकर पूछा- “तुम इभ्यु जाति के हो न? तुमको मैंने गोलभरा गाँव में देखा है। तुम्हारा नाम नांगसोम है न?”

नांगसोम पुजारी की बातें सुनते ही चौंककर घूम पड़ा और बोला- “चोटीवाले महात्मा तुम कौन हो? सिद्ध पुरुष जैसे लगते हो? मुझे इस जन्तु से बचा लो। मैं तुम्हारा



एहसान कभी नहीं भूलूंगा।” ये शब्द कहते नांगसोम पुजारी के चरणों पर गिर पड़ा।

पुजारी ने नांगसोमको उठाकर समझाया- “यह जलजन्तु नहीं है। दो सरों वाला भेरुण्ड है। पल भर में इसे मरवा डालता हूँ।” यह कहते उसने सवरगीध को आदेश दिया- “सवरगीध, उस पिशाचिनी के टुकड़े-टुकड़े कर दो।”

दूसरे ही क्षण सवरगीध ने तलवार से बिच्छू पर प्रहार किया। उसके दो टुकड़े हो गए। उसके खून से मकड़ी का जाला भीग गया। नांगसोम ने खून को देखकर काँपते हुए पुजारी के पैर पकड़े। तब बोला- “मैं खून की धारा में बहता जा रहा हूँ। तैरना



नहीं जानता। तुम सिद्ध व्यक्ति हो, मुझे बचाओ।”

शिथिलालय के पुजारी ने नांगसोम के सर पर हाथ फेरा और कहा- “तुम डरो मत। खून की धारा को मैं झरना बना देता हूँ। तुम उससे होकर भूगर्भ में स्थित शिथिलालय तक पहुंच जाओ।”

“सिद्ध गुरु की जो आज्ञा!” इन शब्दों के साथ नांगसोम तेजी के साथ आगे बढ़ा।

पुजारी ने अपने अनुचरों से कहा- “इसके भरोसे हमें अपने लक्ष्य पर पहुंचना है। फिर भी कह नहीं सकते कि कहाँ पर क्या है? इसका पागल मन शायद हमें शिथिलालय तक पहुंचा दे। मगर हमें सावधान रहना है

कि यह कहीं भाग न जाय।” इसके बाद पुजारी भी नांगसोम के पीछे चलने लगा।

नांगसोम पहाड़ी टीलो, झाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ा जा रहा था। बाकी लोग उसके पीछे नाना प्रकार की यातनाएँ भोगते चल रहे थे। उन्मत्त कैथे के जहर ने नांगसोम के दिमाग पर बड़ा असर डाल दिया था। उसे छोटे से छोटा प्राणी भी हाथी के बराबर दीखने लगा। ऐसे मौके पर वह चिल्ला पड़ता- “सिद्ध गुरु! तुम्हीं बचाओ।”

दुपहर तक सब लोग नांगसोम के पीछे एक ऊंचे पहाड़ पर पहुंचे। नीचे एक घाटी थी। उस घाटी में घने और ऊंचे बरगद के पेड़ थे।

नांगसोम ने घाटी की ओर देखा और बाल नोचते हुए कहा- “सिद्ध गुरुजी! शिथिलालय उसी घाटी में है। ओह, कितना सोना? कितने रत्न? लो, मंदिर पर सोने का कलश चमक रहा है!”

पुजारी ने घाटी में झांककर देखा। पर उसे कुछ दिखाई न दिया। लंबी लंबी जटाओंवाले बरगद के वृक्ष उसे दिखाई पड़े।

“यह तो पागल का प्रलाप है! इस कमबख्त ने हमें पहाड़ और जंगलों में घुमाकर परेशान कर दिया है। इसे घाटी में ढकेल दे तो छुट्टी मिल जाय।” शिथिलालय के पुजारी ने क्रोध में आकर कहा।

पुजारी की बातें सुनकर सवरगीध ने कहा- “गुरुदेव! आज्ञा दीजिये, मैं इस पागल को घाटी में ढकेल दूँ या टुकड़े टुकड़े करके फेंक दूँ?” ये शब्द कहते हुए उसने तलवार उठाई।

दूसरे क्षण वृच्छिक जाति के लोगों में कोलाहल पैदा हुआ। उन लोगों ने पत्थर की बनी कुल्हाड़ियाँ उठाकर कहा- “इभ्यु जाति के इस आदमी की कोई हानि नहीं होनी चाहिए। यह वृच्छिक माता का गणाचारी है। शायद उसके कहे मुताबिक इस घाटी में वृच्छिक माता का मंदिर हो! कौन जाने?”

पुजारी कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में सवरगीध हाथ हिलाते बोल पड़ा- “यह बात भी सच है, गुरुदेव! क्या मैं हवा में उड़कर घाटी में उतर जाऊँ?”

पुजारी ने सवरगीध को डाँट बतायी, तब कहा- “लगता है, तुमने ज्यादा पी ली है! इसलिए बकते हो! खबरदार! तुमको लंगूर बनाकर इन पेड़ों पर छोड़ करके चला जाऊंगा।”

“गुरुदेव, भगवान के लिए ऐसा न कीजिये। इस जंगल में पेड़ों पर जीना मुश्किल है...” सवरगीध ने कहा।

सवरगीध की बात पूरी भी न हो पायी थी कि शिथिलालय का पुजारी चौंककर गरज पड़ा- “लो, वह कमबरख्त शबर शिखिमुखी और उसका दल आ गया।”



शिखिमुखी पहाड़ पर खड़े होकर चिल्ला पड़ा- “नांगसोम को बाहर खींच लो।”

इसके बाद शिथिलालय के पुजारी को देख बोला- “दुष्ट! कितने दिन बाद हाथ लग रहे हो! भागने की कोशिश करोगे तो तुम्हारी पीठ में भाला या बाण जा चुभेगा।”

पुजारी सोच ही रहा था कि कैसे भाग जाय। तुरंत उसके दिमाग में कोई उपाय सूझ पड़ा। झट वह आगे कूद पड़ा। नांगसोम को अपने कंधे पर डाल पहाड़ी किनारे की शिलाओं के बीच भाग गया।

पुजारी का हाल अब ऐसा था कि मानों साँप के मुंह से बचकर शेर के मुंह में जा फँसा हो। उधर से जांगला लंगड़ाते आया

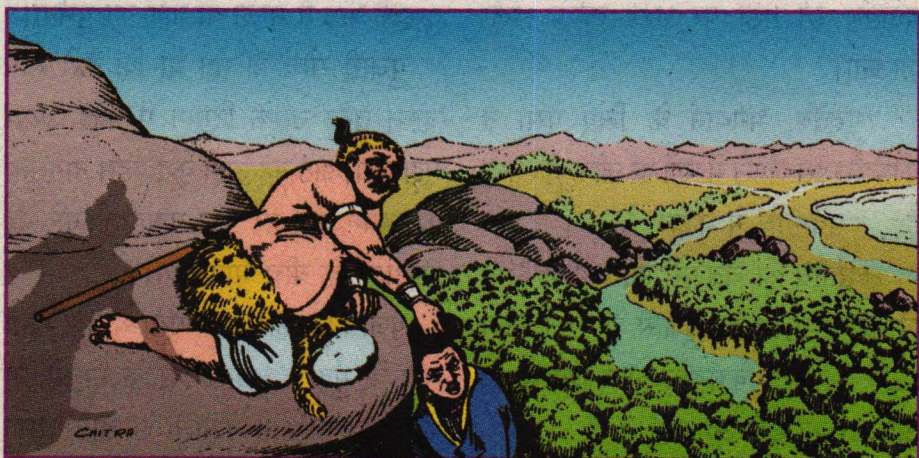
और गरजकर बोला, “दुष्ट, तुम जान बचाकर कहीं भाग नहीं सकते।” ये शब्द कहते जांगला पुजारी पर हमला कर बैठा।

पुजारी ने नांगसोम को कंधे से उतारा, कमर से कटार निकालकर जांगला की छाती पर भोंकना चाहा। लेकिन इस बीच जांगला पुजारी पर क्रोध पड़ा, जिससे वह कटार जांगला के कंधे में जा चुभा। कटार के वार की परवाह किये बिना जांगला ने पुजारी की गर्दन पकड़नी चाही। पर पुजारी अपना सर घुमाकर पहाड़ की ओर झुका जिससे पुजारी की चोटी जांगला के हाथ में आ गयी।

जांगला के घाव से खून बह रहा था। फिर भी वह पुजारी की चोटी को ढीला किये बिना उसे पहाड़ पर खींचने की कोशिश करने लगा। पुजारी इस डर से छटपटाने लगा कि कहीं वह घाटी में गिर न जाय।

उस समय शिखिमुखी दौड़कर वहाँ आ पहुँचा और बोला, “जांगला, तुम्हारी स्वामि-भक्ति प्रशंसनीय है। इस दुष्ट पुजारी को हम ऊपर खींच नहीं सकते। सवर नेता की पुत्री नागमल्ली ने पुजारी की चोटी माँगी है।” इन शब्दों के साथ शिखिमुखी ने तलवार से पुजारी की चोटी काट डाली। दूसरे ही पल में पुजारी चिल्लाते हुए गहरी घाटी में जा गिरा।

इस बीच में किसी ने इस बात का ख्याल नहीं किया कि नांगसोम का क्या हाल है। पुजारी के उतारने पर वह एकटक विशाल बरगदों की ओर देखता रहा। इतने में उसे शिथिलालय के पुजारी की कराह सुनायी दी। इस पर नांगसोम चिल्ला उठा, “देखो, देखो, वही शिथिलालय है!” तब वह उस घाटी के बरगद के पेड़ों की ओर दौड़ पड़ा। (और है)

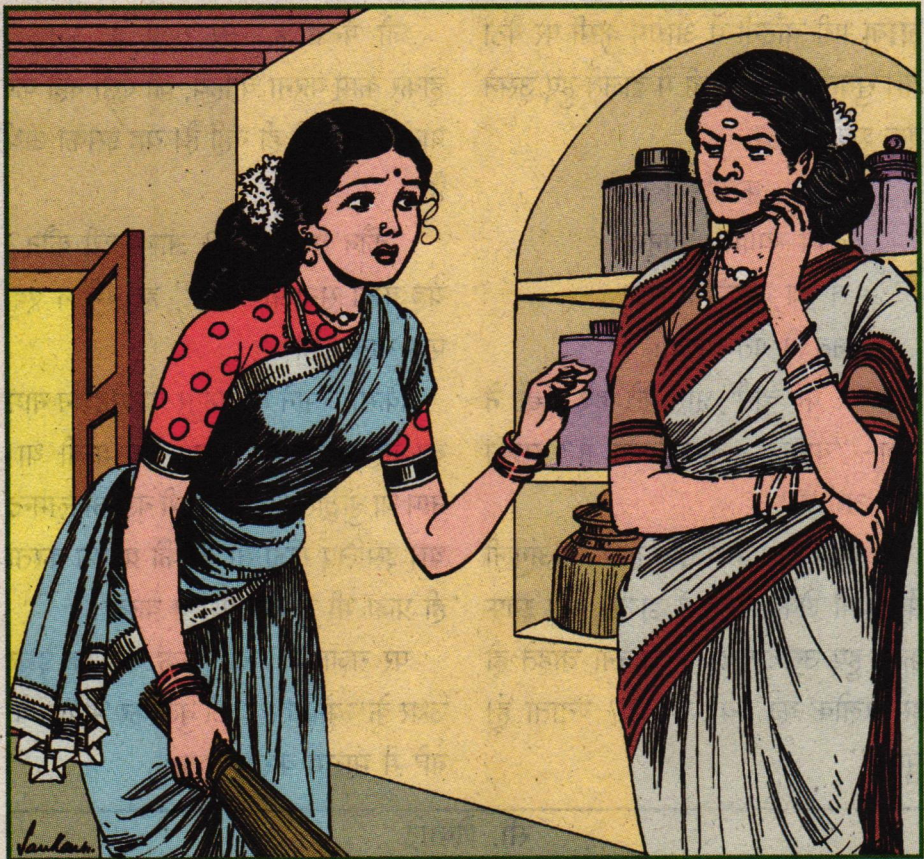


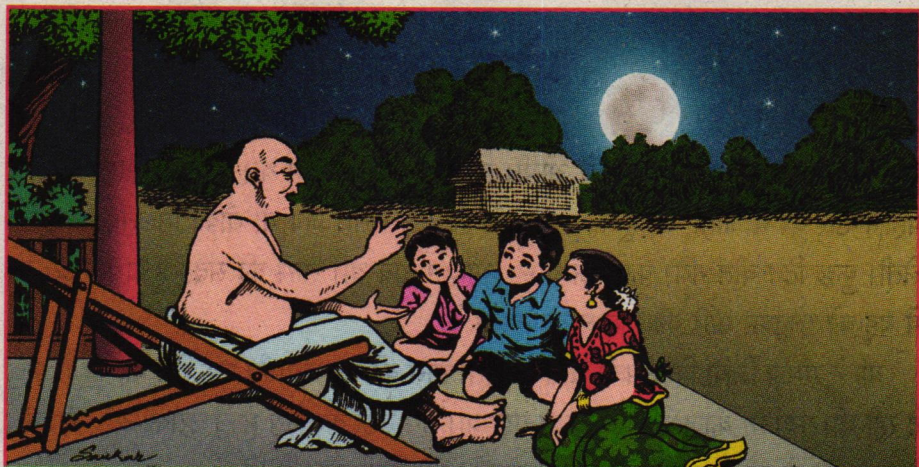
भोली बहू

एक नव वधू पहली बार ससुराल में आयी। काजू से उसे बड़ा प्रेम था। सास की आँख बचाकर वह भण्डार घर में जाती, काजू का टुकड़ा मुँह में डाल लेती। जब भी मौका मिलता, काजू खा लेती। कुछ दिन बीत गये। काजू आधे से ज्यादा गायब था। सास को संदेह हुआ कि इस घर में बहू को छोड़कर और कौन काजू खानेवाला है।

बहू ने समझ लिया कि उसकी चोरी का पता सास को लग गया है। एक दिन वह घर में झाड़ू दे रही थी। फर्श पर काजू का एक टुकड़ा पड़ा था। उसे उठा कर हाथ में ले उसकी ओर आश्चर्य के साथ देखते बहू ने सास से पूछा, “सासजी! यह कैसी चीज़ है?”

“ओह, बेचारी! बहू ने तो काजू का चेहरा तक नहीं देखा है। मैंने नाहक उस पर शक किया।” यह सोचते सास पछताने लगी।





बाबा की कहानी

बाबा भरी चाँदनी में आराम कुर्सी पर बैठे थे। सुंघनी बाँयी हथेली में डालते हुए उसने एक श्लोक पढ़ा :

“मन्त्रः कार्यानुंगो येषां
कार्यं स्वामि हितानुगं
त एव मन्त्रिणो राज्ञां
नतु ये गत पल्लवाः”

बाबा के चारों ओर बैठे हुए बच्चों ने पूछा- “बाबा यह क्या श्लोक है? इसका क्या अर्थ है?”

बाबा ने आराम से दायें हाथ की अंगुली में सुंघनी लेकर नाक में डाली। हाथ साफ करते हुए उसने पूछा- “जानना चाहते हो इस श्लोक का क्या अर्थ है? बताता हूँ सुनो।”

जो मन्त्री है, उसे राजा के अनुकूल होकर काम करना चाहिये, जो ऐसा नहीं कर पाता वह मन्त्री ही नहीं है। यह इसका अर्थ है।

“कौन राजा बाबा? और मन्त्री कौन? यह कथा सुनाओ बाबा।” हर बच्चे ने एक एक बात पूछी।

किसी जमाने में चक्रपुर का सुदर्शन नाम का महाराजा था। उसका एक मन्त्री था। नाम था बुद्धिसिन्धु। यह मन्त्री बड़ा अक्लमन्द था। इसलिए राजा तो उसकी प्रशंसा करता ही प्रजा भी उसकी प्रशंसा करती।

पर राजा को एक सनक थी। वह इधर उधर के ज्योतिषियों को बुलाकर भविष्य के बारे में मालूम करता रहता।

सी. शेषाद्री

एक ज्योतिषी राजा के पास आया। उसने अपनी बुद्धिमत्ता और चातुर्य के बारे में खूब बखाना।

राजा को भी वह पसन्द आया। उसने उस ज्योतिषी को अपनी कुण्डली दिखाकर पूछा- “क्या बता सकते हो अभी मेरी आयु कितनी और है?”

इस पर ज्योतिषी ने कहा- “महाराज, आज से छः मास बाद आपकी आयु समाप्त हो जायेगी। मैं कहने में कुछ छिपाता नहीं हूँ।” यह सुन राजा चिन्ता के कारण व्यथित हो उठा। उसने खान पान छोड़ दिया। पलंग पकड़ी। “अरे छः महीने में मेरी जिन्दगी खतम हो जायेगी।” इसी फ़िक्र में वह सूखता गया।

मन्त्री को, जो यह सब देख रहा था, ज्योतिषी को देखकर गुस्सा आया। उसने राजा से कहा- “महाराज! आप ज्योतिषियों

पर विश्वास न कीजिये। वशिष्ठ जैसे ऋषि ने राम के पट्टाभिषेक के लिये मुहूर्त निश्चित किया। पर क्या हुआ? उसी मुहूर्त में राम वनवास तो गये ही, उनको अपनी पत्नी भी खोनी पड़ी। ये तो य़ूही कहते हैं।”

परन्तु राजा की बीमारी न गई। तब मालूम है मन्त्री ने क्या किया? ज्योतिषी को बुलाकर उसने कहा- “तुमने राजा की आयु तो बताई, तुम्हारा अपनी आयु के बारे में क्या कहना है?”

“हुज़ूर! मैं अभी चालीस साल और जीऊंगा।” ज्योतिषी ने कहा।

“हूँ ऐसी बात है?” मन्त्री ने तुरन्त उस ज्योतिषी को मरण दण्ड दिया और उसका सिर कटवा दिया। इससे राजा की बीमारी जाती रही। उसके साथ ज्योतिष की उसकी सनक भी जाती रही। वह सुखपूर्वक राज्य करने लगा।



खोने को कुछ नहीं

किसी देश में एक गरीब आदमी रहता था। किसी और देश में आजीविका कमाने की आशा में, वह पाँच सौ गाड़ियों के एक कारवाँ के साथ चल पड़ा। एक रात, वह कारवाँ एक जंगल में रुका। रात में सभी थककर गहरी नींद सो गए। केवल वह गरीब आदमी उठकर खेमे के अन्दर-बाहर आता जाता रहा।

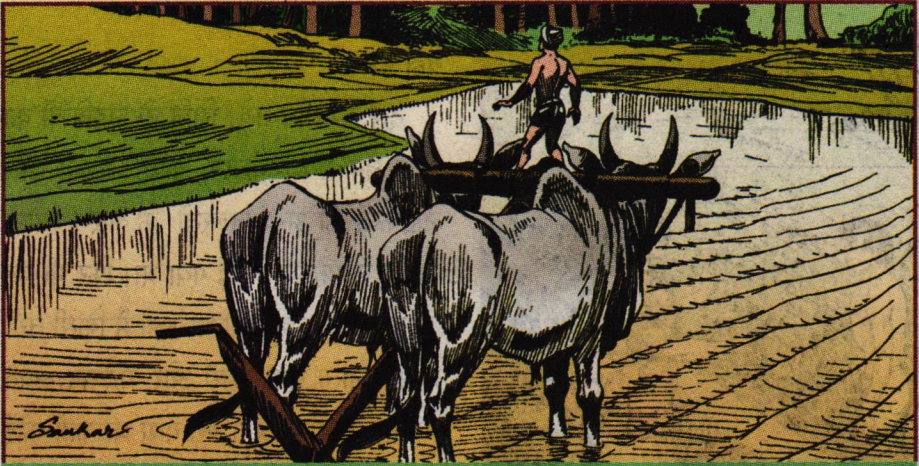
रात के अन्धेरे में कुछ डाकू खेमे को लूटने के इरादे से वहाँ घुसे। लेकिन उस गरीब आदमी को जागता देखकर वे वहाँ से चलते बने। रात में उन्होंने दो बार और प्रयास किया लेकिन वह आदमी जाग रहा था।

अंत में, सवेरा होने से ठीक पहले वे फिर वहाँ आए, लेकिन वह व्यक्ति अब भी इधर-उधर टहल रहा था। अपनी लाठियाँ और पत्थर आदि फेंककर वे वहाँ से यह चिल्लाते हुए चले गए, “इस आदमी ने तुम्हें हमसे बचा लिया! इसे अच्छे से रखना।”

इस पर अन्य यात्रियों की नींद खुल गई। पूरा माजरा समझकर और वहाँ बहुत सी लाठियाँ और पत्थर पड़े देखकर उन्होंने गरीब आदमी से पूछा, “क्या तुम्हें डाकुओं का डर नहीं लगा?”

“मैं क्यों डरूँ?” उस आदमी ने पूछा, “मेरे पास खोने को क्या है?”





जीवन में सन्तोष

एक बार नगरी में सिबि और कश्यप नाम के दो मित्र रहते थे। वे हमउम्र ही थे।

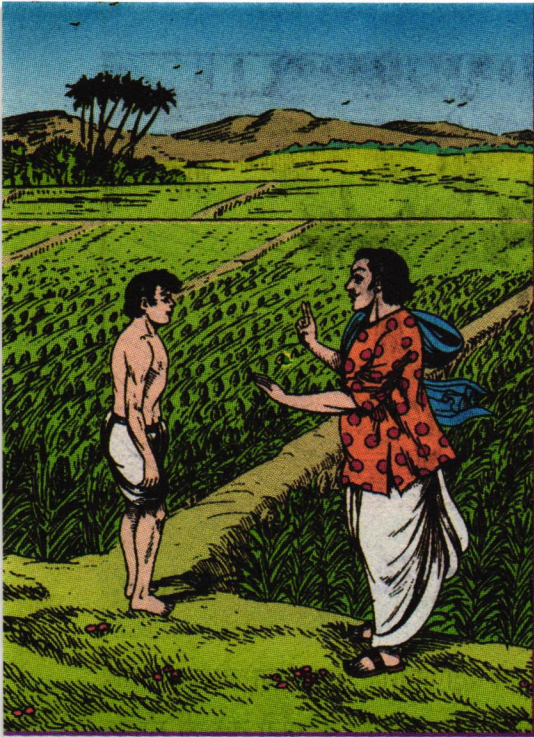
सिबि एक किसान का लड़का था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी उसने अपने गाँव में खेती करना नहीं छोड़ा। ज़मीन से प्राप्त अपनी थोड़ी सी कमाई से वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था।

कश्यप एक व्यापारी परिवार का था। अपने पिता के व्यवसाय पर ध्यान देकर उसने व्यापार के तरीके सीख लिये। व्यापार में अपने प्रतिस्पर्धियों से एक कदम आगे की वह सोचने लगा। वह सफलता पूर्वक भविष्यवाणी कर देता कि उनका अगला कदम कौन सा होगा और उनसे अधिक दाँव-पेंच से काम लेकर, उनसे आगे छलाँग लगाकर अपने व्यापार को

आगे बढ़ा लेता। उसका धंधा जो उसके गाँव और कुछ आसपास के गाँवों तक ही सीमित था, अब बढ़ते-बढ़ते राजधानीमें भी पहुँच गया। उसका धंधा दिन दूनी, रात चौगुनी गति से फैलने लगा।

सिबि और कश्यप दोनों ने अपने पुश्तैनी धंधे को ही अपनाया। ये पूछा जाने पर कि उन्होंने अपने पारिवारिक काम को ही क्यों अपनाया, कश्यप और सिबि कहते कि “हम अपने परिवार के व्यवसाय का सम्मान करते हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हम अपने पारिवारिक धंधे को सफलता-पूर्वक आगे बढ़ायेंगे।”

कश्यप और सिबि अक्सर मिलते रहते थे और एक दूसरे की कुशलता पूछते रहते थे। सिबि हमेशा कहा करता था कि उसे और किसी



चीज़ की आवश्यकता महसूस नहीं होती और जो कुछ भी उसके पास है वह उससे सन्तुष्ट है।

कश्यप उसे सलाह देता, “प्यारे दोस्त, तुम्हारे पास कुछ एकड़ ज़मीन ही है। तुम खेती का एक हिस्सा ज़मीन के मालिक को देने का सौदा करके कुछ अधिक ज़मीन क्यों नहीं जोत लेते हो? प्रारंभिक निवेश के लिये मैं तुम्हें कुछ कर्ज़ दे सकता हूँ। यदि तुम्हें कभी भी पैसे की ज़रूरत हो तो मुझसे माँगने में मत हिचकिचाना।”

सिबि उत्तर देता, “अपने निजी खेत में खेती करके ही मैं आराम से रह रहा हूँ। मैं लालची नहीं हूँ। इसलिए समझौते के तहत कुछ और ज़मीन पर खेती करने का मेरा कोई इरादा

नहीं है।”

दस वर्ष बीत गये। सिबि दो लड़कियों का पिता बन गया। भोजन, कपड़े, शिक्षा और लड़कियों की अन्य ज़रूरतों के कारण लगता था कि उसका खर्च बढ़ गया था। फिर भी वह जो कुछ हमेशा कमाता था उसी में किसी तरह काम चलाता रहा। दूसरी ओर, कश्यप अपने व्यापार में इतना आगे बढ़ गया था जहाँ कोई दूसरा उसकी बराबरी नहीं कर सकता था। उसने अपना व्यापार काफ़ी फैला लिया था और समाज में उसका नाम था।

एक बार कश्यप अपने बचपन के किसी मित्र के घर उत्सव में भाग लेने के लिए नगरी आया। जश्न में हिस्सा लेने के बाद वह सिबि से मिलने उसके घर पहुँचा। उसने पूछा कि उनका जीवन कैसा चल रहा है।

कश्यप ने गौर किया कि सिबि के रहन-सहन का स्तर ज्यादा सुधरा नहीं है। उसका घर, पशु-धन और खेत ठीक वैसे ही थे जैसे कि उस समय थे, जब वे बच्चे थे। उसकी सम्पत्ति में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई थी। इससे कश्यप को चिन्ता हुई।

कश्यप ने अपने मित्र से पूछा- “क्या तुम और तुम्हारे बाल-बच्चे ठीक तरह खा-पी रहे हैं? क्या तुम उन्हें अच्छी शिक्षा दिला पा रहे हो?” सिबि ने कहा, “हमारे पास जो कुछ भी है हम उससे सन्तुष्ट हैं। जितना खर्च मैं कर

सकता हूँ वैसी शिक्षा मैं अपने बच्चों को दिलवा रहा हूँ और मैं खुश हूँ।”

यह सुनकर कश्यप जोर से हँसा। उसने कहा, “तुमने बड़ी चतुराई से जवाब दिया, है न?” सिबि ने पूछा, “इसमें चतुराई की क्या बात है? जैसी स्थिति है वैसी ही मैं तुम्हें बता रहा हूँ।”

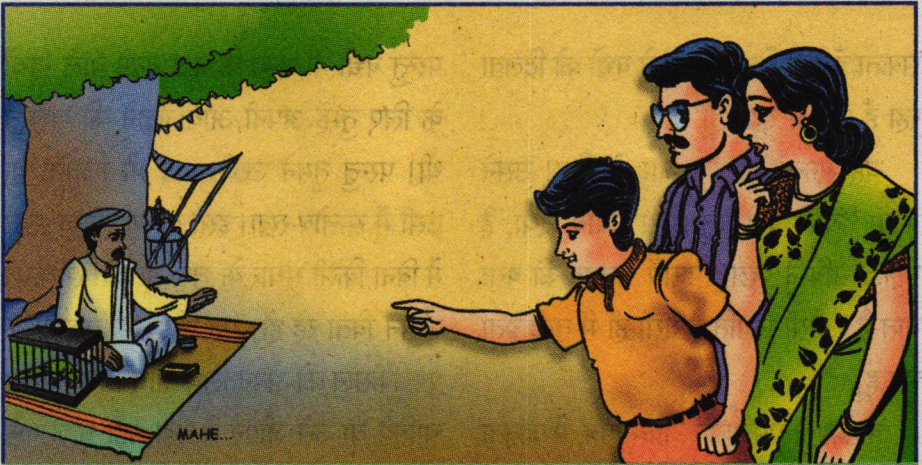
कश्यप ने समझाया, “प्रिय मित्र, मैं जानता हूँ तुम बचपन से ही कितने बुद्धिमान और सज्जन हो। शुरू से ही तुमने जो कुछ है उसी में सन्तुष्ट रहने की आदत डाली है। यही तुम्हारी एकमात्र भूल है। तुमने और मैंने अपना जीवन साथ साथ ही शुरू किया। लालची होना या बहुत अधिक की चाह रखना गलत है। परन्तु अपनी सम्पत्ति को बढ़ाना या जीवन में बड़ी बड़ी चीजें प्राप्त करना गलत नहीं।

जितनी सम्पत्ति तुम्हारे पास थी वह तुम और तुम्हारी पत्नी के गुज़ारे के लिये काफी थी।

परन्तु बच्चों के जन्म के बाद बढ़ने वाले खर्चों के लिए तुम्हें अपनी आय बढ़ाने की जरूरत थी। परन्तु तुमने उसके बाद भी जितना था उसी में सन्तोष रखा। इसी कारण जीवन-स्तर में बिना किसी सुधार के तुम अत्यन्त साधारण जीवन बिता रहे हो। यह कोई नहीं कहता कि एक किसान को अपने लिये अधिक नहीं रखना चाहिये या उसे जीवन में बड़ी बड़ी चीजें पाने की महत्वाकांक्षा नहीं पालना चाहिये। जब व्यक्ति जो कुछ अपने पास है उसी में सन्तुष्ट रहता है तो उन्नति का रास्ता बन्द हो जाता है। इसलिए मनुष्य को सही तरीके का पालन करते हुए मेहनत करना चाहिये जिससे वह उन्नति कर सके। तब वह अच्छा रहन-सहन प्राप्त कर सकता है।”

मित्र के दृष्टिकोण से प्रेरित सिबि ने अपनी खेती को बढ़ाने के लिए अपने मित्र की मदद लेने का निश्चय किया।





पिंजडे का तोता

रामचंद्र कृष्णापुर के जमींदार के दीवान में काम करता था। वह अपनी पत्नी जानकी और दोनों बच्चों के साथ सुखी जीवन बिता रहा था। बेटा मुरली ग्यारह साल का था तो बेटी लक्ष्मी दस साल की थी। रामचंद्र अपने बच्चों को बहुत चाहता था। काम से लौटते समय वह अवश्य ही उनके खाने के लिए मिठाइयाँ या गुड़ियाँ ले आया करता था।

एक दिन रामचंद्र परिवार सहित ससुराल गया। वहाँ हर साल एक बड़ा त्योहार मनाया जाता था, जिसमें भाग लेने वह वहाँ जाया करता था। मार्ग-मध्य में उन्होंने आम के एक बगीचे में आराम किया। तब उस बगीचे के पक्षी-समूह के कलरवों ने बच्चों को बहुत ही मुग्ध किया। उनकी चहचहाटें उन्हें बेहद पसंद आयीं। जब वे एक हाट में गये, तब मुरली ने

एक तोता और ज्योतिषी को देखा। ज्योतिषी के कहने मात्र से वह तोता पिंजडे से बाहर आता था और एक पत्र उसके हाथ में थमा देता था। फिर उसके दिये बीजों को लेकर पिंजडे के अंदर चुपचाप चला जाता था। यह दृश्य मुरली को बहुत पसंद आया। उसने पिता से एक ऐसे ही तोते को खरीदने के लिए हठ किया।

“देखो, तोता स्वतंत्र पक्षी है। ऐसे तोते को पिंजडे में बंद रखना गलत बात है। उसकी स्वतंत्रता को छीनना ठीक नहीं,” पिता ने समझाने की बहुत कोशिश की। पर मुरली टस से मस न हुआ। घर लौटने के बाद रामचंद्र एक तोता घर ले आया। उसे एक सुंदर पिंजडे में बंद रखा गया।

एक दिन अचानक मुरली बीमार पड़ गया।

एस. अरुल बालामुरुगन

तीन दिनों तक वह पलंग पर ही लेटा रहा। वैद्य ने आकर उसकी जांच भी की। वैद्यों ने उसकी जांच के बाद कहा, “यह एक प्रकार का विष ज्वर है। दवाइयाँ लेती रहनी होंगी और दो हफ्तों तक पलंग से उतरना तक नहीं चाहिये।”

इस वजह से मुरली दो हफ्तों तक पलंग पर ही लेटा रहा। दवाएँ खाते रहना, पलंग से न उतरना उसके लिए बिल्कुल मुश्किल का काम हो गया। उसे लगा, मानों उसके हाथ-पांव बांध दिये गये हों। बुखार थोड़ा-बहुत कम तो हो गया, पर उसके माता-पिता ने उसे बाहर जाने नहीं दिया। खिड़की से वह उन बच्चों को देखता रहता था, जो आराम से खेलते-रहते थे। वह उन्हीं की तरह खेलना चाहता था, पर लाचार था। अपनी लाचारी पर उसकी आँखों में आँसू उमड़ आते थे।

मुरली साथ ही यह भी देखता रहा कि पिंजड़े में बंद तोता उसकी माता के दिये दाने खा रहा है और अंदर ही इधर-उधर घूम-फिर

रहा है। उसे वह खुश दिखायी नहीं पड़ा। उस विवश तोते को देखकर मुरली को दुख होता था।

अब मुरली की तंदुरुस्ती बिल्कुल ठीक हो गयी। वैद्यों ने कह दिया कि अब वह बाहर जाकर घूम ने-फिरने के लायक हो गया। माँ ने उस दिन गरम पानी से नहलवाया और कहा, “अब जाओ और दोस्तों के साथ खेलो।”

मुरली पिंजड़े को लेकर अपने कमरे में गया और पिंजड़े के दरवाजे को खोलते हुए उसने कहा, “पंद्रह दिनों तक बिना हिले-डुले पलंग पर लेटा रहा। लगा कि वह एक जेल है। अब मैं जान गया कि यों रहना कितना मुश्किल काम है। तुम्हें पिंजड़े में कैद करके तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया। अब जाओ, आराम से उड़ो। तुम्हें पूरी स्वतंत्रता है।” कहते हुए उसने तोते को पिंजड़े से निकाला और छोड़ दिया।

तोता फुर्र-से उड़ गया। मुरली का चेहरा आनंद से खिल उठा।



अद्भुत विजय

शिव दुर्ग के राजा ने समय काटने के विचार से अपने राज्य की पश्चिमी दिशा में महेन्द्र दुर्ग पर हमला कर दिया। ठीक इसी समय शिव दुर्ग की पूर्वी दिशा में स्थित विजय दुर्ग के राजा ने शिव दुर्ग पर आक्रमण किया।

विजय दुर्ग के राजा के आक्रमण का समाचार सुनते ही शिव दुर्ग में हलचल मच गयी। उस वक्त शिव दुर्ग की रक्षा करने के लिए फौज न थी। एक वृद्ध भूतपूर्व सेनापति और तीन-चार योद्धा मात्र दुर्ग में थे। भूतपूर्व सेनापति शक्तिसिंह बड़ा पराक्रमी था। शक्तिसिंह ने एक उपाय सोचकर दुर्ग के लोगों को आदेश दिया, “तुम लोग दुर्ग के द्वार खोल दो। मुखद्वार पर तोरण सजाओ। गाजे-बाजे का इंतज़ाम करो।” इसके बाद शक्तिसिंह ने अच्छी पोशाकें पहन लीं! शाल ओढ़कर द्वार के पास खड़ा हो गया। उसकी बगल में तीन-चार वृद्ध योद्धा भी खड़े हो गये।

दुश्मन की सेनाओं के निकट आते ही शक्तिसिंह चिल्ला उठा, “विजय दुर्ग के महाराजा की जय हो। महाराजा का स्वागत है।” उसके साथ बाकी लोग भी चिल्ला पड़े।

विजय दुर्ग के महाराजा ने अपने रथ को रोक लिया। उसके पीछे उसकी सेनाएँ भी रुक गयीं, “अबे, हम जानते हैं कि तुम बड़े ही धूर्त और चलाक हो। दुर्ग में हमारा स्वागत करके भीतर की सेनाओं को हमें बलि देना चाहते हो? तुम्हारी चाल हमारे सामने नहीं चलने की है।” यह कहकर राजा अपनी सेना के साथ लौट पड़ा।



मैं क्या बन सकता हूँ?

इस माह हम एक अलग ही व्यवसाय का अवलोकन करने जा रहे हैं जिसे कहते हैं विधि वैज्ञानिक या फ़ॉरेंसिक साइंटिस्ट।

“विधि विज्ञान या फ़ॉरेंसिक साइंस, विविध वैज्ञानिक तरीकों और सिद्धान्तों को लागू करने का ढंग है जिससे आपराधिक और दीवानी गतिविधियों का अन्वेषण किया जा सके और जो विधि तन्त्र के कार्य में सहायक हो।”



“अपराध-स्थल से एकत्रित किए हुए नमूनों का विधि वैज्ञानिकों द्वारा अपराध प्रयोगशालाओं में विश्लेषण किया जाता है और साक्ष्य के रूप में न्यायालय में प्रस्तुत करने लायक बनाया जाता है। शारीरिक साक्ष्यों में शरीर में पाया जाने वाला द्रव जैसे खून और लार, बाल, जूतों के निशान, उंगलियों और पैरों के निशान आदि आते हैं। विधि वैज्ञानिक बनने के लिए वांछनीय योग्यताओं में विश्लेषणात्मक विचार, समूह में

काम करने की योग्यता, काल्पनिकता, समानान्तर सोच आदि कई बातें आती हैं।

विधि विज्ञान या फ़ॉरेंसिक साइंस में कई शाखाएँ हैं। फ़ॉरेंसिक आर्कियोलॉजी, फ़ॉरेंसिक बायोलॉजी, फ़ॉरेंसिक इकॉनॉमिक्स, फ़ॉरेंसिक इंजीनियरिंग, फ़ॉरेंसिक एपिस्टेमोलॉजी, फ़ॉरेंसिक लिग्विस्टिक्स, फ़ॉरेंसिक सायकॉलॉजी, फ़ॉरेंसिक सीरोलॉजी, फ़ॉरेंसिक एन्थ्रॉपॉलॉजी, फ़ॉरेंसिक कंप्यूटिंग या डिजिटल फ़ॉरेंसिक्स।

फ़ॉरेंसिक साइंस में स्नातोत्तर करने के लिये पहले बीए या बीएससी करना होता है, जो प्रथम श्रेणी में होना बेहतर है। शवों का पोस्ट-मॉर्टम करने के लिये एमबीबीएस की डिग्री के साथ ही फ़ॉरेंसिक साइंस में विशेषज्ञता भी होनी चाहिये। फ़ॉरेंसिक साइंस में ६०% अंक अर्जित करने वाले स्नातक शोध भी कर सकते हैं।

इन विद्यार्थियों के लिये रोजगार पुलिस, कानून का पालन कराने वाली संस्थाओं, वैधानिक प्रणालियों और सरकारी व निजी गुप्तचर संस्थाओं में उपलब्ध हैं। फ़ॉरेंसिक साइंस की फ़ॉरेंसिक सीरोलॉजी, फ़ॉरेंसिक एन्थ्रॉपॉलॉजी व फ़ॉरेंसिक आर्कियोलॉजी जैसी शाखाओं में विशेषज्ञता उम्मीदवार को उनके अपने क्षेत्र में नौकरी दिला सकती है।

- साई

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४३

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को ₹२५०/- रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

***यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को ₹५०/- की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।
२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।
३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४३** लिखो।
४. तुम्हारे उत्तर ३० सितम्बर तक मिल जाने चाहिये।
५. सही उत्तर नवम्बर २०१२ के अंक में प्रकाशित होंगे।

आज़ादी की लड़ाई

१. आज़ादी की लड़ाई में भारतीयों के मुखपत्र के रूप में काम करने के लिये लोकमान्य तिलक ने कौन सा अखबार शुरू किया था?
२. महात्मा गाँधी ने अगस्त १९४२ में कौन सा प्रसिद्ध आन्दोलन आरम्भ किया था?
३. किस क्रान्तिकारी ने १९१५ में बालासोर में पुलिस के साथ मुठभेड़ करते हुए अपने प्राण न्योछावर किये?
४. भारतीय राष्ट्रीय सेना की स्थापना कब और कहाँ हुई थी?
५. लोकसभ के पहले स्पीकर कौन थे?
६. भारत के राष्ट्रपति को पद और गोपनीयता की शपथ कौन दिलाता है?
७. भारत की आज़ादी की लड़ाई के समय भगतसिंह ने कौन सा नारा बनाया था?
८. पुलिस की क्रूरता का शिकार होने के समय लाला लाजपतराय किस बात के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे?
९. ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपना पहला कारखाना कहाँ लगाया था?
१०. भारतीयों में देशभक्ति का जज़्बा जगाने के लिये शिवाजी महोत्सव किसने शुरू किये?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४०, मई २०१२ के उत्तर:

१. ब्रह्मगुप्त, भारतीय गणितज्ञ, २. सुश्रुत, ३. आर्यभट्ट, ४. जगदीशचन्द्र बोस, ५. चतुरंग, ६. तक्षशिला, ७. बोधयान

मई १२ की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का कोई विजेता नहीं है।



चुटकुले

जोजफ़ : मैं देख रहा हूँ तुम ५००० रुपये का चेक लिख रहे हो।

राहुल : हाँ, मैं इसे मेरी बहन को जन्मदिन के उपहार के रूप में भेज रहा हूँ।

जोजफ़ : लेकिन तुमने इसपर दस्तखत तो किये ही नहीं।

राहुल : मैं नहीं चाहता कि उसे पता चले ये किसने भेजा है।



ग्राहक : ये स्ट्रॉबेरी ऐसी लगती हैं जैसे एक सप्ताह पुरानी हों, फिर भी तुम्हारा बोर्ड कहता है 'ताज़ी तोड़ी हुई।'

सब्जीवाला : जी हाँ, ये बोर्ड एकदम ताज़ा है। मैंने इसे अभी लिखा है।

सार्जेंट (नए रंगरूट से): सेना में भर्ती होने से पहले तुम क्या थे?

नया रंगरूट : खुश था सार्जेंट।



एक आदमी नई कार खरीदने के बाद वापस कार डीलर के पास आया।

“मेरा ख्याल है तुमने मुझे कार के साथ गारंटी दी थी,” वह बोला।

“सही है श्रीमान्,” डीलर ने कहा। “कुछ भी टूटा-फूटा हुआ हम बदल देंगे।”

“ठीक है, मुझे गैरेज के लिये नया दरवाज़ा चाहिये।”

नाराज बॉस चपरासी से : आज फिर तुम देर से आए हो।

चपरासी : मैं देर तक सोता रहा, श्रीमान्।

बॉस : यानि तुम घर में भी सो लेते हो?



यात्री : क्या यही मेरी ट्रेन है?

टिकट चेकर : नहीं ये रेल्वे की है।

यात्री : मज़ाक मत करो। क्या इसे लेकर मैं केरल जा सकूँगा?

टिकट चेकर : नहीं श्रीमान्, यह बहुत भारी है।



चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्द्रामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।



English	He is a famous director	There was nothing new
Hindi	वह एक प्रख्यात निर्देशक है	कुछ भी नया नहीं था।
Telugu	అతడు ప్రసిద్ధ దర్శకుడు. అతడు ప్రసిద్ధ దర్శకుడు।	దానిలో కొత్త విషయం లేదు. దానిలో కొత్త విషయం లేదు।
Tamil	அவர் ஒரு பிரபல இயக்குனர். अवर ओर प्रबल इयकुनर।	அதில் புதிதாக ஒன்றியில்லை. अधिल पुधियाक ओनरुमिल्लाई।
Bengali	তিনি একজন বিখ্যাত নির্দেশক। तिनि एकजोन बिख्यातो निर्देशक।	সেখানে নতুন কিছুই ছিল না। सेखाने नोतुन किचुई चिलो ना।
Marathi	तो खूप प्रसिद्ध दिग्दर्शक आहे. तो खुप प्रसिद्ध दिग्दर्शक आहे।	त्यात काही नवीन नाही. तत्यात कहि नविन नहि।
Kannada	ಅವರು ಪ್ರಸಿದ್ಧ ನಿರ್ದೇಶಕರು अवर ख्यात निर्देशकर।	ಅಲ್ಲಿನೂ ಹೊಸತು ಇರಲಿಲ್ಲ अल्लेनु होतसु इरलिल्ला।
Odia	ସେ ଜଣେ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ। से जणे प्रसिद्ध निर्देशका।	ସେଠାରେ କିଛି ନୂଆ କଥା ନଥିଲା। सेठेरे खिचि नूना कथा नथिला।
Gujarati	તે એક પ્રખ્યાત નિર્દેશક છે. ते एक प्रख्यात निर्देशक छे।	ત્યાં કંઈ નવું નહોતું. त्यां कई नवुं नहोतुं ।
Assamese	তেওঁ এগৰাকী বিখ্যাত নিৰ্দেশক। तेओ इगोरकि बिख्यात निर्देशक।	ইয়াত এটো নতুন নাই। एयत एहु नतुन नाई।
Malayalam	അയാൾ ഒരു പ്രസിദ്ധ സംവിധായകനാണ്. अयाल ओर प्रसिद्ध समविध्याकननु।	പുതിയതായി ഒന്നുമില്ലായിരുന്നു. पुथुययि ओनुमिल्लियिरुनु।
Santali	ଏହା ଏকজন বিখ্যাত নির্দেশক। उनि नुतुमन उडुगिज कनय।	ଏখানে নতুন কিছুই ছিল না। ओन्डे छेड होन नव बंग तेहन्या।
Sanskrit	सः सुप्रसिद्धः दिग्दर्शकः अस्ति। सहः सुप्रसिद्ध दिग्दर्शकः अस्ति।	तत्र किमपि नूतनं नास्ति। तत्र किमपि नूतनम् नास्ति।



English	It was very boring	This is my favourite actor
Hindi	वह बहुत उबाऊ था।	यह मेरा प्रिय अभिनेता है।
Telugu	ఇది చాలా విసుగెట్టించింది. ఇది చాలా విసుగెట్టించింది.	ఇతడు నా అభిమాన నటుడు. ఇతడు నా అభిమాన నటుడు.
Tamil	அது அலுப்பாக இருந்தது. அது அலுப்பாக இருந்தது.	எனக்குப் பிடித்த நடிகர் இவர். எனக்கு பிடித்த நடிகர் இவர்.
Bengali	সেটা খুব বিরক্তিকর ছিল। সেটা খুব বিরক্তিকর ছিল।	ইনি আমার প্রিয় অভিনেতা। ইনি আমার প্রিয় অভিনেতা।
Marathi	ते खूप कंटाळावाण होतं. ते खूप कंटाळावाण होता।	हा माझा खूप आवडता अभिनेता आहे. हा माझा खूप आवडता अभिनेता आहे।
Kannada	ಅದು ತುಂಬಾ ಬೇರೂರಿನ ಅಗಿತ್ತು. ಅದು ತುಂಬಾ ಬೇರೂರಿನ ಅಗಿತ್ತು.	ಇವರು ನನ್ನ ನೆಚ್ಚಿನ ನಟ. ಇವರು ನನ್ನ ನೆಚ್ಚಿನ ನಟ.
Odia	ଏହା ଭାରି ବିରକ୍ତିକର ଥିଲା। ଏହା ଭାରି ବିରକ୍ତିକର ଥିଲା।	ସେ ମୋର ପ୍ରିୟ ଅଭିନେତା। ସେ ମୋର ପ୍ରିୟ ଅଭିନେତା।
Gujarati	તે ખૂબ કંટાળાજનક હતું. તે ખૂબ કંટાળાજનક હતું.	આ મારો મનપસંદ અભિનેતા છે. આ મારો મનપસંદ અભિનેતા છે.
Assamese	ই বৰ আশনি মগা আছিল। এ বৰ আমোনি লোগা আসিল।	এয়া মোৰ প্ৰিয় অভিনেতা ইয়ইয়া মূৰ প্ৰিয়ো অভিনেতা।
Malayalam	അത് വളരെ മടുപ്പുള്ളവായെന്നായിരുന്നു. ആയു വലരെ മടുപ്പുലവകുചയീരുന്ന.	ഇതാണ് എന്റെ പ്രിയപ്പെട്ട നടൻ. ഇതനു എന്തെ പ്രിയപ്പെട്ട നടന.
Santali	ଝରଝର ଶବ୍ଦଟି ବେକାର ଥିଲା କି. नोवा आदि बेकार तेहन कन।	ଝରଝର ଶବ୍ଦଟି ବେକାର ଥିଲା କି. नुय एकतर अदिन्ज कुसि अय।
Sanskrit	अतीव नीरसम् आसीत् आीव नीरसम् आसीत।	एषः मम प्रियः अभिनेता। एषः मम प्रियः अभिनेता।

हमारा राष्ट्र गान

मूल बँगला गीत जन गन मन को कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सन् १९११ में लिखा था और तत्त्व बोध प्रकाशिका में छपा था। सन् १९१९ में एक आयरिश कवि, बसन्त थियासोफिकल कॉलेज के प्रिन्सिपल, जेम्स एच, कज़िन्स के निमन्त्रण पर कवि आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के मदनापल्ले की यात्रा पर गये थे। फरवरी की एक शाम, डॉ. कज़िन्स, उनकी पत्नी माग्रेट और कुछ विद्यार्थियों ने कवि को बंगाली गीत गाने के लिये तैयार किया। जब गीत 'जय हे, जय हे' इस पद पर पहुंचा तो सभी लोग उत्साह से टैगोर के साथ गाने लगे। मदनापल्ले में रहते हुए टैगोर ने गीत को अंग्रेज़ी में ढाला।



पन्द्रह अगस्त १९४७ को जब पहली बार प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज लहराया तब श्रीमती कज़िन्स की बनायी हुई धुन पर सिख रेजीमेन्ट ने राष्ट्रगीत बजाया। तब से हम सब उसी धुन पर राष्ट्रगीत गा रहे हैं।



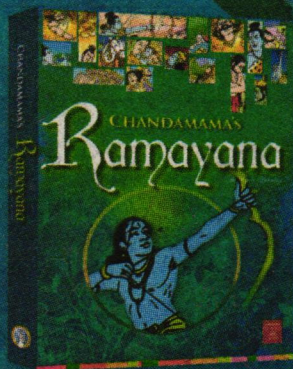
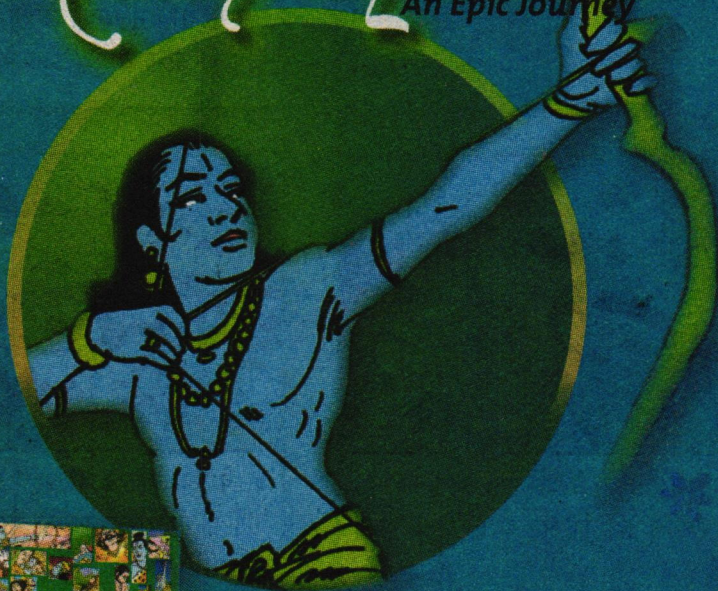
पूर्ववर्ती स्वतन्त्रता सेनानी

भारतीय विद्रोह जो वास्तव में स्वतन्त्रता की पहली लड़ाई है, २९ मार्च, १८५७ में शुरू हुई जब मंगल पांडे ने जो बैरकपुर में ब्रिटिश रेजीमेन्ट के एक सिपाही थे, ने अपने ब्रिटिश अफसर को गोली मार दी। उन्हें फांसी दे दी गई और

स्वतन्त्रता प्राप्ति के काम में मारे जाने के कारण वे शहीद हो गये। कई लोग नहीं जानते कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह वेल्लोर में (१८०६), विशाखापत्तनम (१७८०) और मदुरै (१७६३) में शुरू हुआ। विज्ञाग में चल रहे विद्रोह के परिणामस्वरूप भारतीय सिपाहियों द्वारा ब्रिटिश सिपाही और नागरिक मारे गए। मेजर शेख मोहम्मद उनके लीडर थे। उन्होंने मदुरास (अब चेन्नई) के लिये जाने वाले जहाज पर चढ़ने का हुक्म मिलने पर विद्रोह किया था। उन्होंने कई अफसरों को विद्रोहियों के रूप में शामिल कर लिया और विज्ञाग की ओर चल दिये। लेकिन वे पकड़ लिये गये। शेख मोहम्मद पर मुकदमा चला और उन्हें प्राण-दण्ड मिला।

CHANDAMAMA'S Ramayana

An Epic Journey



Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: **Ramayana - An Epic Journey.**

Price: Rs 449/-

To place an order, go to
www.chandamama.com

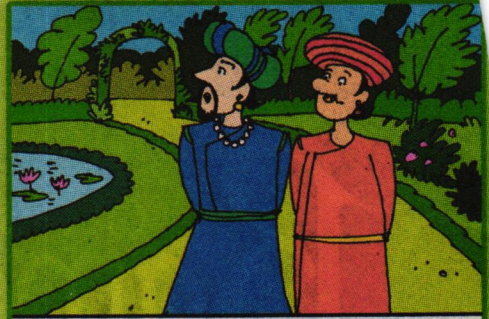
**Chandamama's Ramayana is available only in English
at all leading book shops.**

हाज़िरजवाब

बीरबल



कितने कौए



१. गर्मियों की एक दोपहर, अकबर और बीरबल घूम रहे थे। “मुझे नहीं लगता गर्मी शुरू हो गई है। अब भी ठंडक सी है,” अकबर ने कहा।



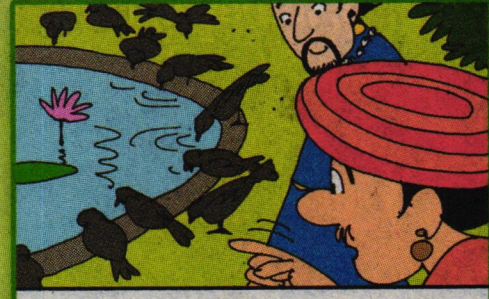
२. “शहंशाह, पक्षी अब भी जैसे हेमंत ऋतु का मजा ले रहे हैं,” बीरबल पेड़ों की ओर इशारा करके बोले।



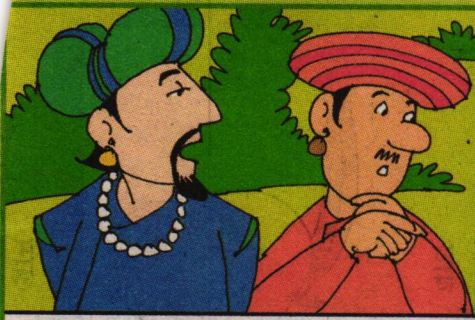
३. वे एक तालाब पर पहुँचे जहाँ बहुत सारे कौए पानी पी रहे थे। अकबर को बीरबल की हाज़िरजवाबी की परीक्षा लेने की सूझी।



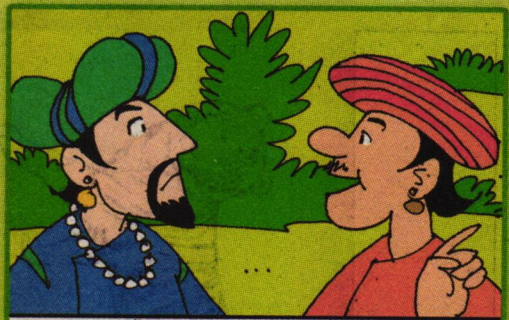
४. “बीरबल क्या तुम बता सकते हो कि इस जगह कितने कौए हैं?” शहंशाह धीमे से बोले। एक क्षण को बीरबल चौंके।



५. अगले ही क्षण वे बड़बड़ाने लगे, एक, दो... नब्बे हजार चार सौ... “कुल पिंजानवे हजार चार सौ तिरेसठ कौए हैं।”



६. अकबर इतनी आसानी से बीरबल को छोड़ने की इच्छा नहीं रखते थे। “हो सकता है कौओं की तादाद तुम्हारी गिनती से ज्यादा हो।”



७. “यदि ज्यादा हुए, तो वो पास के राज्यों से आए होंगे,” बीरबल चेहरे पर शरारत लिये बोले।



८. अकबर बोले, “और यदि कौए कम हुए तो?” शहंशाह को लगा कि अब उन्होंने इस सवाल से बीरबल पर काबू कर लिया है।



९. बीरबल तुरन्त बोले, “हमारे कुछ कौए दूसरे राज्यों का दौरा कर रहे हैं।” अकबर ने हार मानी, “कोई तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकता बीरबल!”

हैम रेडियो

जब हम प्रकृति के गुस्से को प्राकृतिक आपदाओं के रूप में झेलते हैं, तो हम एकदम असहाय होते हैं। जब कोई तूफान टकराता है और संचार के सभी साधन नाकाम हो जाते हैं, तो हम क्या करें? इसका एक सरल सा समाधान है हैम या शौकिया रेडियो। हैम रेडियो पूरी दुनिया में सिग्नल भेज सकता है और उसे अन्य हैम पकड़ सकते हैं।

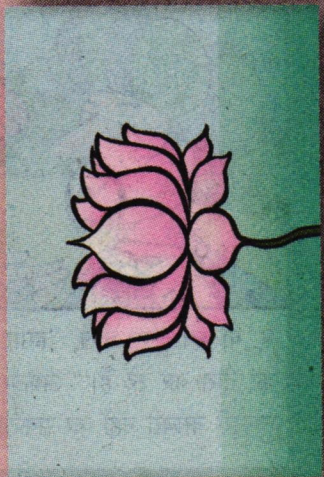
हैम रेडियो में रेडियो स्टेशन और रिसीवर सब एक ही में होता है। वास्तव में, यह घर से ही एक रेडियो स्टेशन चलाने के ही समान होता है। एक बार चालू हो जाने के बाद हैम रेडियो किसी चैनल पर ट्यून इन करके (जैसे आप किसी रेडियो स्टेशन पर ट्यून इन करते हैं) उस समय उस चैनल पर मौजूद सभी लोगों को रेडियो सन्देश भेज सकता है और प्राप्त कर सकता है। यह बहुत कुछ ऑनलाइन चैट करने की तरह होता है, बस यह रेडियो सेट पर होता है, कम्प्यूटर पर नहीं।

ट्रेजर बॉक्स

इस माह, आओ हम हमारे कुछ राष्ट्रीय चिह्नों पर एक स्ट्रैप बुक बनाएँ।



तिरंगा झंडा



कमल



बाघ



बरगद का पेड़



मोर



आम

Chandamama Art Book is a treasure house of art that all Indians should be proud of. The illustrations in the book make us feel as if those celestial beings have come down to earth to greet us. We are carried away by a feeling of rapture and devotion. The illustrations of artists Chitra, Vapa, Sankar and M.T.V. Acharya are captivating and full of life. By owning a copy of Chandamama Art Book, we will pay a tribute to our culture. The price of Art Book is very little compared to the joy it brings us.

N. Lalitha, Hyderabad

Order Now

2 Volumes



₹ 1500/-

Log on to: **www.chandamama.com** or Contact: Chandamama India Ltd.

B3, Cross Road 'B', MIDC, Andheri(E), Mumbai-400093. Ph. No: 022 28312872/28311849



टैटू* मुफ्त* 4

Kaccha
 mango bite

के साथ

*कुल चू पावर 2 के कैपसूल में से 1 टैटू मुफ्त

*ऑफर एक्टिव रहने तक समय। स्टॉक हटा ऑफर के विना भी उपलब्ध।



सारे जमा करें:



© 2011 DreamWorks Animation LLC